सत्यमेव जयते

भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय
राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF CULTURE
NATIONAL MONUMENTS AUTHORITY

कैसरबाग गेट्स, लखनऊ, उत्तर प्रदेश के लिए धरोहर उपविधि-

Heritage Bye-laws for Kaisarbagh Gates, Lucknow, Uttar Pradesh

कैसरबाग गेट्स, लखनऊ, उत्तर प्रदेश के लिए धरोहर उपविधि-

Heritage Bye-laws for Kaisarbagh Gates, Lucknow, Uttar Pradesh

विषय-सूची		
अध्याय I **प्रारंभिक**		
1.1	संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ	1
1.2	परिभाषाएं	1-4
अध्याय II **प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (एएमएएसआर) अधिनियम,1958 की पृष्ठभूमि**		
2.1	अधिनियम की पृष्ठभूमि	5
2.2	धरोहर उप-विधियों से संबंधित अधिनियम के उपबंध	5
2.3	आवेदक के अधिकार और जिम्मेदारियां	5-6
अध्याय III **संरक्षित संस्मारक का स्थान और अवस्थिति - कैसरबाग गेट्स, लखनऊ, उत्तर प्रदेश का स्थान एवं अवस्थिति**		
3.1	संस्मारक का स्थान एवं अवस्थिति	7-8
3.2	संस्मारक की संरक्षित चारदीवारी	8
	3.2.1 भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई)अभिलेखों के अनुसार अधिसूचना मानचित्र/आयोजना:	9
3.3	संस्मारक का इतिहास	9
3.4	संस्मारक का विवरण (वास्तुशिल्पीय विशेषताएं, तत्व, सामग्री आदि)	10
3.5	वर्तमान स्थिति	10
	3.5.1 संस्मारक की स्थिति- स्थिति का आकलन	10
	3.5.2 प्रतिदिन आने वाले दर्शकों की संख्या और कभी-कभार एकत्र होने वालों की संख्या	10
अध्याय IV **स्थानीय क्षेत्र विकास योजनाओं में विद्यमान क्षेत्रीकरण, यदि कोई हो**		
4.1	विद्यमान क्षेत्रीकरण	11
4.2	स्थानीय निकायों के मौजूदा दिशानिर्देश	11-12
अध्याय V **प्रथम अनुसूची एवं कुल स्टेशन सर्वेक्षण के अनुसार सूचना**		
5.1	संस्मारक की रूपरेखा/सर्वेक्षण योजना	13
5.2	सर्वेक्षित आंकड़ो का विश्लेषण	13
	5.2.1 प्रतिषिद्ध क्षेत्र और विनियमित क्षेत्र का विवरण	13
	5.2.2 निर्मित क्षेत्र का विवरण	13-14

	5.2.3 हरे/खुले स्थानों का विवरण	14-15
	5.2.4 परिसंचरण के अंतर्गत आने वाला क्षेत्र - सड़कें, फुटपाथ, आदि	15
	5.2.5 भवनों की मौजूदा ऊंचाई	15
	5.2.6 राज्य संरक्षित संस्मारक और सूचीबद्ध धरोहर भवन	15-16
	5.2.7 सार्वजनिक सुविधाएं	16
	5.2.8 संस्मारक तक पहुंच	16
	5.2.9 अवसरंचनात्मक सेवाएं	16
	5.2.10 स्थानीय निकायों के दिशा-निर्देशों के अनुसार क्षेत्र का प्रस्तावित क्षेत्रीकरण	16
	अध्याय VI **संस्मारक का स्थापत्य, ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व**	
6.1	स्थापत्य, ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व	17
6.2	संस्मारक की संवेदनशीलता	18
6.3	संरक्षित संस्मारक या क्षेत्र से दृश्यता और विनियमित क्षेत्र से दृश्यता	18
6.4	भूमि-उपयोग की पहचान की जानी है	18-19
6.5	संरक्षित संस्मारक के अलावा पुरातात्विक धरोहर अवशेष	19
6.6	सांस्कृतिक परिदृश्य	19
6.7	महत्वपूर्ण प्राकृतिक परिदृश्य	19-20
6.8	खुली जगह और निर्माण का उपयोग	20
6.9	पारंपरिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गतिविधियां	20
6.10	संस्मारक और विनियमित क्षेत्रों से दृश्यमान क्षितिज	20
6.11	पारंपरिक वास्तुकला	20-21
6.12	स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा उपलब्ध विकासात्मक योजना	21
6.13	अनुमत भवन संबंधी पैरामीटर	21
	6.13.1 मरम्मत एवं नवीनीकरण(प्रतिषिद्ध एवं विनियमित क्षेत्र में)	21
	6.13.2 पुनर्निर्माण	22
	6.13.3 नया निर्माण	22-25
6.14	आगंतुक सुविधाएं और साधन	25
	अध्याय VII **स्थल विशिष्ट सिफ़ारिशें**	
7.1	स्थल विशिष्ट सिफ़ारिशें	26
7.2	अन्य सिफ़ारिशें	26-27

CONTENTS

CHAPTER I Preliminary		
1.1	Short title, Extent and Commencements	28
1.2	Definitions	28-30
CHAPTER II Background of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains (AMASR) Act, 1958		
2.1	Background of The Act	31
2.2	Provisions of the Act related to Heritage Bye-laws	31
2.3	Rights and Responsibilities of the Applicant	31-32
CHAPTER III Location and Setting of the Protected Monument –Kaisarbagh Gates, Lucknow, Uttar Pradesh		
3.1	Location and Setting of the Monument	33-34
3.2	Protected boundary of the Monument	34
	3.2.1 Notification Map/ Plan as per ASI records	34
3.3	History of the Monument	35
3.4	Description of the Monument (architectural features, elements, materials etc.)	35-36
3.5	Current Status	36
	3.5.1 Condition of the Monument - condition assessment	36
	3.5.2 Daily footfalls and occasional gathering numbers	36
CHAPTER IV Existing Zoning, if any, in the Local Area Development Plans		
4.1	Existing Zoning	37
4.2	Existing Guidelines of the Local Bodies	37-38
CHAPTER V Information as per First Schedule and Total Station Survey		
5.1	Contour Plan	39
5.2	Analysis of surveyed data	39
	5.2.1 Prohibited Area and Regulated Area details	39
	5.2.2 Prohibited Area and Regulated Area details	39-40
	5.2.3 Description of green/open spaces	40-41
	5.2.4 Area covered under circulation- roads, footpaths etc	41
	5.2.5 Existing heights of buildings (Zone wise)	41
	5.2.6 State protected monuments and listed Heritage Buildings	41-42
	5.2.7 Public Amenities	42
	5.2.8 Access to the Monument	42
	5.2.9 Infrastructure services	42
	5.2.10 Proposed zoning of the area as per guidelines of the Local Bodies	42

CHAPTER VI **Architectural, Historical and Archaeological Value of the Monuments**		
6.1	Architectural, historical and archaeological value	43
6.2	Sensitivity of the Monument	43-44
6.3	Visibility from the Protected Monument or area and visibility from Regulated Area	44
6.4	Land-use to be identified	44-45
6.5	Archaeological heritage remains other than the protected monument	45
6.6	Cultural landscapes	45
6.7	Significant natural landscapes	45
6.8	Usage of open space and constructions	46
6.9	Traditional, historical and cultural activities	46
6.10	Skyline as visible from the monument and from Regulated Areas	46
6.11	Traditional architecture	46
6.12	Developmental plan as available by the local authorities	47
6.13	Permissible Building related parameters	47
	6.13.1 Repair and Renovation (in Prohibited and Regulated area)	47
	6.13.2 Reconstruction	47-48
	6.13.3 New Construction	48-50
6.14	Visitors facilities and amenities	50
CHAPTER VII **Site Specific Recommendations**		
7.1	Site Specific Recommendations	51
7.2	Other Recommendations	51-52

ANNEXURES		
अनुलग्नक-I Annexure-I	कैसरबाग गेट्स लखनऊ, उत्तर प्रदेश की सर्वेक्षण योजना Survey Plan of Kaisarbagh Gates –Lucknow, Uttar Pradesh	53
अनुलग्नक-II Annexure-II	कैसरबाग गेट्स लखनऊ, उत्तर प्रदेश की अधिसूचना Notification of the Monument - Kaisarbagh Gates, Lucknow	54-55
अनुलग्नक – III (क) Annexure – III (a)	लखनऊ महायोजना 2031 Lucknow Masterplan 2031	56
अनुलग्नक- III (ख) Annexure-III (b)	लखनऊ महायोजना 2031 – नियोजन खंड Lucknow Masterplan 2031 – Regulation Zones	57
अनुलग्नक- III (ग) Annexure-III (c)	लखनऊ महायोजना 2031 – धरोहर जोन Lucknow Master Plan 2031 – Heritage Zones	58
अनुलग्नक- III (घ) Annexure-III (d)	लखनऊ महायोजना 2031 – सुरक्षा ज़ोन्स Lucknow Master Plan 2031 – Security Zones	59
अनुलग्नक- III (ङ) Annexure-III (e)	लखनऊ महा योजना 2031 का भूमि -उपयोग मानचित्र Land-use Map of Lucknow Master Plan 2031	60
अनुलग्नक- IV Annexure-IV	विगत में और वर्तमान में संस्मारक की और से क्षैतिज के तुलनात्मक चित्र Comparative Images of the skyline of and from the Monument in the Past and Present	61-64
अनुलग्नक -V Annexure-V	संस्मारक का अभिलेखीय चित्र Archival Images of the Monument	65-67
अनुलग्नक -VI Annexure-VI	संस्मारक के आसपास विरासत ढांचे दर्शाता मानचित्र Map showing the heritage structures around the Monument	68-73
अनुलग्नक –VII Annexure-VII	संस्मारक और इसके निकटवर्ती क्षेत्र के चित्र Images of the Monument and its surroundings	74-76

भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय
राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (धरोहर उप-विधि विनिर्माण और सक्षम प्राधिकारी के अन्य कार्य) नियम 2011 के नियम (22) के साथ पठित प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958 की धारा 20ङ द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, संरक्षित संस्मारक **"कैसरबाग गेट्स, लखनऊ, उत्तर प्रदेश,"** के लिए निम्नलिखित धरोहर उप-विधि जिन्हें भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (बीएचयू), वाराणसी, उत्तर प्रदेश के परामर्श से सक्षम प्राधिकारी द्वारा तैयार किया गया है, को राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण (प्राधिकरण के अध्यक्ष और सदस्यों की सेवा शर्तें और कार्य प्रणाली), नियम, 2011 के नियम 18 के उप नियम (2) द्वारा यथा अपेक्षित जनता से आपत्ति या सुझाव आमंत्रित करने के लिए एतद्वारा 05.07.2023 को प्रकाशित किया गया था।

यथा विनिर्दिष्ट दिनांक से पहले प्राप्त आपत्ति/सुझाव पर सक्षम प्राधिकारी के परामर्श से राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण द्वारा विधिवत विचार किया गया है।

इसलिए, अब प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958 की धारा 20ङ की उप-धारा (5) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण, निम्नलिखित उप-विधि बनाता है, नामत:

कैसरबाग गेट्स, लखनऊ, उत्तर प्रदेश के लिए धरोहर उप-विधि

अध्याय I
प्रारंभिक

1.1 संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ:-

(i) इन उप-विधियों को संरक्षित संस्मारक **"कैसरबाग गेट्स, लखनऊ, उत्तर प्रदेश"** के लिए राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण धरोहर उप-विधि, 2024 कहा जाएगा।

(ii) ये संस्मारक के सम्पूर्ण प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्र तक लागू होंगी।

(iii) इन उप-विधियों के प्रावधान किसी भी अन्य उप-विधि में निहित असंगतता के बावजूद प्रभावी होंगे, चाहे इन उप-विधियों के प्रारंभ होने से पहले या बाद में बनाए गए हों, या किसी उप-विधि के आधार पर प्रभावी होने वाले किसी भी दस्तावेज़ में हों। इन उप-विधियों को किसी अन्य उप-विधि के अनुरूप बनाने के लिए इनमें संशोधन करना अनिवार्य नहीं होगा।

(iv) ये राजपत्र में इनके प्रकाशन की तिथि से प्रवृत्त होंगी।

1.2 परिभाषाएं:-

(1) इन उप-विधियों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो, अधिनियम अथवा इसके तहत बनाए गए नियमों के तहत दिए अनुसार परिभाषाएं सुविधा की दृष्टि से यहां पुन: लिखी गई हैं:-

(क) "प्राचीन संस्मारक" से कोई संरचना, रचना या संस्मारक, या कोई स्तूप या स्थान या दफ़नगाह या कोई गुफा, शैल-मूर्ति, शिला-लेख या एकाश्मक जो ऐतिहासिक, पुरातत्वीय या कलात्मक रुचि का है और जो कम से कम एक सौ वर्षों से विद्यमान है, अभिप्रेत है, और इसके अंतर्गत हैं -

(i) किसी प्राचीन संस्मारक के अवशेष,

(ii) किसी प्राचीन संस्मारक का स्थल,

(iii) किसी प्राचीन संस्मारक के स्थल से लगी हुई भूमि का ऐसा भाग जो ऐसे संस्मारक को बाड़ से घेरने या आच्छादित करने या अन्यथा परिरक्षित करने के लिए अपेक्षित हो, तथा

(iv) किसी प्राचीन संस्मारक तक पहुंचने और उसके सुविधाजनक निरीक्षण के साधन;

(ख) ''पुरातत्वीय स्थल और अवशेष" से कोई ऐसा क्षेत्र अभिप्रेत है, जिसमें ऐतिहासिक या पुरातत्वीय महत्व के ऐसे भग्नावशेष या अवशेष हैं या जिनके होने का युक्तियुक्तरूप से विश्वास किया जाता है, जो कम से कम एक सौ वर्षों से विद्यमान है, और इनके अंतर्गत हैं-

(i) उस क्षेत्र से लगी हुई भूमि का ऐसा भाग जो उसे बाड़ से घेरने या आच्छादित करने या अन्यथा परिरक्षित करने के लिए अपेक्षित हो, तथा

(ii) उस क्षेत्र तक पहुंचने और उसके सुविधापूर्ण निरीक्षण के साधन;

(ग) "अधिनियम" से आशय प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958 (1958 का 24) है;

(घ) "पुरातत्व अधिकारी" से भारत सरकार के पुरातत्व विभाग का कोई ऐसा अधिकारी अभिप्रेत है, जो सहायक अधीक्षण पुरातत्वविद से निम्नतर पद (श्रेणी) का नहीं है;

(ड.) "प्राधिकरण" से अधिनियम की धारा 20च के अधीन गठित राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण अभिप्रेत है;

(च) "सक्षम प्राधिकारी" से केंद्र सरकार या राज्य सरकार के पुरातत्व निदेशक या पुरातत्व आयुक्त की श्रेणी से नीचे न हो या समतुल्य श्रेणी का ऐसा अधिकारी अभिप्रेत है, जो इस अधिनियम के अधीन कृत्यों का पालन करने के लिए केंद्र सरकार द्वारा, राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, सक्षम प्राधिकारी के रूप में विनिर्दिष्ट किया गया हो:

बशर्ते कि केंद्र सरकार सरकारी राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, धारा 20ग, 20घ और 20ङ के प्रयोजन के लिए भिन्न भिन्न सक्षम प्राधिकारी विनिर्दिष्ट कर सकेगी;

(छ) "निर्माण" से किसी संरचना या भवन का कोई परिनिर्माण अभिप्रेत है, जिसके अंतर्गत उसमें ऊर्ध्वाकार या क्षैतिजीय कोई परिवर्धन या विस्तारण भी है, किन्तु इसके अंतर्गत किसी विद्यमान संरचना या भवन का कोई पुन:निर्माण, मरम्मत और नवीकरण या

नालियों और जलनिकास सुविधाओं तथा सार्वजनिक शौचालयों, मूत्रालयों और इसी प्रकार की सुविधाओं का निर्माण, अनुरक्षण और सफाई या जनता के लिए जलापूर्ति की व्यवस्था करने के लिए आशयित सुविधाओं का निर्माण और अनुरक्षण या जनता के लिए विद्युत की आपूर्ति और वितरण के लिए निर्माण या अनुरक्षण, विस्तारण, प्रबंध या जनता के लिये इसी प्रकार की सुविधाओं के लिए व्यवस्था शामिल नहीं हैं;

(ज) "तल क्षेत्र अनुपात (एफ.ए.आर.)" से आशय सभी तलों के कुल आवृत्त क्षेत्र का (पीठिका क्षेत्र) भूखंड (प्लाट) के क्षेत्रफल से भाग करके प्राप्त होने वाले भागफल से अभिप्रेत है;
तल क्षेत्र अनुपात = भूखंड क्षेत्र द्वारा विभाजित सभी तलों का कुल आवृत्त क्षेत्र;

(झ) "सरकार" से आशय भारत सरकार से है;

(ञ) अपने व्याकरणिक रूपों और सजातीय पदों सहित "अनुरक्षण" के अंतर्गत हैं किसी संरक्षित संस्मारक को बाड़ से घेरना, उसे आच्छादित करना, उसकी मरम्मत करना, उसका पुनरूद्धार करना और उसकी सफाई करना, और कोई ऐसा कार्य करना शामिल है जो किसी संरक्षित संस्मारक के परिरक्षण या उस तक सुविधाजनक पहुंच को सुनिश्चित करने के प्रयोजन के लिए आवश्यक है;

(ट) "स्वामी" के अंतर्गत हैं-

(i) संयुक्त स्वामी जिसमें अपनी ओर से तथा अन्य संयुक्त स्वामियों की ओर से प्रबंध करने की शक्तियॉ निहित हैं और किसी ऐसे स्वामी के हक-उत्तराधिकारी, तथा

(ii) प्रबंध करने की शक्तियों का प्रयोग करने वाला कोई प्रबंधक या न्यासी और ऐसे किसी प्रबंधक या न्यासी का पद में उत्तराधिकारी;

(ठ) "विहित" से इस अधिनियम के अधीन बनाए गए नियमों द्वारा विहित अभिप्रेत है:

(ड) "प्रतिषिद्ध क्षेत्र" से धारा 20(क) के अधीन प्रतिषिद्ध क्षेत्र के रूप में विनिर्दिष्ट क्षेत्र या घोषित किया गया कोई क्षेत्र अभिप्रेत है;

(ढ) "संरक्षित क्षेत्र" से कोई ऐसा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अभिप्रेत है, जिसे इस अधिनियम के द्वारा या उसके अधीन राष्ट्रीय महत्व का होना घोषित किया गया है;

(ण) "संरक्षित संस्मारक" से कोई ऐसा प्राचीन संस्मारक अभिप्रेत है, जिसे इस अधिनियम के द्वारा या उसके अधीन राष्ट्रीय महत्व का होना घोषित किया गया है;

(त) "विनियमित क्षेत्र" से इस अधिनियम की धारा 20ख के अधीन विनिर्दिष्ट या घोषित (किया गया विनियमित क्षेत्र) अभिप्रेत है;

(थ) "पुन:निर्माण" से किसी संरचना या भवन का उसकी पूर्व विद्यमान संरचना में ऐसा कोई परिनिर्माण अभिप्रेत है, जिसकी क्षैतिजीय और ऊर्ध्वाकार सीमाएं समान हैं;

(द) मरम्मत और पुनरुद्धार" से किसी पूर्व विद्यमान संरचना या भवन के परिवर्तन अभिप्रेत हैं, किन्तु इसके अंतर्गत निर्माण या पुन:निर्माण नहीं होंगे।

(2) इसमें प्रयुक्त और परिभाषित नहीं किए गए शब्दों और अभिव्यक्तियों का आशय वही अर्थ होगा जैसा अधिनियम अथवा इसके तहत बनाए गए नियमों में समनुदेशित किया गया है।

अध्याय II

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (एएमएएसआर) अधिनियम,1958 की पृष्ठभूमि

2.1 अधिनियम की पृष्ठभूमि:

धरोहर उप-विधियों का उद्देश्य केंद्र सरकार द्वारा संरक्षित संस्मारकों की सभी दिशाओं में 300 मीटर के अंदर भौतिक, सामाजिक और आर्थिक दखल के बारे में मार्गदर्शन देना है। 300 मीटर के क्षेत्र को दो भागों में बॉटा गया है (i) **प्रतिषिद्ध क्षेत्र,** यह क्षेत्र संरक्षित क्षेत्र अथवा संरक्षित संस्मारक की सीमा से शुरू होकर सभी दिशाओं में एक सौ मीटर की दूरी तक फैला है और (ii) **विनियमित क्षेत्र,** यह क्षेत्र प्रतिषिद्ध क्षेत्र की सीमा से शुरू होकर सभी दिशाओं में दो सौ मीटर की दूरी तक फैला है।

अधिनियम के उपबंधों के अनुसार, कोई भी व्यक्ति संरक्षित क्षेत्र और प्रतिषिद्ध क्षेत्र में किसी प्रकार का निर्माण अथवा खनन का कार्य नहीं कर सकता जबकि ऐसा कोई भवन अथवा संरचना जो प्रतिषिद्ध क्षेत्र में 16 जून, 1992 से पूर्व मौजूद था अथवा जिसका निर्माण बाद में महानिदेशक (डीजी), भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की अनुमति से हुआ था, और विनियमित क्षेत्र में किसी भवन अथवा संरचना का निर्माण, पुन:निर्माण, मरम्मत अथवा पुनरुद्धार की अनुमति सक्षम प्राधिकारी से लेना अनिवार्य है।

2.2 धरोहर उप-विधियों से संबंधित अधिनियम के उपबंध:

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम,1958 की धारा 20ङ और प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष नियम (धरोहर उप-विधियों का विनिर्माण और सक्षम प्राधिकारी के अन्य कार्य) नियम 2011 के नियम 22 में संरक्षित संस्मारकों के लिए उप-विधि बनाना विनिर्दिष्ट है। नियम में धरोहर उप-विधि बनाने के लिए मापदंडों का प्रावधान है। राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण (अध्यक्ष और सदस्यों की सेवा शर्तें तथा कार्य संचालन) नियम, 2011 के नियम 18 में प्राधिकरण द्वारा धरोहर उप विधि के अनुमोदन की प्रक्रिया विनिर्दिष्ट है।

2.3 आवेदक के अधिकार और जिम्मेदारियां:

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958 की धारा 20ग में प्रतिषिद्ध क्षेत्र में मरम्मत और नवीकरण के लिए अथवा विनियमित क्षेत्र में निर्माण अथवा पुन: निर्माण अथवा मरम्मत अथवा नवीकरण के लिए नीचे दिये गये अनुसार आवेदन का ब्योरा दिया गया है:

क) कोई भी व्यक्ति, जो किसी भवन या संरचना का स्वामी है, जो 16 जून, 1992 से पहले प्रतिषिद्ध क्षेत्र में मौजूद थी, या जिसे बाद में महानिदेशक, एएसआई की मंजूरी के साथ बनाया गया था और जो ऐसे किसी भी भवन या संरचना की मरम्मत या नवीकरण का कार्य करना चाहता है तो वह ऐसी मरम्मत और नवीकरण, जैसा भी मामला हो, करने के लिए सक्षम प्राधिकारी को आवेदन कर सकता है।

ख) कोई व्यक्ति जो किसी विनियमित क्षेत्र में किसी भवन अथवा संरचना अथवा भूमि का स्वामी है और ऐसी भूमि पर कोई निर्माण अथवा पुनर्निर्माण अथवा मरम्मत अथवा नवीकरण, जैसा भी मामला हो, करना चाहता है तो वह निर्माण अथवा पुनर्निर्माण अथवा मरम्मत अथवा नवीकरण जैसा भी मामला हो, के लिए सक्षम प्राधिकारी को आवेदन कर सकता है।

ग) सभी संबंधित सूचना प्रस्तुत करने तथा राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण (प्राधिकरण के अध्यक्ष तथा सदस्यों की सेवा की शर्तें और कार्यप्रणाली) नियम, 2011 के अनुपालन की जिम्मेदारी आवेदक की होगी।

अध्याय III

संरक्षित संस्मारक का स्थान और अवस्थिति - कैसरबाग गेट्स, लखनऊ, उत्तर प्रदेश का स्थान एवं अवस्थिति

3.1 संस्मारक का स्थान एवं अवस्थिति:

संरक्षित संस्मारक, कैसरबाग गेट्स में दो द्वार शामिल हैं, पूर्वी गेट, जिसे लक्खी गेट भी कहा जाता है और पश्चिमी गेट, जिसे चौलखी गेट भी कहा जाता है, इसे एक एकल राजपत्र अधिसूचना में बताया गया है। ये वर्तमान लखनऊ के कैसरबाग क्षेत्र में स्थित हैं। उनके स्थानों के भौगोलिक निर्देशांक इस प्रकार हैं:

(i) पूर्वी गेट या लक्खी गेट - 26°51'6.23"एन; 80°55'58.14"ई;

(ii) पश्चिमी गेट या चौलखी गेट - 26°51'10.74"एन; 80°55'51.81"ई।

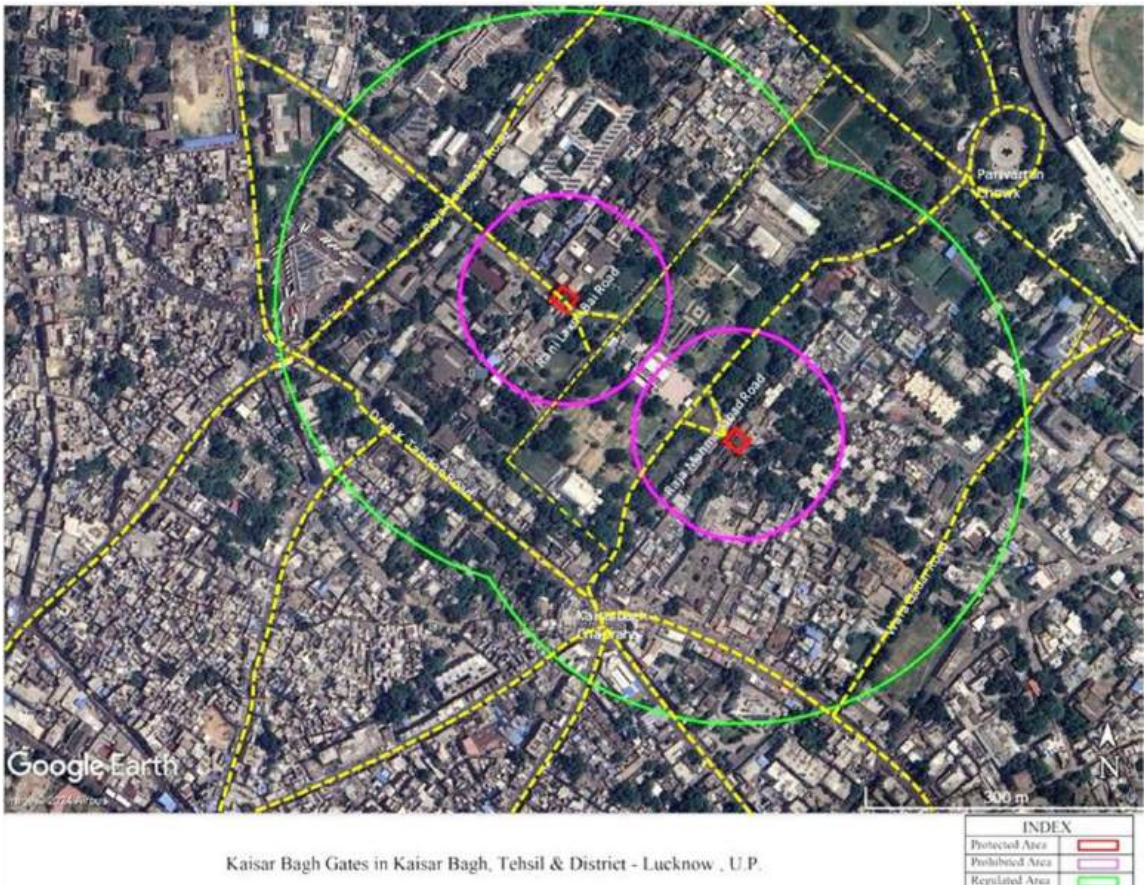

चित्र 1: कैसरबाग गेट्स लखनऊ का स्थान और अवस्थिति दर्शाता सेटेलाइट चित्र

संस्मारकों का रणनीतिक स्थान ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि ये पूरे ऐतिहासिक कैसरबाग महल परिसर का एक अभिन्न अंग हैं जिसे 19 वीं शताब्दी की शुरुआत में अवध के आखिरी नवाब, नवाब वाजिद अली शाह द्वारा बनाया गया था। आज के संदर्भ में ये संरक्षित संस्मारक ऐतिहासिक कैसरबाग महल परिसर के निर्मित अवशेषों से घिरे हुए हैं, जो खंडित अवस्था में मौजूद हैं। अवशेषों

में सआदत अली खान और मशीर जैदी की कब्रें, सफेद बारादरी, महमूदाबाद हाउस, सलेमपुर हाउस, मानेकपुर हाउस, अमीर-उद-दौला पुस्तकालय, भातखंडे संगीत संस्थान और कई अन्य शामिल हैं।

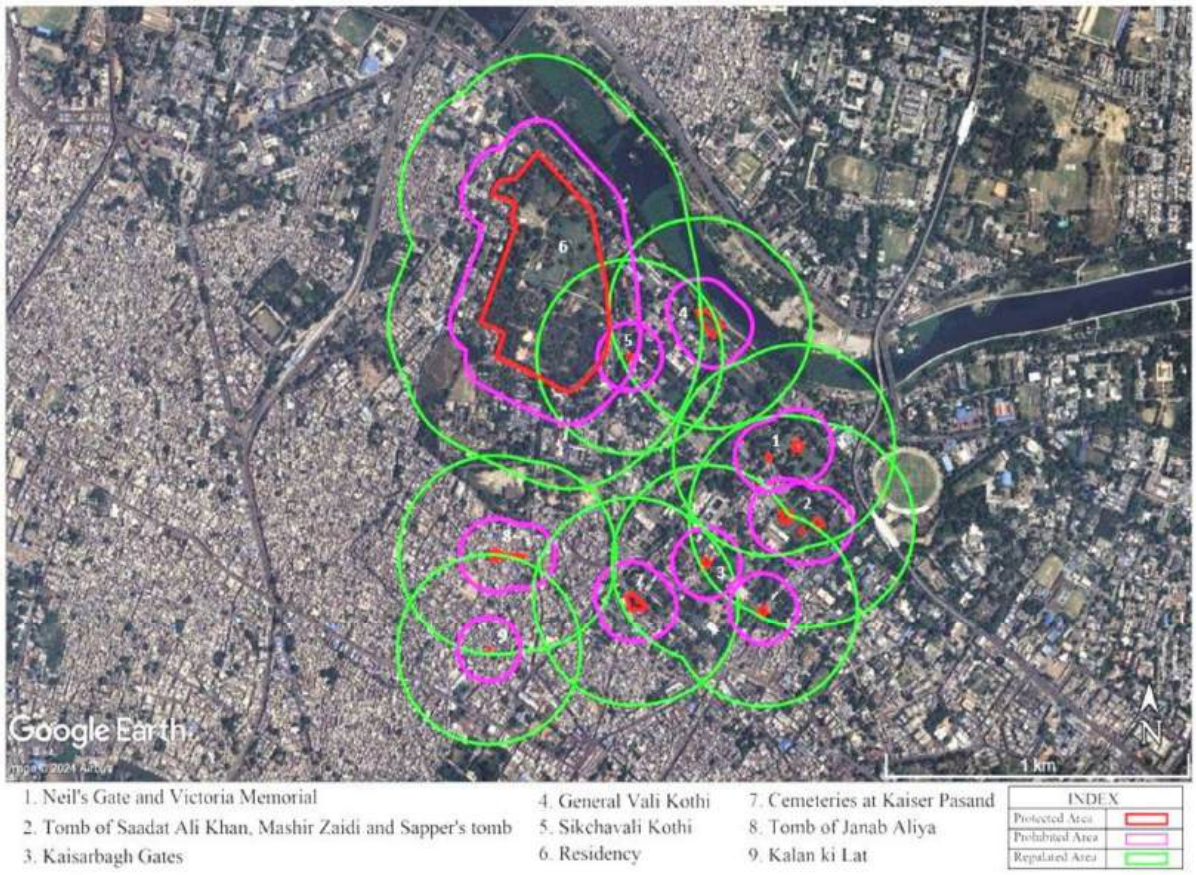

चित्र 2: निकटवर्ती क्षेत्र में संरक्षित संस्मारकों द्वारा निर्मित समूह को दर्शाता सैटेलाइट चित्र

कैसरबाग गेट्स का संस्मारक कैसरबाग विरासत जोन के कई अन्य संरक्षित स्मारकों के करीब स्थित है, इसलिए कैसरबाग गेट्स की प्रतिषिद्ध और विनियमित सीमाएं उत्तर-पूर्व में सआदत अली खान और मशीर जैदी के मकबरे तथा इसके दक्षिण-पश्चिम में कैसर पसंद के पास कब्रिस्तान के बफर जोन के साथ ओवरलैप होती हैं जो अन्य संरक्षित स्मारकों के बफर जोन के साथ ओवरलैप होता है।

इसके अतिरिक्त यह क्षेत्र आज शहर के केंद्र का एक प्रमुख हिस्सा है जिसमें आवासीय, वाणिज्यिक, मनोरंजक, सांस्कृतिक, प्रशासन और परिवहन-संबंधित संरचनाओं के रूप में ऐतिहासिक स्थान के भीतर समकालीन/आधुनिक निर्माण शामिल हैं। संस्मारक स्थल से निकटतम रेलवे स्टेशन लखनऊ जंक्शन है जो 3.9 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और निकटतम हवाई अड्डा चौधरी चरण सिंह अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है जो 12.5 किलोमीटर की दूरी पर है।

3.2 संस्मारक की संरक्षित सीमा:

संरक्षित संस्मारक - **कैसरबाग गेट्स, लखनऊ** की सीमाएँ **अनुलग्नक-I** में देखी जा सकती हैं।

3.2.1 भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई)अभिलेखों के अनुसार अधिसूचना मानचित्र/आयोजना:

कैसरबाग गेट्स, लखनऊ की राजपत्र अधिसूचना **अनुलग्नक-II** में देखी जा सकती है।

3.3 संस्मारक का इतिहास:

अवध के अंतिम शासक वाजिद अली शाह ने 1848-50 के दौरान कैसरबाग का निर्माण कराया था। निर्माण की लागत 80[1] लाख रुपये से अधिक बताई जा रही है। परिसर में स्वतंत्र संरचनाओं और मंडपों की श्रृंखला के साथ चार द्वारों वाला एक चारदीवारी वाला घेरा शामिल था।

कैसरबाग महल की वास्तुकला के पीछे केंद्रीय अवधारणा एक स्वर्ग उद्यान के विचार से आई है जो एक फ़ारसी अवधारणा है जिसे भारत में मुगलों द्वारा लोकप्रिय बनाया गया था। अवध के नवाबों ने पानी के फव्वारों, बगीचों और फूलों के पेड़ों के साथ उद्यान बनाने की इस प्रथा को जारी रखा। 1857 से पहले की पेंटिंग्स और तस्वीरों से पता चलता है कि मुख्य चतुर्भुज जो कैसरबाग महल का दिल था, में एक बडा और अच्छी तरह से बनाए रखा गया चार-बाग उद्यान[2] था। केंद्र में बारादरी से सुशोभित इस उद्यान का अधिकांश भाग बटलर पार्क और गुलाब वाटिका (राजा रामपाल सिंह पार्क) के नाम से आज भी बरकरार है। कैसरबाग के मूल रास्ते का ज्यादा हिस्सा नहीं बचा है। दो दरवाज़े जिन्हें लक्खी दरवाज़ा और चौलखी दरवाज़ा के नाम से जाना जाता है, शेष बची हुई संरचनाओं में से कुछ हैं।

सआदत अली खान और उनकी पत्नी मशीर जैदी का मकबरा उद्यान भी नवाबों के समय से चली आ रही शाही मकबरे के बगीचों की ऐतिहासिक अवधारणा का एक महत्वपूर्ण प्रमाण है।

फरवरी, 1856 में अवध पर कब्ज़ा होने और उसके तुरंत बाद नवाब वाजिद अली शाह को कलकत्ता में निर्वासित कर दिए जाने के बाद अवध का दरबार उनके बेटे राजकुमार बिरजिस क़द्र के हाथों में चला गया और उनकी संरक्षक बेगम हज़रत महल थीं। बेगम ने कैसरबाग की किलेबंदी की और मई, 1857 से मार्च 1858 तक अंग्रेजों के खिलाफ बहादुरी से लड़ाई लड़ी। अंग्रेजों द्वारा शहर पर पुनः कब्ज़ा करने के बाद उन्होंने रणनीतिक रूप से उन सभी संरचनाओं को ध्वस्त कर दिया जो स्वतंत्रता के पहले युद्ध के दौरान भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के गढ़, जिनमें महल, किले, बडी कोठियाँ और यहाँ तक कि मस्जिदें और मंदिर भी शामिल थे, या वे स्थान जो संभावित रूप से भविष्य के आंदोलनों में ऐसे गढ़ों के रूप में कार्य कर सकते थे।

इस प्रकार कैसरबाग महल को ध्वस्त करने की नियति पर निर्णय लिया गया। बंगाल इंजीनियर्स के कर्नल रॉबर्ट नेपियर को लखनऊ को नया आकार देने का काम सौंपा गया था। 26 मार्च 1858 को लखनऊ शहर के सैन्य कब्जे पर ज्ञापन के रूप में ज्ञात अपने तैयार दस्तावेज़ में उन्होंने शहर के बीच से चौड़ी सड़कों को खोलने और सैन्य उद्देश्यों के लिए आवश्यक नहीं होने वाले किसी भी बाड़े को ध्वस्त करने का प्रस्ताव रखा। प्रस्तावित सड़क के रास्ते में जो कुछ भी आया उसे ध्वस्त कर दिया गया। परिणामस्वरूप, कैसरबाग को धीरे-धीरे ध्वस्त कर दिया गया और इसके मुख्य प्रांगणों से होकर गुजरने वाली चौड़ी सड़कें बन गईं।

संस्मारक के अभिलेखीय चित्र **अनुलग्नक IV और V** में देखे जा सकते हैं।

---

[1] यूपी पर्यटन

[2] अनिल मल्होत्रा और नीता दास द्वारा कैसरबाग के चारदीवारी वाले महल। यूआरएल: web.archive.org

3.4 संस्मारक का विवरण (वास्तुशिल्पीय विशेषताएं, तत्व, सामग्री आदि):

प्रवेश द्वारों की योजना जटिल बहुभुज डिजाइन के समान है। प्रवेश द्वारों में एक गुंबददार मार्ग है जो दो बड़े अर्ध-वृत्ताकार प्लेटफार्मों से सुसज्जित है जो छोटे वर्गाकार कक्षों और आयाताकार चैम्बरों का किनारा है। पश्चिमी अग्रभाग पर आगे निकला हुआ हिस्सा है; एक आयताकार है और दूसरा अष्टकोण है जो एक बुर्ज बनाता है। पूर्वी अग्रभाग पर ऊपरी स्तर पर चढ़ने के लिए घुमावदार सीढ़ियों के साथ छोटे पार्श्व द्वार हैं। दोनों द्वारों की ऊंचाई पर एक बड़ा गोल सिर वाला मेहराब है, जिस पर मछली की आकृति वाले स्पैन्ड्रेल लगे हुए हैं। आंतरिक प्रांगण के सामने वाले प्रवेश द्वारों में कंगुरा, बुर्ज और धनुषाकार जाली के साथ केंद्रीय मेहराब हैं। दोनों प्रवेश द्वारों में अर्धवृत्ताकार कटघरा सीढ़ियाँ हैं जो विकर्णों पर एक दूसरे को काटती हैं। प्रवेश द्वारों पर सजावटी बैंड, प्लास्टर, अरबी, उभरे हुए गोलाकार पैनल, धारीदार पायलट और कंगूरा हैं। उन्हें विभिन्न रंगों में सजाया गया है।

संस्मारक के अभिलेखीय चित्र **अनुलग्नक V** में देखे जा सकते हैं।

3.5 वर्तमान स्थिति:

3.5.1 संस्मारक की स्थिति - स्थिति का आकलन:

संरक्षित संस्मारक का रखरखाव और संरक्षण भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का विशेष क्षेत्र है। संस्मारक की वर्तमान स्थिति को दर्शाने वाले चित्र **अनुलग्नक VII** में संलग्न हैं।

3.5.2 प्रतिदिन आने वाले दर्शकों की संख्या और कभी-कभार एकत्र होने वालों की संख्या:

चूंकि गेट किसी परिसर में बंद नहीं हैं, इसलिए पूरे दिन अक्सर वाहन यातायात दोनों गेट के नीचे से गुजरता है। संस्मारक को समर्पित भाव से देखने के लिए बहुत कम पर्यटक आते हैं।

अध्याय IV

स्थानीय क्षेत्र विकास योजनाओं में विद्यमान क्षेत्रीकरण, यदि कोई हो

4.1 विद्यमान क्षेत्रीकरण:

I. लखनऊ महायोजना 2031 के अनुसार, जैसा कि खंड 8.11.11 में उल्लिखित है, लखनऊ विकास क्षेत्र को 31 विनियमन क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। कैसरबाग गेट्स, लखनऊ की संरक्षित संस्मारक क्षेत्रीय योजना के जोन 08 के अंतर्गत आते हैं। ये विनियमन क्षेत्र आम तौर पर सजातीय क्षेत्र की मुख्य सड़कों की सीमा तक ही सीमित होते हैं। महायोजना 2031 के अनुसार अलग-अलग विनियमन क्षेत्रों की विस्तृत विकास योजनाओं के प्रस्ताव अभी तक तैयार नहीं किए गए हैं। **(अनुलग्नक III-ख देखें)**

II. लखनऊ महायोजना 2031 के अनुसार, जैसा कि खंड 8.11.9 में उल्लिखित है, लखनऊ महा योजना - 2031 में तीन विरासत क्षेत्र निर्दिष्ट हैं:

(i) हुसैनाबाद कॉम्प्लेक्स
(ii) कैसरबाग कॉम्प्लेक्स
(iii) ला-मार्टिनियर कॉम्प्लेक्स

संरक्षित संस्मारक - कैसरबाग गेट्स, लखनऊ कैसरबाग परिसर के अंतर्गत आते हैं। **(अनुलग्नक III-ग देखें)**

III. लखनऊ महायोजना-2031 के अनुसार, जैसा कि धारा 8.11.10 में उल्लिखित है, तीन निर्दिष्ट सुरक्षा क्षेत्र हैं:

(i) विधान सभा क्षेत्र
(ii) उच्च न्यायालय क्षेत्र
(iii) नया उच्च न्यायालय क्षेत्र

इन क्षेत्रों के भीतर अधिकतम अनुमेय ऊंचाई 7 मीटर तक सीमित है।

संरक्षित संस्मारक - कैसरबाग गेट्स उच्च न्यायालय क्षेत्र में आते हैं। **(अनुलग्नक III-घ देखें)**

4.2 स्थानीय निकायों के मौजूदा दिशानिर्देश:

लखनऊ महायोजना 2031 तथा लखनऊ विकास प्राधिकरण: भवन निर्माण और विकास उप विधि 2008 (यथा संशोधित 2011, 2016, 2018) में विनिर्दिष्ट सभी विकास नियन्त्रण मानदंड तथा भवन विनियम लागू है।

"लखनऊ विकास प्राधिकरण: भवन निर्माण और विकास उप विधि, 2008 (यथा संशोधित 2011, 2016, 2018), उपधारा - 3.1.9 (I) और (II)" के अनुसार यह निर्दिष्ट किया गया है कि प्राचीन संस्मारक और पुरातत्व स्थल एवं अवशेष अधिनियम, 1958 के तहत राष्ट्रीय महत्व के घोषित पुरातात्विक स्मारकों/स्थलों की संरक्षित सीमा से 100 मीटर के दायरे (प्रतिषिद्ध क्षेत्र) के भीतर

निर्माण और विकास की अनुमति नहीं है। प्रतिषिद्ध क्षेत्र से परे 200 मीटर (विनियमित क्षेत्र) की दूरी तक निर्माण/विकास के लिए सक्षम प्राधिकारी से अनुमति प्राप्त की जाएगी।

इसके अलावा, **"लखनऊ महायोजना-2031"; उपधारा-8.11.9 (1) और (2)** में कहा गया है कि भारत सरकार के प्रासंगिक प्रावधान एएसआई संरक्षित स्थलों/स्मारकों पर लागू होंगे। जबकि अन्य स्मारकों के लिए कुछ प्रावधानों का उल्लेख किया गया है जो इस प्रकार हैं:

वास्तुशिल्प नियंत्रण:

स्मारकों, ऐतिहासिक इमारतों और मुख्य सड़कों के किनारे निर्माण के लिए उनके वास्तुशिल्प/कलात्मक दृष्टिकोण के संदर्भ में अनुमोदन की आवश्यकता होगी।

योजना नियंत्रण:

विरासत क्षेत्रों के लिए: "लखनऊ महा योजना - 2031" में तीन विरासत क्षेत्र निर्दिष्ट हैं।

1. हुसैनाबाद कॉम्प्लेक्स
2. कैसरबाग कॉम्प्लेक्स
3. ला-मार्टिनियर कॉम्प्लेक्स

क) संस्मारक/विरासत भवन के परिसर से 50 मीटर की दूरी में किसी भी निर्माण की अनुमति नहीं दी जाएगी।

ख) 50 मीटर से 150 मीटर तक केवल एक मंजिला आवासीय भवनों (अधिकतम ऊंचाई 3.8 मीटर) के निर्माण की अनुमति होगी।

ग) और, 150 मीटर से 250 मीटर तक, केवल दो मंजिला इमारतों (अधिकतम ऊंचाई 7.6 मीटर) के निर्माण की अनुमति होगी।

घ) **भारत सरकार के प्रासंगिक प्रावधान प्राचीन संस्मारक और पुरातत्व स्थल एवं अवशेष अधिनियम, 1958 के तहत राष्ट्रीय महत्व के घोषित प्राचीन संस्मारक तथा पुरातात्विक स्थलों और अवशेष पर लागू**

अध्याय V

प्रथम अनुसूची, नियम 21(1) के अनुसार जानकारी/भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अभिलेखों में परिभाषित सीमाओं के आधार पर प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों का कुल स्टेशन सर्वेक्षण

5.1 कैसरबाग गेट्स, लखनऊ की रूपरेखा योजना/सर्वेक्षण योजना:

कैसरबाग गेट्स की सर्वेक्षण योजना **अनुलग्नक-I** में देखी जा सकती है।

5.2 सर्वेक्षित आंकड़ों का विश्लेषण:

5.2.1 प्रतिषिद्ध क्षेत्र और विनियमित क्षेत्र का विवरण:

कैसरबाग गेट (पूर्वी)

(i) संरक्षित क्षेत्र: 307.5610 वर्ग मीटर (0.076 एकड़)

(ii) प्रतिषिद्ध क्षेत्र: 38898.383 वर्ग मीटर (9.612 एकड़)

कैसरबाग गेट (पश्चिमी)

(i) संरक्षित क्षेत्र: 307.5610 वर्ग मीटर (0.076 एकड़)

(ii) प्रतिषिद्ध क्षेत्र: 38898.383 वर्ग मीटर (9.612 एकड़)

विनियमित क्षेत्र: 372209.619 वर्ग मीटर (91.975 एकड़)
कुल क्षेत्रफल: 450621.509 वर्ग मीटर (111.351 एकड़)

5.2.2 निर्मित क्षेत्र का विवरण:

कैसरबाग के पूर्वी गेट का प्रतिषिद्ध क्षेत्र

उत्तर-पूर्व और दक्षिण-पश्चिम में गेट से सटे महाराजा महमूदाबाद रोड के साथ क्रमशः बलरामपुर अंतर्राष्ट्रीय छात्रावास और लाजपत राय पुस्तकालय हैं। गेट के पूर्व में एक मंदिर, गुरुद्वारा, एक पुलिस चौकी और एक आवासीय कॉलोनी, कैसरबाग ऑफिसर्स कॉलोनी है। दक्षिण की ओर चाइना बाज़ार और इंदिरा गांधी नेत्र चिकित्सालय का कुछ भाग है। पश्चिम की ओर सफेद बारादरी का छोटा भाग प्रतिषिद्ध क्षेत्र में आता है।

कैसरबाग के पश्चिमी गेट का प्रतिषिद्ध क्षेत्र

पश्चिमी गेट से सटे उत्तर-पूर्व और दक्षिण-पश्चिम में रानी लक्ष्मी बाई रोड के साथ क्रमशः महमूदाबाद हाउस और सलेमपुर हाउस के हिस्से हैं। गेट के उत्तर में डीएम कार्यालय और नारी शिक्षा निकेतन का कुछ हिस्सा भी प्रतिषिद्ध क्षेत्र में आता है। पूर्व की ओर सफेद बारादरी का कुछ भाग प्रतिषिद्ध क्षेत्र में आता है।

विनियमित क्षेत्र

पूर्वी और पश्चिमी गेट के विनियमित क्षेत्र अतिव्यापी हैं (अनुलग्नक-I देखें)। दोनों प्रतिषिद्ध क्षेत्रों के उत्तर-पूर्व में बटलर पार्क में ऐतिहासिक मरमरी पुल, भातखंडे संगीत संस्थान और सआदत अली खान मकबरे के परिसर का कुछ हिस्सा है। उत्तर-पूर्व में कुछ आवासों,

वीवीआईपी गेस्ट हाउस और फैमिली कोर्ट के अलावा अवध जिमखाना क्लब, कला मंडपम ऑडिटोरियम, चाइना बाज़ार के कुछ हिस्से और बलरामपुर इंटरनेशनल हॉस्टल हैं। पूर्व की ओर आवासीय कॉलोनियां अर्थात् पंजाबी कॉलोनी और ऑफिसर कॉलोनी और कुछ कार्यालय हैं। दक्षिण-पूर्व में एक घना आवासीय क्षेत्र और स्कूल हैं जिनका नाम बड्स एंड ब्लॉसम स्कूल और बालिका विद्या निकेतन इंटर कॉलेज है। दक्षिण में कैसरबाग बाजार और कैसरबाग सर्कल का सघन व्यावसायिक क्षेत्र है। दक्षिण-पश्चिम में राजा रामपाल सिंह पार्क, अमीर-उद-दौला लाइब्रेरी, तिलोई हाउस और सलेमपुर हाउस के कुछ हिस्से हैं। आगे दक्षिण-पश्चिम दिशा में डॉ. आर.के. टंडन रोड के साथ पुलिस आयुक्तालय, कैसरबाग कोतवाली के कार्यालय के साथ एक वाणिज्यिक बेल्ट है।

पश्चिमी गेट के विनियमित क्षेत्र में पश्चिम की ओर एक और विरासत संरचना है जिसे कोठी रोशन-उद-दौला के नाम से जाना जाता है। इसी दिशा में आगे राजा नवाब अली मार्ग के किनारे एक तरफ रेड क्रॉस सोसाइटी का सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र और नारी शिक्षा निकेतन पीजी कॉलेज है और दूसरी तरफ कैसरबाग बस स्टेशन और जिला पंचायत और नगर निगम के कार्यालय हैं। विनियमित क्षेत्र में पश्चिमी गेट के उत्तर में राजा नवाब अली रोड के साथ-साथ डीएम कार्यालय और टेलीफोन एक्सचेंज कार्यालय के साथ राजस्व विभाग के कार्यालय हैं।

5.2.3 हरित/खुले स्थानों का विवरण:

शहर के इस हिस्से में काफी हरे-भरे और खुले स्थान हैं, कुछ निर्दिष्ट पार्क हैं और कार्यालयों तथा अन्य संस्थानों के बड़े परिसरों का कुछ हिस्सा है। क्षेत्र में कुछ निर्दिष्ट पार्क इस प्रकार हैं:

बटलर पार्क, जिसे वीरांगना उदा देवी पार्क के नाम से भी जाना जाता है, उत्तर-पूर्व दिशा में पूर्व और पश्चिम गेट के बीच स्थित है। यह पार्क पूरे कैसरबाग महल परिसर का एक अभिन्न अंग है। कैसरबाग महल की अखंडता मौजूदा भौतिक साक्ष्यों के रूप में बरकरार है जिनमें से वर्तमान बटलर पार्क एक अभिन्न भौतिक विशेषता है जो कैसरबाग महल की संपूर्णता को परिभाषित करने में मदद करती है। बटलर पार्क में ऐतिहासिक संग-ए-मरमर पुल भी है जो कैसरबाग महल परिसर का हिस्सा था। इस पार्क का रखरखाव लखनऊ विकास प्राधिकरण द्वारा किया जाता है और आसपास के स्मारकों के समग्र मूल्य में इसका सकारात्मक योगदान है।

गुलाब वाटिका, जिसे राजा रामपाल सिंह पार्क के नाम से भी जाना जाता है, दक्षिण-पश्चिम दिशा में पूर्व और पश्चिम द्वार के बीच में स्थित है। बटलर पार्क की तरह, यह हरा-भरा स्थान कैसरबाग महल परिसर का एक अभिन्न अंग हुआ करता था और वर्तमान संदर्भ में भी कैसरबाग के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण हरा-भरा स्थान बना हुआ है।

तिकोना पार्क कैसरबाग गेट के पूर्वी और पश्चिमी गेट दोनों के सामने दो तिकोने पार्क हैं। तिकोना पार्क भी पूर्ववर्ती कैसरबाग महल परिसर के अवशेष हैं क्योंकि उन्हें क्षेत्र के अभिलेखीय मानचित्रों और चित्रों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। पूर्वी और पश्चिमी गेट के सामने दोनों तिकोना पार्क इस क्षेत्र में भारी वाहनों की आवाजाही के बीच यातायात द्वीप बनाते हैं। तिकोना पार्क के निकट रानी लक्ष्मी बाई रोड और महाराजा महमूदाबाद

रोड निजी आवासों और सड़कों के सामने अन्य संरचनाओं के हिस्से के रूप में बगीचों के विशाल विस्तार से घिरा हुआ है।

सआदत अली खान, मशीर जैदी और सैपर के मकबरे के संरक्षित स्मारकों से घिरा परिसर भी कैसरबाग क्षेत्र की विशेषताओं में योगदान देने वाला एक महत्वपूर्ण उद्यान स्थान है।

अन्य हरेभरे और खुले स्थान राज्य और केंद्र सरकार के कार्यालय परिसरों, संस्थागत परिसरों, वाणिज्यिक परिसरों, पुलिस स्टेशन, गेस्ट हाउस के अंदर स्थित हैं।

5.2.4 परिसंचरण के अंतर्गत आने वाला क्षेत्र - सड़कें, फुटपाथ आदि:

दो मुख्य सड़कें, महाराजा महमूदाबाद रोड और रानी लक्ष्मी बाई रोड, कैसरबाग कॉम्प्लेक्स को कैसरबाग सर्कल (चौराहा) से जोड़ती हैं जो दक्षिण-पश्चिम में नज़ीराबाद रोड, लाटूश रोड, कैंटोनमेंट रोड और बी.एन रोड सहित 6 प्रमुख सड़कों और अन्य प्रमुख सड़कों से जुड़ती है। उत्तर-पूर्व में परिवर्तन चौक के साथ-साथ महात्मा गांधी रोड, राणा प्रताप मार्ग और यूनिवर्सिटी रोड जैसी शहर की सड़कें हैं। प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों में अन्य प्रमुख सड़कें उत्तर में राजा नवाब अली रोड, टेलीफोन एक्सचेंज रोड और चकबस्त रोड, पश्चिम में जगत नारायण रोड और पूर्व और दक्षिण-पूर्व में वाला कादर रोड हैं।

5.2.5 भवनों की मौजूदा ऊंचाई:

उत्तर-पश्चिम: प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्र में मुख्य रूप से सरकारी कार्यालय, संस्थान और जी से जी+1 मंजिल तक की आवासीय इमारतें हैं जिनकी अधिकतम ऊंचाई लगभग 11 मीटर है।

दक्षिण-पूर्व: मुख्य रूप से कार्यालय, संस्थान, वाणिज्यिक और आवासीय भवन परिसर, जी से जी+6 मंजिल तक इमारतें हैं, अधिकतम ऊंचाई लगभग 22 मीटर है।

दक्षिण-पश्चिम: विनियमित क्षेत्र में लगभग 11 मीटर की ऊंचाई वाले जी, जी+1 और जी+2 के वाणिज्यिक और आवासीय भवन हैं।

उत्तर-पूर्व: विनियमित क्षेत्र में लगभग 11 मीटर की अधिकतम ऊंचाई वाले जी, जी+1 और जी+2 के अन्य व्यावसायिक भवन, सार्वजनिक भवन और आवास हैं।

5.2.6 प्रतिषिद्ध/विनियमित क्षेत्र के भीतर स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा राज्य संरक्षित संस्मारक और सूचीबद्ध धरोहर भवन, यदि उपलब्ध हों:

कैसरबाग क्षेत्र शहर का ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण हिस्सा है और संरक्षित और असंरक्षित दोनों तरह की कई विरासत संरचनाओं से घिरा हुआ है। **(अनुलग्नक VII देखें)**

कोठी रोशन-उद-दौला एक महत्वपूर्ण विरासत संरचना अब राज्य पुरातत्व के संरक्षण में है। इस कोठी का निर्माण राजा नासिर-उद-दीन हैदर के मंत्री रोशन-उद-दौला ने वर्ष

1832 ई. में करवाया था। बाद में कोठी को जिला निर्वाचन कार्यालय में तब्दील कर दिया गया।

अन्य संरक्षित संस्मारक अर्थात् **सआदत अली खान का मकबरा, मशीर जैदी का मकबरा और सैपर का मकबरा** उत्तर-पूर्व दिशा में विनियमित क्षेत्र में आते हैं।

आसपास के क्षेत्र में अन्य विरासत संरचनाएं हैं: सफ़ेद बारादरी, अमीर-उद-दौला सार्वजनिक पुस्तकालय, सलेमपुर हाउस, महमूदाबाद हाउस, चौलखी कोठी, कोटवारा हाउस, आदि।

5.2.7 सार्वजनिक सुविधाएं:

संस्मारक के आसपास शौचालय या कूड़ेदान जैसी कोई सार्वजनिक सुविधाएं नहीं हैं, जो अक्सर संस्मारक में अस्वास्थ्यकर और गंदगी का कारण बनती हैं। संस्मारक के निकट ही एक पर्यटक स्थल बनाया गया है जिसमें आगंतुकों के लिए कुछ बेंच भी हैं।

5.2.8 संस्मारक तक पहुंच:

पूर्वी और पश्चिमी गेट दोनों ही शहर के प्रमुख स्थल हैं और निजी तथा सार्वजनिक परिवहन द्वारा समान रूप से आसानी से पहुँचा जा सकता है। पूर्वी गेट या लक्ष्मी गेट और पश्चिमी गेट तक लगभग 9 मीटर चौड़ी राजा महमूदाबाद रोड और रानी लक्ष्मी बाई रोड द्वारा पहुंचा जा सकता है।

5.2.9 अवसंरचना सेवाएँ (जल आपूर्ति, वर्षा जल निकासी, सीवेज, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, पार्किंग आदि):

इस क्षेत्र में पार्किंग के लिए कोई निर्दिष्ट स्थान नहीं है और चूंकि यह क्षेत्र घनी आबादी वाला है, इसलिए सड़कों के किनारे और गेटों के सामने तिकोना पार्क में अव्यवस्थित पार्किंग देखी जाती है। संस्मारक के नजदीक, परिवर्तन चौक के पास ओवरहेड मेट्रो लाइन है।

संस्मारक के संरक्षित, प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों में जल आपूर्ति, वर्षा जल निकासी, सीवेज आदि की सुविधाएं उपलब्ध हैं, लेकिन इन्हें सुधारने की आवश्यकता है।

5.2.10 स्थानीय निकायों के दिशानिर्देशों के अनुसार क्षेत्र का प्रस्तावित क्षेत्रीकरण:

I. लखनऊ महा योजना (मास्टर प्लान) - 2031 के अनुसार, कैसरबाग गेट्स स्थल कैसरबाग विरासत जोन में आती हैं। **(अनुलग्नक III-ग)**

II. कैसरबाग गेट्स स्थल जोनल प्लान के **जोन** 8 के अंतर्गत आता है। **(अनुलग्नक III-ख)** प्राधिकरण द्वारा विस्तृत क्षेत्रीय योजनाएं अभी तक तैयार नहीं की गई हैं।

कैसरबाग गेट्स के प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्र अन्य संरक्षित स्मारकों जैसे सआदत अली खान का मकबरा, मशीर जैदी का मकबरा और सैपर का मकबरा और कैसर पसंद कब्रिस्तान के प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के साथ ओवरलैप होते हैं।

अध्याय VI

संस्मारक का स्थापत्य, ऐतिहासिक और पुरातात्विक मूल्य

6.1 स्थापत्य, ऐतिहासिक और पुरातात्विक मूल्य:

कैसरबाग गेट्स स्मारकों के समूह का हिस्सा हैं जो एकसाथ मिलकर कैसरबाग के बड़े ऐतिहासिक परिसर का निर्माण करते हैं। यह इतिहास, वास्तुकला, परिदृश्य, संस्कृति और सामाजिक पहलुओं के संदर्भ में बहुत महत्व रखता है, जो कैसरबाग परिसर की समग्र अखंडता में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

ये गेट्स पूर्ववर्ती कैसरबाग महल परिसर में प्रवेश द्वार के रूप में काम करते थे, जिसे 1848-1850 में अवध के आखिरी नवाब वाजिद अली शाह ने बनवाया था। स्मारकों का वास्तुशिल्प मूल्य इसके सावधानीपूर्वक डिजाइन, उपयोग की गई सामग्रियों, विशिष्ट सजावटी तत्वों के समावेश और सांस्कृतिक मानदंडों के पालन में निहित है, जो सभी एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक मील का पत्थर के रूप में इसके महत्व में योगदान देते हैं। कैसरबाग उच्च वास्तुशिल्प मूल्य रखता है क्योंकि यह नवाबी वास्तुकला, विशेष रूप से उद्यान महल वास्तुकला के अंतिम चरण का प्रतिनिधित्व करता है। शहर और इसके संरक्षकों के गौरवशाली इतिहास की निरंतर याद दिलाने के लिए लखौरी ईंटों से निर्मित और दो मछलियों द्वारा दर्शाए गए अवध के प्रतीक चिन्ह वाले प्रवेश द्वार को सजाया गया है। ऐसा माना जाता है कि इन दोनों शाही दरवाजों को एक लाख रुपये की लागत से बनाया गया था, इसलिए इन्हें लक्खी दरवाजा नाम दिया गया।

कैसरबाग परिसर के खंडित अवशेष उच्च ऐतिहासिक मूल्य रखते हैं, न केवल अवध के आखिरी और सबसे असाधारण महल के प्रमाण के रूप में बल्कि अवध के ब्रिटिश कब्जे की याद दिलाने के रूप में भी जहां उन्होंने भारतीय सैनिकों के सभी प्रमुख गढ़ों को ध्वस्त कर दिया था। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, वाजिद अली शाह की बेगम, बेगम हजरत महल के कुशल नेतृत्व में कैसरबाग महल सबसे प्रमुख महलों में से एक था। ये अवशेष एक युग के अंत और लखनऊ में ब्रिटिश शासन की शुरुआत की लगातार याद दिलाते हैं।

धीरे-धीरे समय के साथ, अंग्रेजों ने कैसरबाग के मूल स्थानिक लेआउट और परिदृश्य में कुछ बड़े बदलाव किए। कुछ प्रमुख सड़कों को परिसर के प्रांगणों से होकर निकाला गया और पुरानी नवाबी कोठियों के उपयोग को सरकारी संस्थानों में बदल दिया गया। महल परिसर के अवशेषों का परिदृश्य मूल्य क्षेत्र के समृद्ध इतिहास का प्रतीक है, जो मुगल वास्तुकला के चमत्कारों को विशिष्ट नवाबी संस्कृति के साथ मिश्रित करता है जो एक बार लखनऊ शहर में विकसित हुआ था। यह नवाबों के योगदान और कला, साहित्य तथा वास्तुकला में उनके संरक्षण की याद दिलाता है, जो देश भर के आगंतुकों को प्रेरित और मंत्रमुग्ध करता रहता है। वर्तमान संदर्भ में ये द्वार एक प्रतिष्ठित विरासत स्थल और प्रमुख शहर के एक ऐतिहासिक स्थल के रूप में खड़े हैं, जो अभी भी तत्कालीन कैसरबाग परिसर के ऐतिहासिक परिदृश्य में प्रवेश द्वार के रूप में कार्य कर रहे हैं।

6.2 संस्मारक की संवेदनशीलता (जैसे विकासात्मक दबाव, शहरीकरण, जनसंख्या दबाव, आदि):

कैसरबाग का क्षेत्र न केवल ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि लखनऊ के मुख्य शहर केंद्रों में से एक है, जो इसे लगातार बढ़ते विकासात्मक और शहरीकरण के दबाव के प्रति अत्यधिक संवेदनशील बनाता है, खासकर लखनऊ जैसे शहर में जो राज्य की राजधानी भी है।

चूँकि गेटों का उपयोग अभी भी पैदल चलने वालों के साथ-साथ वाहनों की आवाजाही के लिए प्रवेश द्वार के रूप में किया जाता है, स्मारकों से सटी सड़कों पर भारी वाहनों के प्रभाव से स्मारकों की संरचनात्मक अखंडता, विशेषकर कैसरबाग गेट्स को खतरा हो सकता है। निजी आवासों द्वारा गेट के कुछ हिस्सों में अतिक्रमण संस्मारक के लिए एक और खतरा है।

गेट्स के आसपास के प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्र में कैसरबाग महल परिसर के अवशेष शामिल हैं जो क्षेत्र के समग्र मूल्यों और महत्व में योगदान करते हैं। इनमें से कई संरचनाएं भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण अथवा राज्य पुरातत्व विभाग के संरक्षण के अन्तर्गत नहीं आते। हालाँकि, शहर/जिला स्तर पर असंरक्षित विरासत के लिए नियम नहीं होने के कारण कई महत्वपूर्ण लेकिन असंरक्षित विरासत संरचनाओं में धीरे-धीरे विशेषताओं का नुकसान हुआ है, विकास के बढ़ते दबाव के साथ यह प्रवृत्ति बढ़ने की संभावना है।

कैसरबाग चौराहा शहर के सबसे घने वाणिज्यिक केंद्रों में से एक होने के साथ-साथ एक मजबूत विरासत विशेषता भी रखता है जो खराब स्थिति में है लेकिन काफी हद तक संरक्षित है, हालांकि आनंद सिनेमा जैसे कुछ मामलों में अग्रभाग को समकालीन सामग्रियों में बदल दिया गया है जो न केवल आंखों में चुभता है और उस क्षेत्र की समग्र सेटिंग के साथ दृश्य सामंजस्य भी टूट जाता है। **(अनुलग्नक VII में चित्र 7.13 देखें)**

अन्य ऊंचे निर्माण, ज्यादातर होटल और अपार्टमेंट जैसे होटल मेपल लीफ, जेमिनी कॉन्टिनेंटल और प्रेस क्लब के आसपास अन्य भोजनालयों के रूप में अपनी विशाल उपस्थिति के साथ क्षेत्र के क्षितिज को तोड़ देते हैं।

6.3 संरक्षित संस्मारक या क्षेत्र से दृश्यता और विनियमित क्षेत्र से दृश्यता:

कैसरबाग गेट्स दक्षिण, दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण-पूर्व में प्रतिषिद्ध क्षेत्रों से स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। संस्मारक के दक्षिण-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम तक का क्षितिज पिछले कुछ वर्षों में काफी बदल गया है, जैसा कि अभिलेखीय चित्रों से तुलना करने पर दिखाई देता है, हालांकि, इसने ऐतिहासिक विशेषता को काफी हद तक बनाए रखा है। संस्मारक से उत्तर-पूर्व दिशा में कुछ आवासीय भवनों के निर्माण के कारण विशाल विस्तार की पृष्ठभूमि से समझौता किया गया है।

6.4 भूमि-उपयोग की पहचान की जानी है:

लखनऊ महायोजना 2031 के अनुसार कैसरबाग गेट्स भवनों का भूमि उपयोग 'आवासीय' (आवासीय) श्रेणी के अंतर्गत आता है। पूर्वी गेट के दक्षिण में बी.एन. रोड और उत्तर में महाराजा महमूदाबाद रोड से घिरा यह क्षेत्र भी 'आवासीय' श्रेणी में आता है। दक्षिण में महाराजा महमूदाबाद रोड और उत्तर में रानी लक्ष्मी बाई रोड के बीच की भूमि को 'पार्क और खुले स्थान'

(पार्क एवं खुले स्थल) के रूप में निर्दिष्ट किया गया है। भातखंडे संगीत संस्थान का भूमि उपयोग 'सामान्य शैक्षणिक संस्थान' (सामान्य शैक्षिक संस्थान) के रूप में वर्गीकृत किया गया है। आगे उत्तर में टेलीफोन एक्सचेंज रोड से आगे रेजीडेंसी तक जाने वाली सड़क को 'कार्यालय भवन' (कार्यालय) के रूप में वर्गीकृत किया गया है। कैसरबाग चौराहे के आसपास लाटूच रोड और नजीराबाद रोड के बीच की भूमि केंद्रीय वाणिज्यिक क्षेत्र (केंद्रीय वाणिज्यिक क्षेत्र) की श्रेणी में आती है। पश्चिम में लाटूच रोड और पूर्व में बी.एन रोड से घिरी भूमि को विकसित क्षेत्र (निर्मित क्षेत्र) के रूप में वर्गीकृत किया गया है। **(अनुलग्नक III-ड़ देखें)**

6.5 संरक्षित संस्मारक के अलावा पुरातात्विक धरोहर अवशेष:

स्मारकों के निकट अब तक कोई अन्य ज्ञात या दृश्यमान पुरातात्विक विरासत का अवशेष नहीं है। कैसरबाग महल का स्थान प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान ध्वस्त कर दिया गया था और आज यह केवल टुकड़ों में ही बचा हुआ है। यह पता लगाने के लिए आगे पुरातात्विक जांच की आवश्यकता है कि क्या परिसर के आसपास कोई अन्य दफन अवशेष हैं।

6.6 सांस्कृतिक परिदृश्य:

संरक्षित संस्मारक एक बड़े सांस्कृतिक परिदृश्य का हिस्सा हैं जिसमें अवध के नवाबों द्वारा निर्मित कई ऐतिहासिक संस्मारक शामिल हैं। इतिहास में विभिन्न शासकों ने ऐसी संरचनाओं का निर्माण किया और विध्वंस करके इस परिदृश्य में योगदान दिया है जो उनकी वास्तुशिल्प प्राथमिकताओं को दर्शाती हैं। गोमती नदी के करीब स्थित इस परिसर ने ऐतिहासिक महत्व की कई परतें अर्जित की हैं, प्रत्येक परत सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक और विकास संबंधी बहुमुखी चुनौतियों की साक्षी है, जिन्होंने इसे सदियों से ढ़ाला है।

वर्तमान संदर्भ में कैसरबाग महल परिसर की विकसित होती प्रकृति को एक सांस्कृतिक परिदृश्य के रूप में पहचानना आवश्यक है। यह उन समुदायों के लिए प्रतीकात्मक अर्थ रखता है जो इसमें निवास करते हैं या यहां आते हैं। यह परिसर एक सांस्कृतिक केंद्र के रूप में कार्य करता है जो भातखंडे संगीत संस्थान और कथक संस्थान जैसे संस्थानों की मेजबानी करता है, जो राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हैं और प्रतिषिद्ध क्षेत्र में सफेद बारादरी पूरे वर्ष विविध सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में कार्य करता है।

6.7 महत्वपूर्ण प्राकृतिक परिदृश्य जो सांस्कृतिक परिदृश्य का हिस्सा बनते हैं और संस्मारक को पर्यावरण प्रदूषण से बचाने में भी मदद करते हैं:

कैसरबाग महल की वास्तुकला के पीछे केंद्रीय अवधारणा एक स्वर्ग उद्यान के विचार से आई है, जो एक फ़ारसी अवधारणा है जिसे भारत में मुगलों द्वारा लोकप्रिय बनाया गया था। अवध के नवाबों ने पानी के फव्वारों, बगीचों और फूलों के पेड़ों के साथ उद्यान बनाने की इस प्रथा को जारी रखा। 1857 से पहले की पेंटिंग्स और तस्वीरों से संकेत मिलता है कि मुख्य चतुर्भुज, जो कैसरबाग महल का दिल था, में एक बडा और अच्छी तरह से बनाए रखा गया चार-बाग उद्यान[3] था। केंद्र में बारादरी से सुशोभित इस उद्यान का अधिकांश भाग बटलर पार्क और गुलाब वाटिका (राजा रामपाल सिंह पार्क) के नाम से आज भी बरकरार है।

[3] अनिल मल्होत्रा और नीता दास द्वारा कैसरबाग के चारदीवारी वाले महल। यूआरएल: web.archive.org

सआदत अली खान और उनकी पत्नी मशीर जैदी का मकबरा उद्यान भी नवाबों के समय से चली आ रही शाही मकबरे के बगीचों की ऐतिहासिक अवधारणा का एक महत्वपूर्ण प्रमाण है।

आसपास के अन्य हरेभरे स्थानों के विवरण के लिए बिंदु 5.2.3 देखें (हरित/खुले स्थानों का विवरण)

6.8 खुली जगह और निर्माण का उपयोग:

संस्मारक के आसपास कई हरेभरे और खुले क्षेत्र हैं जिन्हें भविष्य के प्रस्तावों और योजनाओं में इन स्मारकों के संदर्भ और अवस्थान को बनाए रखने के लिए खुले स्थान के रूप में बनाए रखा जाना चाहिए। ये स्थान विभिन्न गतिविधियों के लिए स्थल के रूप में काम करते हैं, जिनमें दैनिक सुबह की सैर से लेकर छोटे पैमाने की राजनीतिक बैठकें, विरोध प्रदर्शन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रदर्शनियां, स्कूल पिकनिक, विरासत की सैर और अन्य सांस्कृतिक गतिविधियां शामिल हैं।

6.9 पारंपरिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ:

कैसरबाग के इस क्षेत्र को शहर का सांस्कृतिक केंद्र कहा जा सकता है। प्रतिषिद्ध क्षेत्र में सफ़ेद बारादरी प्रदर्शनियों, सांस्कृतिक प्रदर्शनों आदि सहित पूरे वर्ष विविध सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में कार्य करती है। राष्ट्रीय कथक संस्थान और भातखंडे संगीत संस्थान, राय उमानाथ बाली सभागार लखनऊ की प्रदर्शन कला विरासत के संपोषण और प्रदर्शन में महत्वपूर्ण केंद्र हैं ।

इस क्षेत्र में एक और महत्वपूर्ण अमूर्त सांस्कृतिक पहलू खने-पीने की चीजें है, प्रामाणिक लखनऊ व्यंजनों के लिए प्रसिद्ध कुछ प्रमुख और प्रसिद्ध भोजन स्थल हैं, जो निकट ही स्थित हैं।

यह उत्तर प्रदेश पर्यटन और कई अन्य निजी संस्थाओं के साथ पूरे क्षेत्र में लगातार विरासत वॉक का आयोजन करने वाला एक महत्वपूर्ण पर्यटक आकर्षण भी है। उत्तर प्रदेश पर्यटन द्वारा प्रकाशित कैसरबाग विरासत वॉक रूट के अठारह पड़ावों में से बारह पड़ाव विनियमित क्षेत्र के भीतर स्थित हैं।

6.10 संस्मारक और विनियमित क्षेत्रों से दृश्यमान क्षितिज:

संस्मारक से सफ़ेद बारादरी और सआदात अली खान के मकबरे की ओर देखने पर क्षितिज ऐतिहासिक स्थलों से युक्त एक शहरी क्षितिज को दर्शाता है। **अनुलग्नक IV** अभिलेखीय और वर्तमान चित्रों के माध्यम से क्षितिज की तुलनात्मक छवियां दिखाता है।

6.11 पारंपरिक वास्तुकला:

ऐतिहासिक रूप से कैसरबाग चतुर्भुज के तीन किनारों के आसपास की इमारतें महिलाओं के लिए आवास के रूप में कार्य करती थीं। इस चतुर्भुज के केंद्र में सफेद बारादरी स्थित है, जिसके शेष भाग में परी खाना है।

वर्तमान संदर्भ में चतुर्भुज के साथ वास्तुकला राजा महमूदाबाद महल, राजा सलेमपुर हाउस, तिलोई हाउस, मनकापुर हाउस, कोटवारा हाउस, मासिबा हाउस (लाला लाजपत राय लाइब्रेरी) और प्रयागपुर हाउस (बलरामपुर इंटरनेशनल हॉस्टल) के रूप में मौजूद है और भातखंडे संगीत संस्थान चतुर्भुज के केंद्र में सफेद बारादरी भी एक विरासत संरचना है इसके साथ ही अमीरु-उद-दौला सार्वजनिक पुस्तकालय भी परिसर का हिस्सा है।

विनियमित क्षेत्र के भीतर पारंपरिक वास्तुकला प्रदर्शित करने वाली अन्य संरचनाओं में कैसरबाग टेलीफोन एक्सचेंज में उप महाप्रबंधक कार्यालय और गोल दरवाजा या सदर दरवाजा शामिल हैं।

(अनुलग्नक VI देखें)

6.12 स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा उपलब्ध विकासात्मक योजना:

इसे **अनुलग्नक III (ख)** में देखा जा सकता है। प्राधिकारियों द्वारा अलग-अलग विनियमन क्षेत्रों की विस्तृत क्षेत्रीय विकास योजनाएं अभी तक तैयार नहीं की गई हैं।

6.13 अनुमत भवन संबंधी पैरामीटर:

संस्मारक - कैसरबाग गेट्स (पूर्व और पश्चिम) सआदत अली खान का मकबरा, सआदत अली खान की पत्नी मशीर जैदी का मकबरा और सैपर का मकबरा, विक्टोरिया मेमोरियल, नील गेट, जनरल वली कोठी, सिकछावली कोठी और कैसर पसंद के निकट स्थित कब्रिस्तान नामक अन्य संरक्षित स्मारकों के करीब स्थित है। इसलिए कैसरबाग गेट्स की प्रतिषिद्ध और विनियमित सीमाएँ उपर्युक्त स्मारकों के बफर जोन के साथ मिलती हैं। अतः इन सभी संरक्षित संसमारकों की उप-विधियों को एक दूसरे के साथ संयोजन में पढ़ा जाना चाहिए। यदि किसी निर्माण- स्थल एक-साथ किसी संस्मारक के प्रतिषिद्ध क्षेत्र और किसी अन्य संस्मारक के विनियमित क्षेत्र में पढ़ता है, तो उस निर्माण स्थल को सिर्फ प्रतिषिद्ध क्षेत्र में आने वाला माना जाएगा और तदानुसार भवन संबन्धित मानदंड लागू होंगे। इसके अतिरिक्त यदि कोई निर्माण स्थल दो अलग- अलग संसमारकों के विनियमित क्षेत्र में आता है तो निर्माण स्थल के करीब स्थित संस्मारक पर प्रस्तावित निर्माण के कारण संभावित प्रतिकूल प्रभाव को प्राथमिकता दी जाएगी।

लखनऊ महायोजना 2031 और लखनऊ विकास प्राधिकरण: भवन निर्माण और विकास उपविधि, 2008 (यथा संशोधित 2011, 2016 और 2018) में निर्दिष्ट सभी विकास नियंत्रण मानदंड और भवन नियम, जब भी संशोधित होंगे, लागू होंगे, तथापि इस दस्तावेज़ में निर्दिष्ट ऊंचाई और अन्य मानदंड संस्मारक के विनियमित क्षेत्र में लागू होंगे।

6.13.1 मरम्मत एवं नवीनीकरण(प्रतिषिद्ध एवं विनियमित क्षेत्र में) :

आंतरिक परिवर्तन और अनुकूली पुन: उपयोग की आम तौर पर अनुमति दी जा सकती है, हालांकि, बाहरी परिवर्तन सक्षम प्राधिकारी की विस्तृत जांच के अधीन होंगे। ऐसे परिवर्तनों जिनमें, रेट्रोफिटिंग/नवीनीकरण शामिल हो सकता है जिसकी अनुमति तब दी जा सकती है जब इमारत संरचनात्मक रूप से कमजोर या असुरक्षित हो या जब यह किसी प्राकृतिक आपदा से प्रतिकूल रूप से प्रभावित हो और नवीकरण नितांत आवश्यक हो। निर्मित/खुले संबंधों के साथ-साथ मूल भवन शब्दावली और आयोजना का पालन किया जाना चाहिए। सक्षम प्राधिकारी की पूर्व अनुमति के अधीन इमारतों की सामान्य मरम्मत और रखरखाव की अनुमति दी जाएगी।

भवन/संरचनाओं की मरम्मत और नवीनीकरण संरक्षित संस्मारक और उसके आस-पास के क्षेत्रों के धरोहर स्वरूप के साथ मेल खाती और उसके अनुरूप होनी चाहिए। एल्युमीनियम कम्पोजिट पैनल (एसीपी), हाई प्रेशर लैमिनेट्स (एचपीएल), लैमिनेट्स, टाइलिंग या ग्लेज़िंग जैसी नई क्लैडिंग सामग्री की अनुमति नहीं दी जाएगी।मरम्मत और नवीनीकरण कार्य करते समय स्थानीय रूप से उपलब्ध निर्माण सामग्री को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

6.13.2 पुनर्निर्माण:

पुनर्निर्माण को एएमएएसआर अधिनियम, 1958 की धारा 2(त) में परिभाषित किया गया है तथा विनियमित क्षेत्र में पुनर्निर्माण की अनुमति एएमएएसआर अधिनियम, 1958 की धारा 20ग(2) और एएमएएसआर (विरासत उपनियमों का निर्धारण और सक्षम प्राधिकारी के अन्य कार्य) नियम, 2011 के नियम 6(IV) और नियम 7 के अनुसार दी जाती है। किसी संरक्षित संस्मारक या संरक्षित क्षेत्र के प्रतिषिद्ध या विनियमित क्षेत्र में स्थित किसी भी प्रकार के भवन या सरंचना, जो प्राकृतिक आपदाओं से ध्वस्त या क्षतिग्रस्त हो गयी है, और जिसकी मरम्मत नहीं की जा सकती है, के मामले में पुनर्निर्माण की एएमएएसआर (विरासत उपनियमों का निर्धारण और सक्षम प्राधिकारी के अन्य कार्य) नियम, 2011 के नियम 16 के अनुसार दी जाती है। पुनर्निर्माण के मामले में पुरानी इमारत के प्रतिस्थापन के रूप में नई संरचना या इमारत को पहले से मौजूद संरचना के अनुसार उसी क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर सीमाओं का पालन करना होगा। अग्रभाग में असंगत सामग्री जैसे ग्लेज़िंग, मेटल क्लैडिंग, एल्युमीनियम कम्पोजिट पैनल (एसीपी), हाई प्रेशर लैमिनेट्स (एचपीएल), टाइल्स, लैमिनेट्स के उपयोग की अनुमति नहीं होगी। नई संरचना संरक्षित संस्मारक के धरोहर क्षेत्र और उसके आसपास के क्षेत्र के साथ मेल खाती और उसके अनुरूप होनी चाहिए।

6.13.3 नया निर्माण:

6.13.3 क. प्रतिषिद्ध क्षेत्र:

एएमएएसआर अधिनियम, 1958 की धारा 20क(4) के अनुसार जनसाधारण के लिए आवश्यक किसी सार्वजनिक कार्य या परियोजना चलाने अथवा अन्य निर्माण कार्य सहित किसी नये निर्माण की अनुमति संरक्षित संस्मारक के प्रतिषिद्ध क्षेत्र के भीतर नहीं दी जायेगी।

6.13.3 ख. विनियमित क्षेत्र:

लखनऊ मास्टर प्लान 2031 और लखनऊ विकास प्राधिकरण: भवन निर्माण और विकास उपनियम, 2008 (यथा संशोधित 2011, 2016 और 2018) में निर्दिष्ट सभी विकास नियंत्रण मानदंड और भवन विनियम, जब भी संशोधित हों, लागू होंगे। तथापि, इस दस्तावेज़ में निर्दिष्ट ऊंचाई और अन्य मानदंड स्मारक के विनियमित क्षेत्र में लागू होंगे।

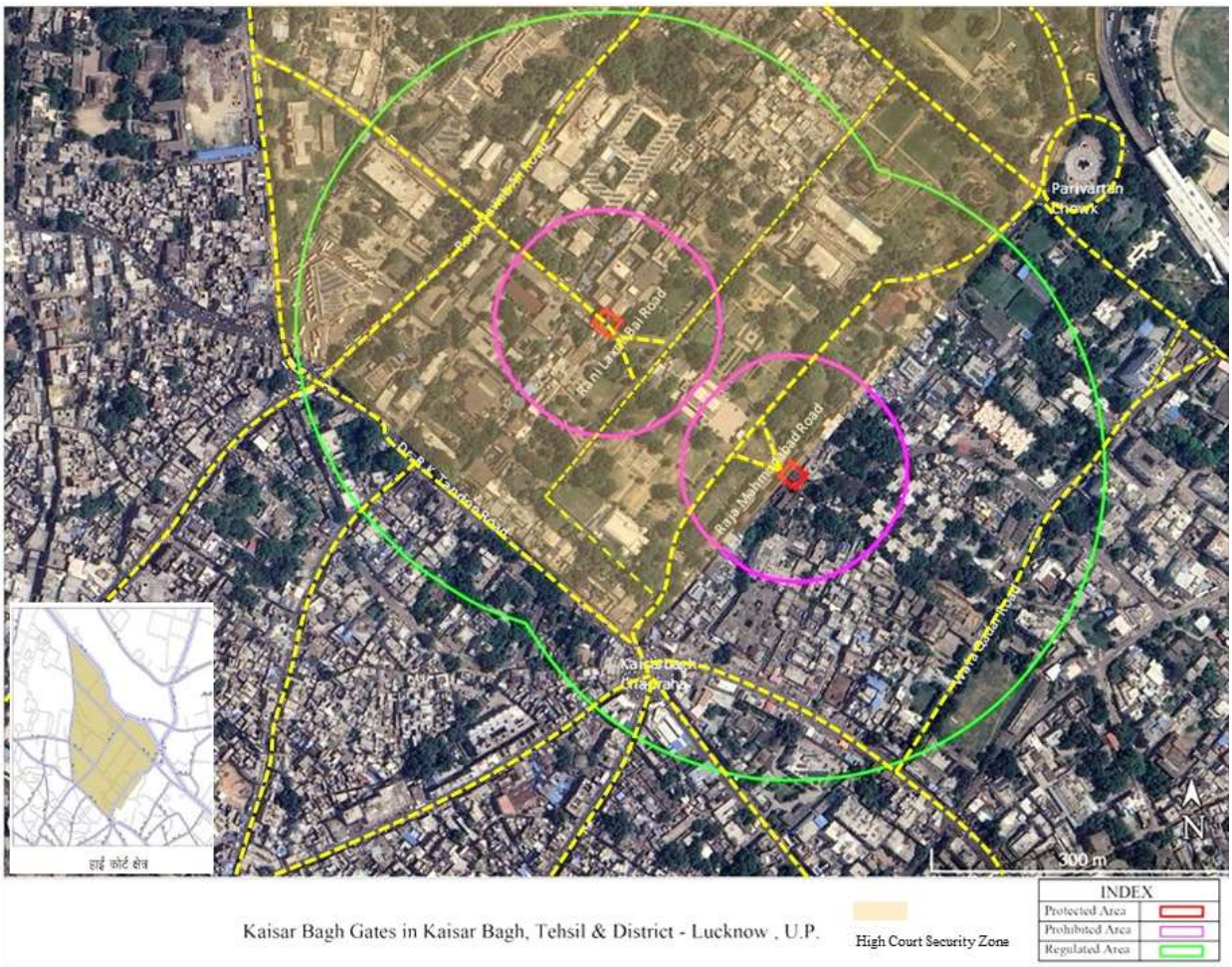

1. **कार्य-स्थल पर नये निर्माण की ऊंचाई (ममटी, पैरापेट जल भंडारण टैंक, मशीन रूम, जनरेटर रूम, एचवीएसी यूनिट, सौर पैनल, वर्षा जल संचयन प्रणाली, छत उद्यान आदि की पेंट हाउस संरचना आदि सहित अथवा छत पर कोई अन्य सेवा):**

   i. **<u>उच्च न्यायालय सुरक्षा क्षेत्र में आने वाला विनियमित क्षेत्र</u>** नये निर्माण के लिए अथवा मौजूदा इमारतों में अितरिक्त निर्माण/परिवर्धन के लिए अधिकतम ऊंचाई सीमा **7.5 मीटर** (ममटी, पैरापेट जल भंडारण टैंक, मशीन रूम, जनरेटर रूम, एचवीएसी यूनिट, सौर पैनल, वर्षा जल संचयन प्रणाली, छत उद्यान आदि की पेंट हाउस संरचना आदि सहित अथवा छत पर कोई अन्य सेवा) से अधिक नहीं होगी ।

   ii. **<u>उच्च न्यायालय सुरक्षा क्षेत्र से बाहर आने वाला विनियमित क्षेत्र</u>** नये निर्माण के लिए अथवा मौजूदा इमारतों में अतिरिक्त निर्माण/परिवर्धन के लिए अधिकतम ऊंचाई सीमा **12.50 मीटर** (ममटी, पैरापेट जल भंडारण टैंक, मशीन रूम, जनरेटर रूम, एचवीएसी यूनिट, सौर पैनल, वर्षा जल संचयन प्रणाली, छत उद्यान आदि की पेंट हाउस संरचना आदि सहित अथवा छत पर कोई अन्य सेवा) से अधिक नहीं होगी।

   संरक्षित संस्मारक के सरंचनागत सुरक्षा पर पड़ने वाले किसी भी प्रतिकूल प्रभाव को समाप्त करने के लिए तलघर के निर्माण की अनुमति नही दी जायेगी।

2 **उपयोग:** लखनऊ महायोजना 2031 के अनुसार क्षेत्र के वर्तमान अवस्थान और आसपास को बनाए रखने के लिए भूमि-उपयोग में कोई बदलाव नहीं होना चाहिए।

(i विरासत इमारतों **(अनुलग्नक VI** में सूचीबद्ध) को भविष्य में उनके उपयोग और विशेषता (रास्ते और अग्रभाग) को बरकरार और अनुरक्षित रखना चाहिए। **विरासत संरचना में क्षैतिज या ऊर्ध्वाधर किसी भी बाहरी परिवर्धन की अनुमति नहीं दी जाएगी।**

(ii) लखनऊ महायोजना 2031 में 'पार्क और खुले स्थान' के रूप में चिन्हित खुले स्थानों को संस्मारक मूर्तियों, पुतलों या ऐसी किसी भी संरचना के अतिरिक्त शामिल किए बिना बरकरार रखा जाएगा।

3 अग्रभाग डिजाइन:

(i) नए निर्माण के अग्रभाग का डिज़ाइन न्यूनतम स्वरूप का होना चाहिए ताकि यह संस्मारक और आसपास की समग्र विरासत विशेषता पर हावी न हो।

(ii) विरासत संरचनाओं **(अनुलग्नक VI में सूचीबद्ध)** के अग्रभागों को एक संरक्षण वास्तुकार की देखरेख में बहाल किया जाएगा और भविष्य में बनाए रखा जाएगा।

4. छत का डिज़ाइन:

(i) इमारतों में सपाट छत डिजाइन का पालन किया जाना है।

(ii) भवन की छत पर अस्थायी सामग्री जैसे एल्यूमीनियम, फाइबर ग्लास, पॉली कार्बोनेट जैसी या इसी तरह की दूसरी सामग्री का उपयोग कर अस्थाई प्रकृति की संरचनाएं भी स्थापित किये जाने को हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

(iii) सभी सेवाएँ जैसे बड़ी एयर कंडीशनिंग इकाइयाँ, छत पर पानी की टैंकी या छत पर रखे गए बड़े जनरेटर सेट को स्क्रीन दीवारों (ईंट/सीमेंट शीट, लाउवर, जाली या अन्य ऐसे डिज़ाइन तत्वों) का उपयोग करके ढ़क देना चाहिए। इन सभी सेवाओं को अनिवार्य रूप से अधिकतम अनुमेय ऊंचाई में शामिल किया जाये।

5. भवन निर्माण सामग्री:

आधुनिक निर्माण सामग्री का उपयोग किया जा सकता है लेकिन बाहरी अग्रभाग एसीपी, एचपीएल जैसी सामग्रियों से ढका नहीं होना चाहिए, लेमिनेट, टाइलिंग और अग्रभाग ग्लेज़िंग हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

6. रंग:

(i) बाहरी रंग संस्मारक के अनुरूप तटस्थ रंग का होना चाहिए, जैसे कि बफ बलुआ पत्थर का रंग, बेज और अन्य मिट्टी के रंग, जो संस्मारक और उसके आसपास के वातावरण के साथ बिलकुल बेमेल न हों।

(ii) सभी विरासत संरचनाओं **(अनुलग्नक VI में सूचीबद्ध)** में उनके मूल रंग पैलेट का पालन क्या जाएगा।

7. **अन्य विनियम:**

(i) किसी बड़े पैमाने पर सार्वजनिक बुनियादी ढांचा परियोजना जैसे मेट्रो (भूमिगत या ओवरहेड), फुट-ओवर ब्रिज, फ्लाईओवर, मल्टी-लेवल पार्किंग या ऐसी किसी भी परियोजना के निर्माण का प्रस्ताव एक विस्तृत विरासत प्रभाव आकलन रिपोर्ट के अधीन होगा।

(ii) विरासत संरचनाओं **(अनुलग्नक VI में सूचीबद्ध)** का विध्वंस और पुनर्निर्माण सख्ती से प्रतिबंधित होगा।

6.14 आगंतुक सुविधाएं और साधन:

पूरे कैसरबाग परिसर में आगंतुकों के लिए सुविधाएं और साधन जैसे उचित रोशनी, शौचालय और पीने के पानी की व्यवस्था, व्याख्या केंद्र और बेंच आदि प्रदान किए जा सकते हैं। स्थल को ब्रेल सहित पर्याप्त और व्यापक संकेतक और व्याख्या के साथ विकसित किया जा सकता है ताकि आगंतुकों को स्थल के महत्व के बारे में शिक्षित किया जा सके।

सभी सुविधाओं को समुचित रूप से स्थापित किया जाना चाहिए ताकि वे स्मारकों के दृश्य को बाधित न करें या इन्हे पेड़ पौधों से ढका जा सकता है ताकि स्मारकों के दृश्य में रूकावट न आए।

अध्याय VII

स्थल विशिष्ट सिफ़ारिशें

7.1 स्थल विशिष्ट सिफ़ारिशें:

i. ऐतिहासिक परिसर के भीतर सभी चिह्न संकेतक संस्मारक और उसके बिलकुल आसपास के विशेष चरित्र के अनुरूप और और सामंजस्यपूर्ण होने चाहिए।

ii. संरक्षित संस्मारक के निकट विशेषकर संस्मारक की चारदीवारी पर होर्डिंग, बिल-बोर्ड, इश्तिहार और पोस्टर की अनुमति नहीं दी जाएगी।

iii. संस्मारक के निकट आगंतुकों के लिए समर्पित पार्किंग सुविधाएं प्रदान की जाएंगी।

iv. वाहनों से होने वाले उत्सर्जन और कंपन के कारण संरक्षित संस्मारक पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव को कम करने के लिए संस्मारक के आसपास आवाजाही के लिए पर्यावरण-अनुकूल वाहनों के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाये।

v. वर्षा जल संचयन आदि जैसी सर्वोत्तम प्रथाओं सहित हरित भवनों के निर्माण को प्रोत्साहित किया जाये।

vi. संरक्षित स्मारकों के आसपास (प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्र) में दूरसंचार टावरों को हतोत्साहित किया जाना चाहिए और मौजूदा टावरों को विनियमित क्षेत्र के बाहर स्थानांतरित करने की सिफारिश की गई है।

vii. अनिवार्य पुरातात्विक प्रभाव मूल्यांकन के बाद स्मारकों के सामने वाली सड़क पर भूमिगत केबलिंग होनी चाहिए।

viii. पुराने ऐतिहासिक पेड़ों सहित स्मारकों के आसपास हरियाली बरकरार रखी जानी चाहिए।

ix. संरक्षित संस्मारक के नजदीक अथवा उसके बिलकुल नजदीकी आस पास के-क्षेत्रों में संकेतकों के लिए एलईडी या डिजीटल संकेतक, प्लास्टिक फाईवर ग्लास या किसी अन्य उच्च परावर्तक सिंथेटिक सामग्री का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।

7.2 अन्य सिफ़ारिशें:

i. उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों और यातायात पैटर्न की पहचान करने के लिए संरक्षित स्मारकों के आसपास व्यापक यातायात मूल्यांकन करने की सिफारिश की जाती है जो स्मारकों की संरचनात्मक अखंडता को खतरे में डाल सकते हैं।

ii. विरासत संरक्षण सिद्धांतों को **"लखनऊ के लिए प्रस्तावित व्यापक गतिशीलता योजना"** में शामिल करने की सिफारिश की गई है। इस एकीकरण का उद्देश्य संरक्षित स्मारकों के आसपास मौजूदा यातायात आवाजाही से उत्पन्न खतरे का समाधान करना है। संरक्षण प्रयासों को बढ़ाते हुए जोखिमों को कम करने पर ध्यान केंद्रित करते हुए दृष्टिकोण बहुआयामी होना चाहिए।

iii. कैसरबाग विरासत ज़ोन के सभी स्मारकों को विरासत वॉक और उचित एवं प्रासंगिक रूप से डिज़ाइन किए गए संकेतकों के माध्यम से अधिक दृश्यमान बनाया जाएगा।

iv. विरासत क्षेत्र के अधिकार क्षेत्र और सीमाओं को स्थानीय क्षेत्र योजना में एकीकृत किया जा सकता है जिसे लखनऊ विकास प्राधिकरण द्वारा तैयार और कार्यान्वित किया जाता है क्योंकि स्थानीय क्षेत्र योजना महायोजना के साथ-साथ धरोहर उप-विधियों के कार्यान्वयन के लिए एकल खिड़की ढांचा प्रदान करती है। शहरी डिज़ाइन दिशानिर्देशों के साथ लेआउट योजनाओं को स्थानीय क्षेत्र योजना के स्तर पर भी शामिल किया जा सकता है।

v. **जोन-08** के लिए जोनल विकास योजना, लखनऊ महायोजना-2031 में उल्लिखित **कैसरबाग विरासत जोन** के संयोजन में संबंधित विभाग द्वारा प्राथमिकता (चरण-1) धरोहर उप-विधियों में निर्दिष्ट प्रतिबंधों को ध्यान में रखते हुए तैयार किया जाना चाहिए।

vi. विरासत संरचनाओं **(अनुलग्नक VI में उल्लिखित)** को स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा मान्यता दी जाना चाहिए और सूचीबद्ध किया जाना चाहिए।

vii. कैसरबाग विरासत ज़ोन में असंरक्षित विरासत संरचना (जैसा कि **अनुलग्नक VI** या किसी अन्य में उल्लिखित है) की स्थिति की निगरानी के लिए स्थानीय नगर निगम द्वारा एक विरासत सेल की स्थापना की जा सकती है।

viii. दिव्यांग व्यक्तियों के लिए प्रावधान निर्धारित मानकों के अनुसार प्रदान किए किए जाने चाहियें।

ix. क्षेत्र को प्लास्टिक और पोलीथीन मुक्त घोषित किया जाना चाहिए।

x. संस्मारक के ऐतिहासिक और वास्तुकला महत्व के बारे में जन जागरूकता बढ़ाने के लिए व्यापक प्रचार कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं।

xi. संस्मारक के चारों ओर मौजूदा शहरीकरण से प्रतिरोधक के रूप में संरक्षित संस्मारक की आधुनिक सीमा के साथ स्वदेशी/स्थानीय घने आवरण वाले और पेड लगाए जाने चाहिए।

xii. सांस्कृतिक विरासत स्थलों और परिसरों के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन दिशानिर्देश https://nidm.gov.in/PDF/pubs/NDMA/20.pdf पर देखे जा सकते हैं।

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF CULTURE
NATIONAL MONUMENTS AUTHORITY

In exercise of the powers conferred by section 20 E of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1958 read with Rule (22) of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains (Framing of Heritage Bye- laws and Other Functions of the Competent Authority) Rule, 2011, the following Heritage Bye-laws for the Protected Monuments **Kaisarbagh Gates, Lucknow, Uttar Pradesh** prepared by the Competent Authority, in consultation with Indian Institute of Technology (BHU), Varanasi, Uttar Pradesh were published on 05.07.2023, as required by sub-rule (2) of Rule 18 of the National Monuments Authority (Conditions of Service of Chairman and Members of Authority and Conduct of Business) Rules, 2011, for inviting objections or suggestions from the public;

The objections/suggestions, received before the specified date have duly been considered by the National Monuments Authority in consultation with the Competent Authority.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (5) of the Section 20 E of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1958 the National Monuments Authority, hereby makes the following bye-laws, namely: -

Heritage Bye-Laws for Kaisarbagh Gates, Lucknow, Uttar Pradesh

CHAPTER I
Preliminary

1.1 Short title, Extent and Commencements:

(i) These bye-laws may be called the National Monuments Authority Heritage Bye-laws, 2024 of Protected Monument - **Kaisarbagh Gates, Lucknow, Uttar Pradesh**

(ii) They shall extend to the entire prohibited and regulated area of the monuments.

(iii) The provisions of these bye-laws shall have effect notwithstanding anything inconsistent therewith contained in any other bye-laws, whether made before or after the commencement of these bye-laws, or in any instrument having effect by virtue of any bye-laws. It shall not be obligatory to carry out amendments in these bye-laws to make them consistent with any other bye-laws.

(iv) They shall come into force with effect from the date of their publication.

1.2 Definitions:

1) In these bye-laws, unless the context otherwise requires, the definitions as given in the Act or the rules made thereunder have been reproduced hereunder for the sake of convenience: -

(a) "Ancient monument" means any structure, erection or monument, or any tumulus or place or interment, or any cave, rock sculpture, inscription or monolith, which is of historical, archaeological or artistic interest and which has been in existence for not less than one hundred years, and includes: -

(i) the remains of an ancient monument,

(ii) the site of an ancient monument,

(iii) such portion of land adjoining the site of an ancient monument as may be required for fencing or covering in or otherwise preserving such monument, and

(iv) the means of access to, and convenient inspection of an ancient monument;

(b) "Archaeological site and remains" means any area which contains or is reasonably believed to contain ruins or relics of historical or archaeological importance which have been in existence for not less than one hundred years, and includes:

i. such portion of land adjoining the area as may be required for fencing or covering in or otherwise preserving it, and

ii. the means of access to, and convenient inspection of the area;

(c) "Act" means the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1958 (24 of 1958);

(d) "Archaeological officer" means an officer of the Department of Archaeology of the Government of India not lower in rank than Assistant Superintendent of Archaeology;

(e) "Authority" means the National Monuments Authority constituted under Section 20 F of the Act;

(f) "Competent authority" means an officer not below the rank of Director of archaeology or Commissioner of archaeology of the Central or State Government or equivalent rank, specified, by notification in the Official Gazette, as the competent authority by the Central Government to perform functions under this Act:

Provided that the Central Government may, by notification in the Official Gazette, specify different competent authorities for the purpose of section 20C, 20D and 20E;

(g) "construction" means any erection of a structure or a building, including any addition or extension thereto either vertically or horizontally, but does not include any re-construction, repair and renovation of an existing structure or building, or, construction, maintenance and cleansing of drains and drainage works and of public latrines, urinals and similar conveniences, or the construction and maintenance of works meant for providing supply of water for public, or, the construction or maintenance, extension, management for supply and distribution of electricity to the public or provision for similar facilities for public;

(h) "Floor Area Ratio (FAR)" means the quotient obtained by dividing the total covered area (plinth area) on all floors by the area of the plot;

FAR = Total covered area of all floors divided by plot area;

(i) "Government" means the Government of India;

(j) "maintain", with its grammatical variations and cognate expressions, includes the fencing, covering in, repairing, restoring and cleansing of a protected monument, and the doing of any act which may be necessary for the purpose of preserving a protected monument or of securing convenient access thereto;

(k) "owner" includes-

(i) a joint owner invested with powers of management on behalf of himself and other joint owners and the successor-in-title of any such owner; and

(ii) any manager or trustee exercising powers of management and the successor-in-office of any such manager or trustee;

(l) "prescribed" means prescribed by rules made under this Act;

(m) "Prohibited area" means any area specified or declared to be a prohibited area under section 20A;

(n) "Protected area" means any archaeological site and remains which is declared to be of national importance by or under this Act;

(o) "Protected monument" means any ancient monument which is declared to be of national importance by or under this Act;

(p) "Regulated area" means any area specified or declared to be a regulated area under section 20B of this Act;

(q) "re-construction" means any erection of a structure or building to its pre-existing structure, having the same horizontal and vertical limits;

(r) "Repair and renovation" means alterations to a pre-existing structure or building, but shall not include construction or re-construction;

2) The words and expressions used herein and not defined shall have the same meaning as assigned in the Act or the rules made thereunder.

CHAPTER II

Background of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains (AMASR) Act, 1958

2.1 Background of the Act:

The Heritage Bye-Laws are intended to guide physical, social and economic interventions within 300m in all directions of the Protected Monuments. The three hundred meters area has been divided into two parts (i) the **Prohibited Area,** the area beginning at the limit of the Protected Area or the Protected Monument and extending to a distance of one hundred meters in all directions and (ii) the **Regulated Area**, the area beginning at the limit of the Prohibited Area and extending to a distance of two hundred meters in all directions.

As per the provisions of the Act, no person shall undertake any construction or mining operation in the Protected Area and Prohibited Area while permission for repair and renovation of any building or structure, which existed in the Prohibited Area before 16 June, 1992, or which had been subsequently constructed with the approval of Director General (DG), Archaeological Survey of India (ASI) and; permission for construction, re-construction, repair or renovation of any building or structure in the Regulated Area, must be sought from the Competent Authority.

2.2 Provision of the Act related to Heritage Bye-laws:

Section 20E of AMASR Act, 1958 and Rule 22 of Ancient Monument and Archaeological Sites and Remains (Framing of Heritage Bye-Laws and other functions of the Competent Authority) Rules, 2011, specifies framing of Heritage Bye-Laws for Protected Monuments. The Rule provides parameters for the preparation of Heritage Bye-Laws. Rule 18 of National Monuments Authority (Conditions of Service of Chairman and Members of Authority and Conduct of Business) Rules, 2011, specifies the process of approval of Heritage Bye-laws by the Authority.

2.3 Rights and Responsibilities of the Applicant:

Section 20C of AMASR Act, 1958 specifies details of application for repair and renovation in the Prohibited Area, or construction or re-construction or repair or renovation in the Regulated Area as described below:

a) Any person, who owns any building or structure, which existed in a Prohibited Area before 16th June, 1992, or, which had been subsequently constructed with the approval of the DG, ASI and desires to carry out any repair or renovation of such building or structure, may make an application to the Competent Authority for carrying out such repair and renovation as the case may be.

b) Any person, who owns or possesses any building or structure or land in any Regulated Area, and desires to carry out any construction or re-construction or repair or renovation of such building or structure on such land, as the case may be, may make an application to the

Competent Authority for carrying out construction or re-construction or repair or renovation as the case may be.

c) It is the responsibility of the applicant to submit all relevant information and abide by the National Monuments Authority (Conditions of Service of Chairman and Members of the Authority and Conduct of Business) Rules, 2011.

CHAPTER III

Location and Setting of the Protected Monument – Kaisarbagh Gates, Lucknow, Uttar Pradesh

3.1 Location and Setting of the Monument:

The Protected Monument, Kaisarbagh Gates consists of two Gates, namely the East Gate, also known as Lakhi Gate and the West Gate, also known as Chaulakhi Gate, in a single Gazette notification. They are located in the present-day Kaiserbagh area of Lucknow. The geographical coordinates of their locations are as follows:

(i) East Gate or Lakhi Gate - 26°51'6.23"N; 80°55'58.14"E;

(ii) West Gate or Chaulakhi Gate - 26°51'10.74"N; 80°55'51.81"E.

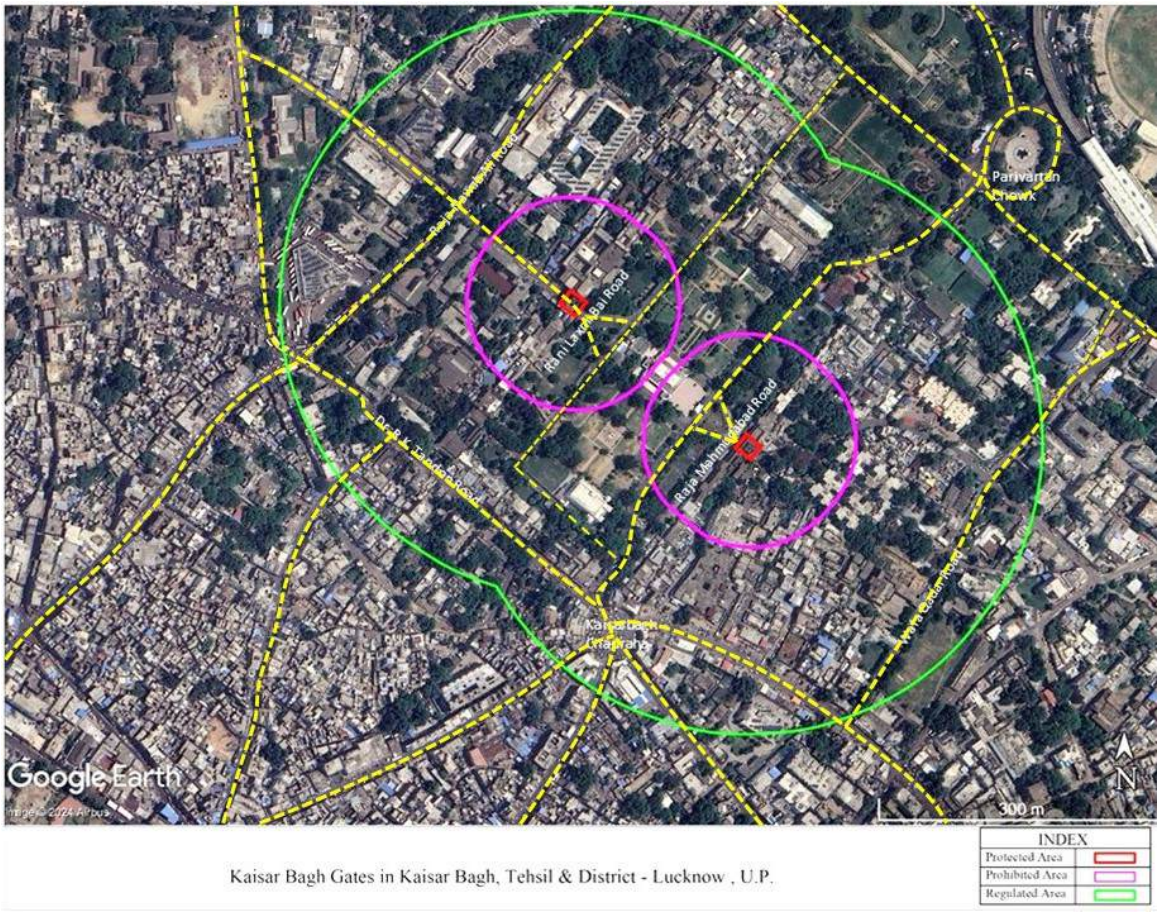

Figure 1: Satelite Image showing the location and setting of the Kaisarbagh Gates, Lucknow

The strategic location of the monuments is historically significant as they are an integral part of the entire historic Kaiserbagh Palace complex, built by the last Nawab of Awadh, Nawab Wajid Ali Shah in the early 19th century. In today's context, these protected monuments are surrounded by the remnants of the built fabric of the historic Kaiserbagh Palace complex, which exists in a fragmented state. The remnants include the tombs of Saadat Ali Khan and Mashir Zaidi, Safed Baradari, Mahmudabad House, Salempur House, Manekpur House, Amir-ud-daula library, Bhatkhande Music Institute and many more.

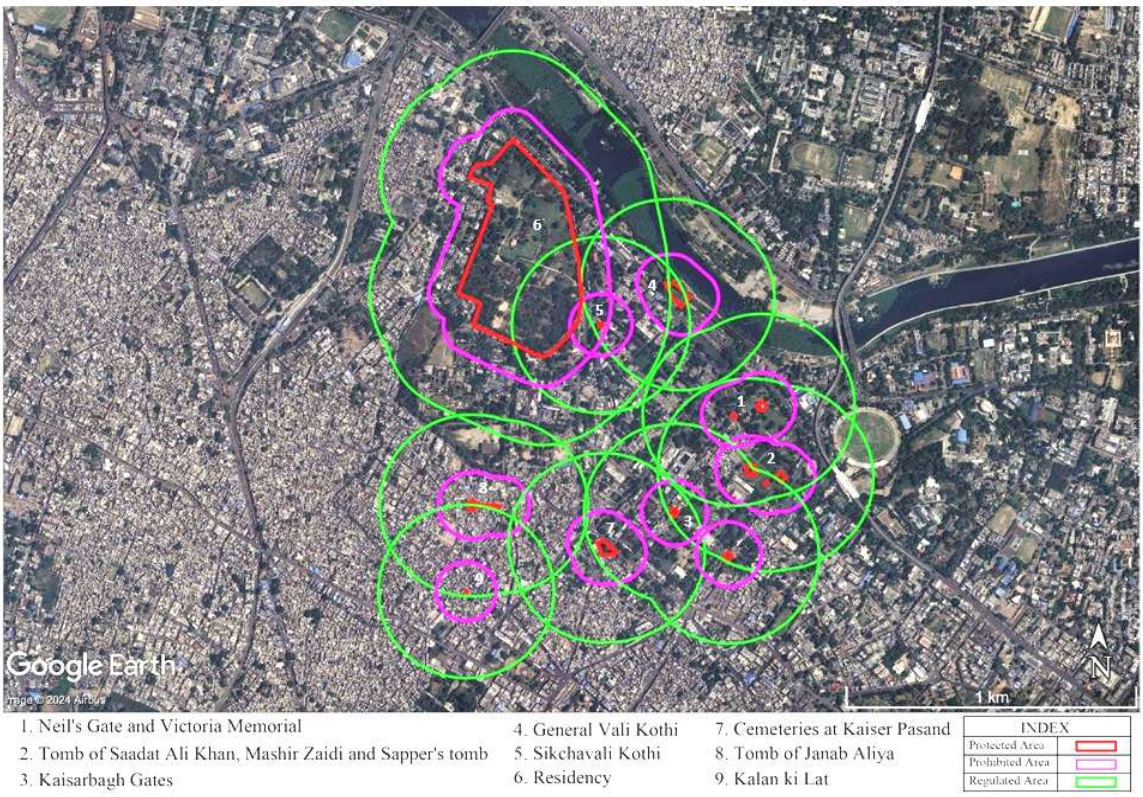

Figure 2: Staelite Image showing the cluster formed by the protected monuments in close vicinity

The monument of Kaisarbagh gates is located in close vicinity with several other Protected Monuments of Kaisarbagh Heritage Zone, hence, the Prohibited and Regulated boundaries of Kaisarbagh Gates overlap with the buffer zones of Tomb of Sadat Ali Khan and Mashir Zaidi in the north-east and the Cemetery near Kaiser Pasand on its south-west, which further overlap with the buffer zones of other Protected Monuments.

Additionally, the area today is a prominent part of the city center with contemporary/modern constructions infused within the historical setting in the form of residential, commercial, recreational, cultural, administration, and transportation-related structures. The nearest railway station from the monument site is Lucknow Junction, situated at a distance of 3.9 kms and the nearest airport is Chaudhary Charan Singh International Airport, at a distance of 12.5 kms.

3.2 Protected boundary of the Monument:

The boundaries of the Protected Monument – **Kaisarbagh Gates**, Lucknow may be seen in **Annexure-I.**

3.2.1 Notification Map/ Plan as per ASI records:

Gazette Notification of the **Kaisarbagh Gates**, Lucknow may be seen in **Annexure-II**.

3.3 History of the Monument:

Wajid Ali Shah, the last ruler of Awadh built Kaisarbagh during the time period of 1848-50. The cost of construction is said to be more than Rs. 80 lakhs.[1] The complex consisted of a walled enclosure with four gates along with series of independent structures and pavilions.

The central concept behind the architecture of the Kaisarbagh Palace came from the idea of a paradise garden, a Persian concept, popularized in India by the Mughals. The Nawabs of Awadh continued this practice of constructing gardens with water fountains, orchards and flower trees. Paintings and photographs dating prior to 1857 indicate that the main quadrangle, which was the heart of the Kaisarbagh Palace had an elaborate and well maintained *char-bagh* garden[2]. Adorned with the Baradari at its center, most part of this garden is still intact today by the name of Butler Park and Gulab Vatika (Raja Rampal Sing Park). Not much of the original footprint of Kaisarbagh remains. The two gates known as *Lakhi Darwaza* and *Chaulakhi Darwaza* are few of the remaining structures.

The tomb garden of Saadat Ali Khan and his wife Mashir Zaidi is also an important testament to the historic concept of royal tomb gardens dating back to the times of the Nawabs.

With the annexation of Awadh in February, 1856 and Nawab Wajid Ali Shah exiled to Calcutta soon after, the court of Awadh passed in the hands of his son Prince Birjis Qadr with Begum Hazrat Mahal as the guardian. The Begum fortified Kaisarbagh and bravely fought the British from May, 1857 to March 1858 against the British. After the recapture of the city by the British, they strategically demolished all the structures which were the strongholds of Indian freedom fighters during the first war of independence or sites which could potentially act as such strongholds in future agitations – which included palaces, forts, big kothis and even mosques and temples.

Thus judgement was taken over the fate of death of Kaisarbagh palace. Colonel Robert Napier of the Bengal Engineers was given the task of reshaping Lucknow. In his prepared document known as the Memorandum on the Military Occupation of the City of Lucknow**,** dated 26 March 1858, he proposed to open broad streets through the city and to demolish any enclosures not required for military purposes. Anything that came in the path of the proposed road was demolished. As a result, Kaisarbagh was slowly demolished and had wide streets passing through its main courtyards.

Archival images of the monument may be seen in **Annexure IV and V.**

3.4 Description of the Monument (architectural features, elements, materials etc.):

The plan of the gateways is identical with intricate polygonal design. The gateways have a vaulted passageway which is buttressed with two large semi-circular platforms which are flanked with small squared rooms and rectangular chambers. The western front has two

[1] *UP Tourism*
[2] *The Walled Palaces of Kaisarbagh by Anil Malhotra and Neeta Das. url: web.archive.org*

projections; one is rectangular and other is an octagon which forms a burj. The eastern front has small side gates with spiral staircases to ascent the upper level. The elevations of both gates have a large round headed arch with superimposed spandrels with fish motifs. The gateways facing the inner court have central arches with turrets, burj and arched opening. Both the gateways have semicircular balustrade stairways intersecting at the diagonals. The gateways have decorative bands, stucco, arabesques, raised circular panel, striped pilasters and *kanguras.* They were executed in variety of colors.

Archival images of the monument may be seen in **Annexure V.**

3.5 Current Status

3.5.1 Condition of the Monument - condition assessment

The maintenance and preservation of the Protected Monument is the exclusive domain of Archaeological Survey of India. The photographs depicting the present condition of the monument is appended in **Annexure VII**.

3.5.2 Daily footfalls and occasional gathering numbers

Since the Gates are not enclosed within a compound, vehicular traffic frequently passes from underneath both the gateways throughout the day. Very few visitors come to see the monument dedicatedly.

CHAPTER IV

Existing Zoning, if any, in the Local Area Development Plans

4.1 Existing Zoning:

I. As per the Lucknow Master Plan 2031, as outlined in section 8.11.11, the Lucknow development area has been divided into 31 Regulation Zones. The protected monuments of Kaisarbagh Gates, Lucknow falls under the Zone 08 of the Zonal Plan. These Regulation Zones are generally confined to the boundary of the main roads of the homogeneous area. The proposals for the detailed development plans of the individual regulation zones are yet to be prepared as per the Master Plan 2031. **(Refer Annexure III-b)**

II. As per the Lucknow Master Plan 2031, as outlined in section 8.11.9, there are three heritage zones specified in the Lucknow Maha Yojana – 2031:

(i) Hussainabad Complex
(ii) Kaiserbagh Complex
(iii) La- Martiniere Complex

The protected monuments – Kaisarbagh Gates, Lucknow falls under the Kaiserbagh Complex. **(Refer Annexure III-c)**

III. As per Lucknow Master Plan -2031, as outlined in section 8.11.10, there are three designated security zones:

(i) Vidhan Sabha Area
(ii) High Court Area
(iii) New High Court Area

Within these zones, the maximum permissible height is limited to 7 meters.

The protected monuments – Kaiserbagh Gates falls in the High Court Zone. **(Refer Annexure III-d)**

4.2 Existing Guidelines of the local bodies:

All the development control norms and building regulations specified in the Lucknow Master Plan 2031 and the Lucknow Development Authority: Building Construction and Development Bye-Laws, 2008 (as amended 2011, 2016, 2018) are applicable.

The Lucknow Development Authority: Building Construction and Development Bye-Laws, 2008 (as amended 2011, 2016, 2018), sub section – 3.1.9 (I) & (II) specifies that for the ancient monuments and archaeological sites and remains declared as of national importance under the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1958, no construction and development is allowed in a periphery of 100m (Prohibited Area) from the protected boundary of the archaeological monument/sites. In the area extending upto

200m (Regulated Area) further beyond the Prohibited Area, the permission for construction / development will be obtained from the Competent Authority.

Further, in the "**Lucknow Maha Yojana–2031**"; **subsection–8.11.9 (1) & (2)**, it is stated that, the relevant provisions of the Government of India will be applicable on ASI protected sites/monuments. While for other monuments some provisions are mentioned which are specified as:

Architectural Control:

Construction near the monuments, historical buildings, and along the main roads will need approval in context with their architectural/artistic perspectives.

Planning Control:

For Heritage Zones: There are three heritage zones specified in the "**Lucknow Maha Yojana – 2031**"

1. Hussainabad Complex
2. Kaisarbagh Complex
3. La- Martiniere Complex

a) No construction will be allowed under the distance of 50 meters from the premises of the monument/Heritage building.
b) From 50 meters to 150 meters, construction of only one storey residential buildings (maximum height 3.8m) will be permitted.
c) And, from 150 meters to 250 meters, construction of only two storied buildings (maximum height 7.6m) will be permitted.
d) The relevant provisions of Government of India shall be applicable on ancient monuments and archaeological sites and remains declared as of national importance under the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1958.

CHAPTER V

Information as per First Schedule, Rule 21(1)/ total station survey of the Prohibited and the Regulated Areas on the basis of boundaries defined in Archaeological Survey of India records.

5.1 Survey Plan of Kaisarbagh Gates, Lucknow

The Survey Plan of the Kaisarbagh Gates may be seen in **Annexure- I**.

5.2 Analysis of surveyed data:

5.2.1 Prohibited Area and Regulated Area details:

Kaisarbagh Gate (Eastern)

(i) Protected Area: 307.5610 sq.m. (0.076 Acres)
(ii) Prohibited Area: 38898.383 sq.m. (9.612 Acres)

Kaisarbagh Gate (Western)

(i) Protected Area: 307.5610 sq.m. (0.076 Acres)
(ii) Prohibited Area: 38898.383 sq.m. (9.612 Acres)

Regulated Area: 372209.619 sq.m. (91.975 Acres)
Total Area: 450621.509 sq.m. (111.351 Acres)

5.2.2 Description of built up area:

Prohibited area of East Gate of Kaisarbagh

Adjoining the Gate in the north-east and south-west, along the Maharaja Mahmudabad Road is the Balrampur International Hostel and Lajpat Rai Library respectively. To the east of the Gate is a temple, Gurudwara, a police chowki and a residential colony; Kaiserbagh Officer's Colony. Towards the south is China Bazaar and some portion of Indira Gandhi Eye Hospital. Towards west, small portion of Safed Baradari falls in the Prohibited Area.

Prohibited area of West Gate of Kaisarbagh

Adjoining the West Gate, in the north-east and south-west, along Rani Lakshmi Bai road are portions of the Mahmudabad House and Salempur House respectively. Some portions of DM Office and Nari Shiksha Niketan also fall in the Prohibited Area in north of the Gate. Towards the east, small portion of Safed Baradari fall in the Prohibited Area.

Regulated Area

The Regulated Areas of the East and the West Gate are overlapping (refer Annexure I). To the north-east of both the Prohibited Areas is the historic *marmari pul* in Butler

Park, Bhatkhande Music Institute and some portion of the campus of the Saadat Ali Khan tomb. Further in the north-east is the Oudh Gymkhana Club, Kala Mandapam Auditorium, parts of China Bazaar and Balrampur International Hostel other than few residences, VVIP Guest House and Family Court. Towards the east are residential colonies namely Panjabi Colony and Officer's Colony and some offices. In the south-east is a dense residential fabric and schools named Buds and Blossom School and Balika Vidya Niketan Inter College. In the south is the dense commercial fabric of Kaisarbagh market and Kaisarbagh Circle. In the south-west is the Raja Rampal Singh Park, Amir-ud-daula Library, Tiloi House and portions of the Salempur House. Further in south-west direction, along Dr. R.K. Tandon Road is a commercial belt along with the office of Police Commissionerate, Kaisarbagh Kotwali.

Towards the west in the Regulated Area of the West Gate is another heritage structure known as Kothi Roshan-ud-daula. Further in this direction, along the Raja Nawab Ali Marg there is a community health center of the Red Cross Society and Nari Shiksha Niketan PG College on one side and Kaisarbagh Bus Station and offices of Zila Panchayat and Nagar Nigam on the other. In the Regulated Area, to the north of the West Gate, continuing along Raja Nawab Ali Road are the offices of Revenue Department along with the DM Office and Telephone Exchange office.

5.2.3 Description of green/open spaces:

There are significant green open spaces in this part of the city, some designated parks and some part of large campuses of offices and other institutions. Some designated parks in the area are as follows:

Butler Park, also known as **Virangana Uda Devi Park** is located in between the East and West Gate in the north-east direction. This park is an integral part of the entire Kaisarbagh Palace complex. The integrity of Kaisarbagh Palace is intact in the form of existing physical evidence, among which the current day Butler Park is an integral physical attribute that helps define the wholeness of Kaisarbagh Palace. Butler Park also boasts of the historic sang-e-marmar pul which was part of the Kaisarbagh Palace complex. The park is maintained by Lucknow Development Authority and has a positive contribution to the overall value of the monuments in the vicinity.

Gulab Vatika, also known as **Raja Rampal Singh Park** is located in between the East and West Gate in the south-west direction. Like Butler Park, this green space used to be an integral part of the Kaisarbagh Palace complex and continues to be an important green space in the context of Kaisarbagh even in present context.

Tikona Park are two triangular parks opposite both the East Gate as well as the West Gate of Kaisarbagh. The tikona parks are also remnants of the erstwhile Kaisarbagh Palace complex as they can be clearly seen in archival maps and photographs of the area. Both the tikona parks, in front of East and West Gates form traffic islands amidst the heavy vehicular movement in this area. Adjacent to the Tikona parks, the Rani

Laxmi Bai Road and Maharaja Mahmudabad Road are flanked by vast expanse of gardens as part of the private residences and other structures facing the roads.

Premises encompassing the Protected Monuments of **Tomb of Sadat Ali Khan, Mashir Zaidi and Sapper's Tomb** is also a significant garden space contributing to the character of the Kaisarbagh area.

Other Green and open spaces are situated inside State and central government office complexes, institutional campuses, commercial complexes, police station, Guest house.

5.2.4 Area covered under circulation - roads, footpaths etc.:

Two major roads namely, Maharaja Mahmudabad Road and Rani Laxmi Bai Road connect the Kaisarbagh Complex with the Kaisarbagh circle (*chauraha*) which connects with 6 major roads including Nazirabad Road, Latouche Road, Cantonment Road and B.N Road in the south-west and other major city roads such as Parivartan Chowk along with Mahatama Gandhi Road, Rana Pratap Marg and University Road in the north-east. Other major roads in the Prohibited and Regulated areas are Raja Nawab Ali Road, Telephone Exchange Road and Chakbast Road in the north, Jagat Narain Road in the west and Wala Qadar Road in the east and south-east.

5.2.5 Existing Heights of buildings:

North-West: Predominantly Government offices, Institutions and Residential buildings ranging from G to G+1 floor structures having the maximum height being approximately 11m in the Prohibited and Regulated Area.
South-East: Majorly office, institutional, commercial and residential building complexes, ranging from G to G+6 floors, the maximum height being approximately 22 m.
South-West: Commercial and residential buildings of G, G+1 and G+2 having height of about 11m in the Regulated Area.
North-East: There are other commercial buildings, public building and residences of G, G+1 and G+2 having maximum height of about 11m in the Regulated Area.

5.2.6 State protected monuments and listed Heritage Buildings by local Authorities, if available, within the Prohibited/Regulated Area:

The area Kaiserbagh being a historically significant part of the city is surrounded by several heritage structures, both protected and unprotected. **(refer Annexure VII)**

Kothi Roshan-ud-daula, an important heritage structure, now under the protection of the State Archaeology. The kothi was built by Roshan-ud-daula, the minister to king Nasir-ud-din Haider in the year 1832 CE. Later the kothi was converted into District Election office.

Other Protected Monuments namely **Tomb of Saadat Ali Khan, tomb of Mashir Zaidi and Sapper's tomb** fall in the Regulated Area in the north-east direction.

Other heritage structures in the vicinity are: Safed Baradari, Amir-ud-daula public library, Salempur House, Mahmudabad House, Chaulakhi Kothi, Kotwara House, etc.

5.2.7 Public Amenities:

There are no public amenities around the monument like toilets or dustbins which often causes unhygienic conditions and littering of the monument. A tourist spot has been created in close vicinity to the monument which also has few benches for the visitors.

5.2.8 Access to the Monument:

Both the East as well as the West Gate are prominent landmarks in the city and equally easily accessible by private as well as public transport. The East Gate or Lakhi Gate and the West Gate are accessed by the approximately 9m wide Raja Mahmudabad Road and Rani Laxmi Bai Road respectively.

5.2.9 Infrastructure services (water supply, storm water drainage, sewage, solid waste management, parking etc.):

There is no designated space for parking in this area and since the area is densely built, there is unorganized parking seen along the roads and tikona parks in front of the gates. In close vicinity to the monument, near Parivartan Chowk is the overhead metro line.

Facilities of water supply, storm water drainage, sewage, etc is available in the protected, prohibited and regulated areas of the monument but needs to be upgraded.

5.2.10 Proposed zoning of the area as per guidelines of the Local Bodies:

I. According to the Lucknow Maha Yojana (Master Plan) – 2031, the sites of Kaisarbagh Gates fall in the Kaiserbagh Heritage Zone. (**Annexure III – c**)

II. The sites of the Kaisarbagh Gates fall under **Zone 8** of the Zonal Plan. **(Annexure III-b)** Detailed Zonal Plans are not yet prepared by the Authority.

The Prohibited and Regulated Areas of Kaisarbagh Gates overlap with the Prohibited and Regulated Areas of other protected monuments like Tomb of Saadat Ali Khan, tomb of Mashir Zaidi and Sapper's Tomb and Kaisar Pasand cemetery.

CHAPTER VI

Architectural, Historical and Archaeological Value of the Monument

6.1 Architectural, historical and archaeological value:

The **Kaisarbagh Gates** are part of the ensemble of monuments which together form the large historic complex of Kaisarbagh. It holds immense value in terms of history, architecture, landscape, culture and social aspects, contributing significantly to the overall integrity of the Kaisarbagh complex.

These gates served as the entrances into the erstwhile Kaisarbagh Palace complex which was built by the last Nawab of Awadh, Wajid Ali Shah in 1848-1850. The architectural value of the monuments lies in its meticulous design, materials used, incorporation of distinctive decorative elements, and adherence to cultural norms, all of which contribute to its significance as a historical and cultural landmark. Kaisarbagh holds high architectural value as it represents the last phase of Nawabi Architecture, especially garden palace architecture. The gateways built in Lakhori bricks and bearing the insignia of Awadh, symbolized by two fish are embellished on the Gateway, as a constant reminder of the glorious history of the city and its patrons. It is believed that these two royal gates were built with a cost of Rupees one lakh, hence giving them the name of Lakhi Darwaza.

The fragmented remains of the Kaisarbagh complex bear high historical value, not only as a testament of the last and the most extravagant palace of Awadh but also as a reminder of the British annexation of Awadh where they demolished all the major strongholds of the Indian soldiers during the first war of independence, Kiasarbagh Palace being one of the most prominent ones under the able leadership of Begum Hazrat Mahal, the begum of Wajid Ali Shah. These remnants are a constant reminder of the end of an era, and the beginning of the British rule in Lucknow.

Gradually with time, the British introduced some major changes in the original spatial layout and landscape of Kaisarbagh. Some major roads were introduced through the courtyards of the complex and usages of old Nawabi kothis were changed into Government institutions. The landscape value of the remains of the palace complex is an embodiment of the region's rich history, blending Mughal architecture marvels with the distinct Nawabi culture that once flourished in the Lucknow city. It serves as a reminder of the contributions of the Nawabs and their patronage of the arts, literature, and architecture, which continue to inspire and captivate visitors from around the country. In present day context, the gates stand as a cherished heritage site and a major city landmark, still serving as an entrance into the historic landscape of the erstwhile Kaisarbagh Complex.

6.2 Sensitivity of the monument (e.g. developmental pressure, urbanization, population pressure, etc.):

The area of Kaisarbagh is not only historically significant but is also one of the main city centers of Lucknow which makes it highly vulnerable to the ever growing developmental and

urbanization pressure, especially in a city like Lucknow which is also the state capital.

Since the Gates are still used as gateways for pedestrian as well as vehicular movement, the impact of heavy vehicles on roads abutting the monuments may pose a threat to the structural integrity of the monuments, especially the Kaisarbagh Gates. Encroachment in some parts of the Gates by private residences is another threat to the monument.

The Prohibited and Regulated Area surrounding the Gates include remnants of the Kaisarbagh Palace complex which contribute to the overall values and significance of the area. Many of these structures do not fall under the protection of ASI or department of State Archaeology, hence, due to the absence of regulations for unprotected heritage at the city/district level, there has been a gradual loss of character in several significant unprotected heritage structures, a trend likely to escalate with increasing development pressure.

Kaisarbagh chauraha being one of the densest commercial hubs of the city also bears a strong heritage character which is in poor condition but is largely preserved, however in some cases like Anand Cinema, the façade has been changed to contemporary materials which not only makes it an eyesore and also breaks the visual harmony with the overall setting of that area. (refer Image 7.13 in Annexure VII)

Other high rise constructions, mostly in form of hotels and apartments like Hotel Maple Leaf, Gemini Continental and other eateries around Press Club break the skyline the area with their towering appearance.

6.3 Visibility from the protected monument or area and visibility from Regulated Area:

The Kaisarbagh Gates are clearly visible from the Prohibited Areas in the south, south-west and south-east. The skyline from the monument in the south-east to south-west has changed significantly over the years, as visible when compared from archival photographs, however, has fairly maintained the historic character. On the north-east direction from the monument, the vast expanse backdrop has been compromised due to the construction of few residential buildings.

6.4 Land-use to be identified:

According to the Lucknow Master Plan 2031, land-use of the Kaisarbagh gates buildings falls under 'Residential' (*avasiya*) category. To the south of the East Gate, enclosed by B.N Road in the south and Maharaja Mahmudabad Road in the north also falls under the category of 'Residential'. The pocket of land enclosed between Maharaja Mahmudabad Road to the south and Rani Laxmi Bai Road in the north is designated as 'Parks and Open Spaces' (*park evam khule sthal*). The land-use of Bhatkhande Music Institute is categorized as 'General Educational Institution' *(samanya shaikshik sansthayen).* Further north, beyond Telephone Exchange Road till the road leading upto Residency is categorized as 'Office buildings' (*karyalaya*). Around the Kaisarbagh chauraha, land enclosed between latouche road and Nazirabad Road falls under the category of Central Commercial Zone (*kendriya vanijyik*

kshetra). The land enclosed by Latouche road in the west and B.N Road in the east is categorized as Developed Area (*nirmit kshetra*). **(Refer Annexure III-e)**

6.5 Archaeological heritage remains other than the protected monument:

There are no other known or visible archaeological heritage remains as of now in the close vicinity of the monuments. The site of Kaisarbagh Palace was demolished during the first war of independence and only remains in fragments today. It requires further archaeological investigation to ascertain if there are any other buried remains around the complex.

6.6 Cultural Landscapes:

The protected monuments are part of a larger cultural landscape consisting of several historical monuments built by the Nawabs of Awadh. Over the course of history, various rulers have contributed to this landscape by constructing and demolishing structures that reflected their architectural preferences. Situated in close proximity to the Gomti River, the complex has accrued layers of historical significance, each layer bearing witness to the multifaceted challenges—cultural, social, political, and developmental—that have molded it over the centuries.

In the present context, it is essential to recognize the evolving nature of the Kaiserbagh Palace Complex as a cultural landscape. It holds symbolic meaning for the communities that inhabit or visit it. The complex serves as a cultural hub, hosting institutions such as the Bhatkhande Music Institute and the Kathak Sansthan, which are nationally renowned and the Safed Baradari in the prohibited area serves as a hub for diverse cultural activities throughout the year.

6.7 Significant natural landscapes that forms part of cultural landscape and also helps in protecting monument from environmental pollution:

The central concept behind the architecture of the Kaisarbagh Palace came from the idea of a paradise garden, a Persian concept, popularized in India by the Mughals. The Nawabs of Awadh continued this practice of constructing gardens with water fountains, orchards and flower trees. Paintings and photographs dating prior to 1857 indicate that the main quadrangle, which was the heart of the Kaisarbagh Palace had an elaborate and well maintained *char-bagh* garden[3]. Adorned with the Baradari at its center, most part of this garden is still intact today by the name of Butler Park and Gulab Vatika (Raja Rampal Sing Park). The tomb garden of Saadat Ali Khan and his wife Mashir Zaidi is also an important testament to the historic concept of royal tomb gardens dating back to the times of the Nawabs.

For detail of other green spaces in the vicinity, refer point 5.2.3 (Description of green/open spaces)

[3] *The Walled Palaces of Kaisarbagh by Anil Malhotra and Neeta Das. url: web.archive.org*

6.8 Usage of open space and constructions:

There are several green and open pockets around the monument in the vicinity which must be maintained as open spaces in the future proposals and plans to maintain the context and setting of these monuments. These spaces serve as venues for a variety of activities, ranging from daily morning walks to small-scale political meetings, protests, cultural events, exhibitions, school picnics, heritage walks and other cultural activities.

6.9 Traditional, historical and cultural activities:

This area of Kaisarbagh may be referred as the cultural center of the city. With the Safed Baradari in the prohibited area serving as a hub for diverse cultural activities throughout the year, including exhibitions, cultural performances, etc. The Rashtriya Kathak Sansthan and Bhatkhande Music Institute along with Rai Umanath Bali Auditorium, are important centers in nurturing and showcasing the legacy of performing arts Lucknow.

Another important intangible cultural facet in this area is the food, with some major and prominent food joints, famous for authentic Lucknow cuisine are also located in close proximity.

It is also an important tourist attraction with Uttar Pradesh Tourism and several other private entities organizing frequent heritage walks in the entire area. Twelve out of the eighteen stops in the Kaisarbagh heritage walk route, as published by the Uttar Pradesh Tourism, are located within the Regulated Area.

6.10 Skyline as visible from the monument and from Regulated Areas:

The skyline as viewed from the monument towards the Safed Baradari and Tomb of Sadat Ali Khan shows an urban skyline dotted with historical landmarks. **Annexure IV** shows comparative images of the skyline through archival and present photos.

6.11 Traditional architecture:

Historically, the buildings surrounding three sides of the Kaisarbagh quadrangle served as residential accommodations for females. Positioned at the center of this quadrangle is the Safed Baradari, with the remaining side featuring the Pari Khana.

In present day context, the architecture along quadrangle exists in the form of Raja Mehmudabad Palace, Raja Salempur house, Tiloi house, Mankapur house, Kotwara house, Masiba house (lala Lajpat Rai Library) and Prayagpur house (Balrampur International hostel) and the Bhatkhande Music Institute. Safed Baradari in the center of the quadrangle is also a heritage structure alongwith the Amiru-ud-daula Public Library, also part of the complex.

Other structures within the regulated area that exhibit traditional architecture include the Deputy General Manager's office in the Kaisarbagh Telephone Exchange and the Gol Darwaza or Sadar Darwaza. **(Refer Annexure VI)**

6.12 Developmental plan as available by the local authorities

It may be seen at **Annexure III (b)**. Detailed Zonal Development Plans of the individual regulation zones are yet to be prepared by the Authorities.

6.13 Permissible Building Related Parameters:

The monuments - Kaisarbagh Gates (East and West) are located in close vicinity of other Protected Monuments namely Tomb of Saadat Ali Khan, Tomb of Mashir Zaidi, and Sapper's Tomb, Victoria Memorial, Neil's Gate, General Wali Kothi, Sikchawali Kothi and Cemeteries near Kaiser Pasand. Hence, the Prohibited and Regulated area of Kaisarbagh Gates overlap with the Prohibited and Regulated area of above mentioned monuments. The bye-laws of all these protected monument should therefore be read in conjunction with one another. In the event of a site of construction simultaneously falling in the prohibited area of one monument and the Regulated area of another monument, the site of construction shall be deemed to be falling in the Prohibited area alone and the building related parameter shall be applicable accordingly. Further, if a site of construction falls in the Regulated area of two separate monuments, the likely adverse impact on account of the proposed construction on the monument which is closer to the site of construction, shall be given precedence.

All the development control norms and building regulations specified in the Lucknow Master Plan 2031 and the Lucknow Development Authority: Building Construction and Development Bye-Laws, 2008 (as amended 2011, 2016, 2018) as and when amended shall be applicable, however, the height and other parameters specified in this document shall be applicable in the Regulated Area of the monument.

6.13.1 Repair and Renovation (in Prohibited and Regulated area):

Internal changes and adaptive reuse may be generally permitted. However, external changes shall be subject to detailed scrutiny by the Competent Authority. Such changes which include retrofitting/renovation may be permitted when the building is structurally weak or unsafe or when it has been adversely impacted by any natural calamity and renovation is absolutely necessary. Original building vocabulary and layout along with built-open relationships are to be adhered to. General repair and upkeep of buildings will be permissible, subject to prior permission from the Competent Authority.

The repair and renovation in building/structures should be sympathetic and congruous with the heritage character of the protected monument and its surrounding areas. New cladding materials like Aluminium Composite Panels (ACP), High Pressure Laminates (HPL), laminates, tiling or glazing will not be permitted. Use of locally available building material should be encourafe in carrying out repair and renovation works.

6.13.2 Reconstruction:

Reconstruction is defined in Section 2(k) of AMASR Act, 1958. Permission for reconstruction in Regulated Area is accorded as per Section 20 C (2) of the AMASR Act, 1958 and Rule 6(IV) and Rule 7 AMASR (Framing of heritage Bye-laws and other functions of the Competent Authority) Rules, 2011. In case of any type of building or structure located in the

prohibited or Regulated area of the protected monument or protected area, collapsed or damaged and found beyond repair due to natural calamities, the permission for reconstruction is accorded as per Rule 16 AMASR (Framing of heritage Bye-laws and other functions of the Competent Authority) Rules, 2011. The new structure or building as a replacement to the older building in case of reconstruction shall follow the same horizontal and vertical limits as per the pre-existing structure. The use of incongruous materials in the façade such as glazing, metal cladding, Aluminium Composite Panels (ACP), High Pressure Laminates (HPL), tiles, laminates will not be permissible. The new structure should be sympathetic and congruous with the heritage character of the protected monuments and its surrounding area.

6.13.3 New Construction:

6.13.3.A Prohibited Area:

As per Section 20A(4) of AMASR Act, 1958, no new construction including carrying out any public work or project essential to the public or other construction, shall be permitted within the Prohibited Area of the protected monument.

6.13.3.B Regulated Area:

All the development control norms and building regulations specified in the Lucknow Master Plan 2031 and the Lucknow Development Authority: Building Construction and Development Bye-Laws, 2008 (as amended 2011, 2016, and 2018) as and when amended shall be applicable, however, the height and other parameters specified in this document shall be applicable in the Regulated Area of the monument.

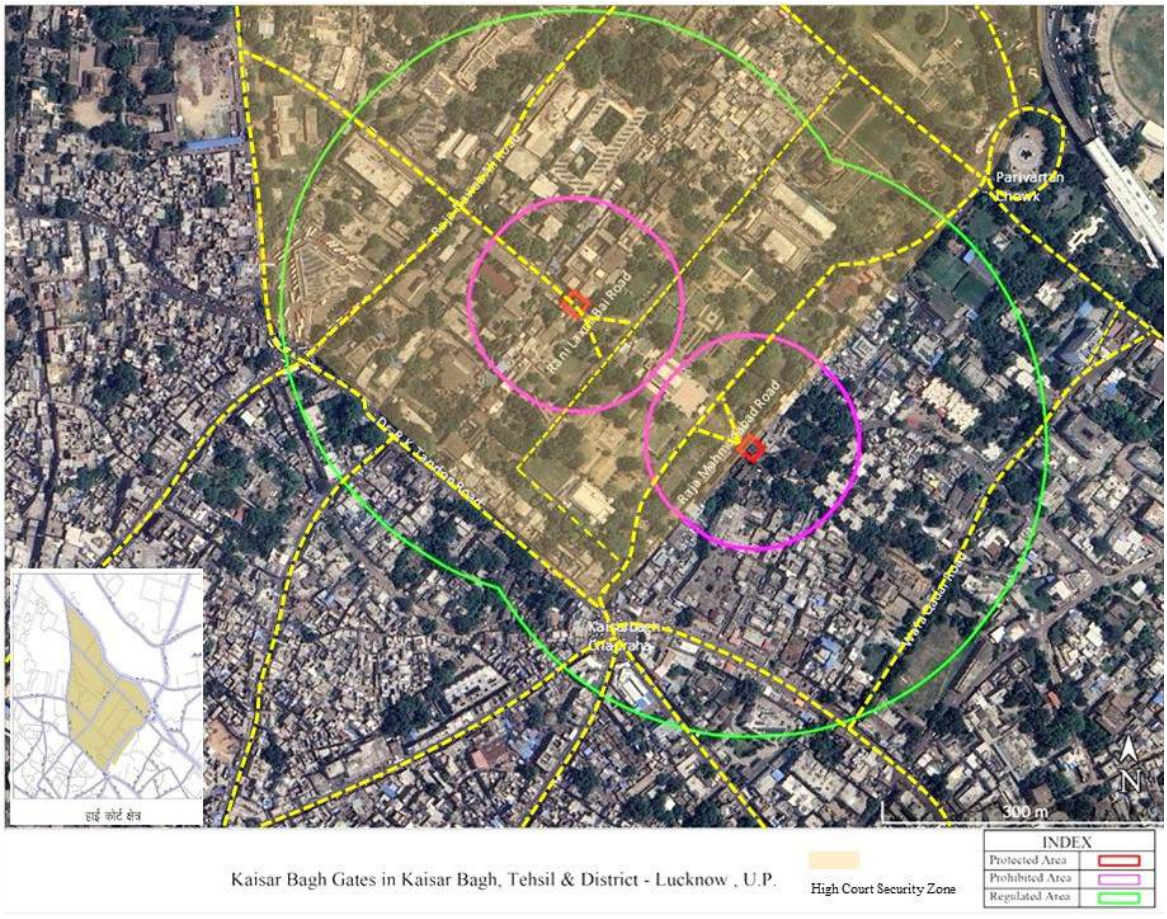

Kaisar Bagh Gates in Kaisar Bagh, Tehsil & District - Lucknow , U.P.

1. **Height of the new construction on the site (including mumty, parapet, water storage tank, machine room, HVAC unit, solar panel, rain water harvesting system, penthouse structures of terrace garden etc.) or any other services on the roof:**

   i. Regulated Area falling in the High Court Security Zone: The maximum height limit for new construction or additions/alteration to existing buildings shall not exceed **7.50 m** (including mumty, parapet, water storage tank, machine room, generator room, HVAC unit, solar panel, rainwater harvesting system, penthouse structures of terrace garden etc.) or any other services on the roof.

   ii. Regulated Area falling outside the High Court Security Zone: The maximum height limit for new construction or additions/alteration to existing buildings shall not exceed **12.50 m** (including mumty, parapet, water storage tank, machine room, generator room, HVAC unit, solar panel, rainwater harvesting system, penthouse structures of terrace garden etc.) or any other services on the roof.

Construction of the basement may not be permitted to mitigate any adverse impact on the structural, safety of the protected monument.

2. **Usage:**

   In accordance with the Lucknow Master Plan 2031, there should be no change in the land-use to maintain the current setting and surrounding of the area.

   i. The heritage buildings (listed in **Annexure VI**) should retain their usage and character (footprint and façade) in the future. **No external additions in the heritage structure, horizontal or vertical shall be permitted.**

   ii. Open spaces identified as 'Parks and Open Spaces' in the Masterplan 2031 shall be retained and maintained with no further addition of memorial sculptures, mannequins or any such structures.

3. **Façade Design:**

   i. The façade design of new construction should be minimalistic in nature, so that it does not overpower the monument and the overall heritage character of the surrounding.

   ii. The façades of heritage structures (listed in **Annexure VI**) to be restored under the supervision of a Conservation Architect and maintained in the future.

4. **Roof Design:**

   i. Flat roof design is to be followed in all the buildings.

ii. Erection of Structures, even of temporary nature, using materials such as aluminum, fibre glass, polycarbonate or similar materials should be discouraged on the roof of the building.

iii. All services such as large air conditioning units, rooftop water storage tanks or large generator sets placed on the roof to be screened off using screen walls (brick/cements sheets, louvers, jaalis or other such design elements). All of these services should be included in the maximum permissible height.

5. Building Material:

Modern construction materials may be used but the external façade should not be clad with materials like ACP, HPL, laminates, tiling and façade glazing should be discouraged.

6. Colour:

i. The exterior colour should be of neutral tone in harmony with the protected monuments such as white, beige, grey, brown and other earthy colours which do not create a harsh contrast with the protected monument and its immediate surroundings.

ii. The exterior colour of all heritage structures (listed in **Annexure VI**) to adhere to their original colour palette.

7. Other Regulations:

i. Proposal for construction of any large-scale public infrastructure project like Metro (underground or overhead), foot-over bridges, flyover, multi-level parking or any such project shall be subject to a detailed Heritage Impact Assessment report.

ii. Demolition and reconstruction of heritage structures (listed in **Annexure VI**) will be strictly prohibited.

6.14 Visitor facilities and amenities:

Visitor facilities and amenities such as proper illumination, provision for toilets and drinking water, interpretation centre and benches should be considered in the vicinity of the protected monument as per feasibility. The site may further be developed with adequate and comprehensive signage and interpretation including braille so that the visitors can be educated about the importance of the site.

All amenities should be appropriately placed so that they do not obstruct the view of the monuments or may be screened off by vegetation so that the view from the monuments is not marred.

CHAPTER VII

Site Specific Recommendations

7.1 Site Specific Recommendations:

i. All signage within the historic precinct should be compatible and harmonious with the special heritage character of the protected monument and its immediate surroundings.

ii. No advertisements in the form of hoardings, billboards and posters should be permitted near the protected monument, especially on the boundaries of the monuments.

iii. Dedicated parking for the visitors should be provided in close vicinity.

iv. Use of Eco-Friendly vehicles for movement in the vicinity of the protected monument may be encouraged to mitigate adverse impact on the monument due to vehicular emissions and vibration.

v. Construction of green buildings including best practices like rain water harvesting should be encouraged.

vi. Telecommunication towers should be discouraged in the vicinity (Prohibited and Regulated Area) of the protected monuments and relocation of the existing towers outside the Regulated Area is recommended.

vii. There should be underground cabling in the street facing the monuments after a mandatory archaeological impact assessment.

viii. The green cover around the monuments including old historic trees should be retained and maintained.

ix. LED or digital signs, plastic fibre glass or any other highly reflective synthetic material should not be used for signages in the vicinity of the protected monument or its immediate surrounding areas.

7.2 Other Recommendations:

i. It is recommended to conduct a comprehensive traffic assessment around protected monuments to identify high-risk areas and traffic patterns that may endanger the structural integrity of the monuments.

ii. It is recommended to incorporate heritage conservation principles into the **"Proposed comprehensive mobility plan for Lucknow"**. This integration aims to address the vulnerability posed by existing traffic movement around protected monuments. The approach should be multi-faceted, focusing on mitigating risks while enhancing conservation efforts.

iii. All monuments in the Kaiserbagh Heritage zone to be made more visible through heritage walks and appropriate contextually designed signage.

iv. The jurisdiction and the boundaries of the heritage zone may be integrated into the local area plan that is prepared and implemented by the Lucknow Development Authority as the local area plan provides a single window framework for implementation of regulations of the Master plan as well as heritage regulations. Layout plans with urban design guidelines may also be included at the local area plan level.

v. The zonal development plan for **Zone-08**, in conjunction with the **Kaiserbagh heritage zone** as delineated in the Lucknow master plan-2031, should be prepared by the concerned department as a priority (Phase-1), taking into consideration the restrictions laid out by the Heritage Bye Laws.

vi. Heritage structures (mentioned in **Annexure VI**) should be recognized and listed by the local Authorities.

vii. A Heritage Cell may be established by the local Municipal corporation to monitor the condition of the unprotected heritage structure (as mentioned in Annexure VI or any other) in the Kaisarbagh Heritage Zone.

viii. Provisions for differently abled persons should be provided as per prescribed standards.

ix. The area should be declared as Plastic and Polythene free zone.

x. Extensive publicity programmes may be conducted to increase public awareness about the historical and architectural significance of the Monument.

xi. More indigenous/local dense canopy of trees should be planted along the modern boundary of the protected monument to elevate the buffer from the existing urbanisation around the monument.

xii. National Disaster Management Guidelines for Cultural Heritage Sites and Precincts may be referred at https://nidm.gov.in/PDF/pubs/NDMA/20.pdf

अनुलग्नक
ANNEXURES

अनुलग्नक – I
ANNEXURE-I

कैसरबाग गेट्स लखनऊ, उत्तर प्रदेश की सर्वेक्षण योजना
Survey Plan of Kaisarbagh Gates –Lucknow, Uttar Pradesh

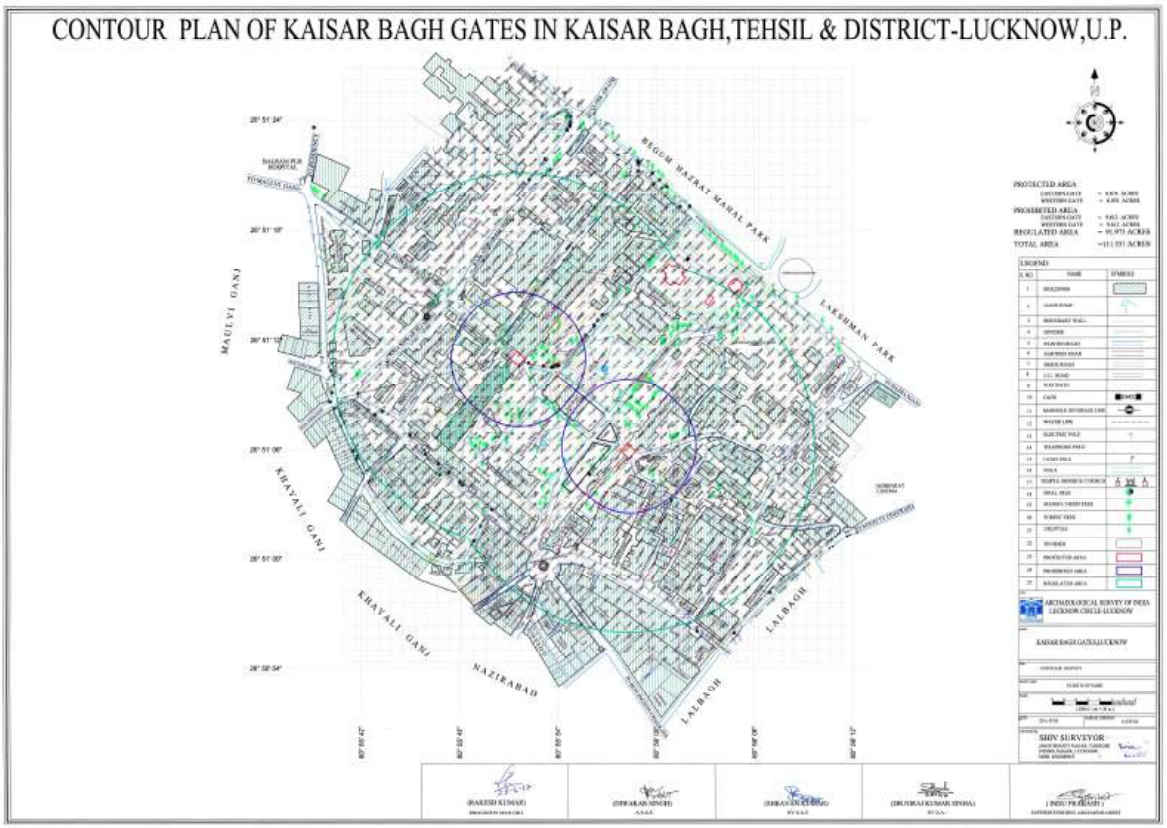

अनुलग्नक – II
ANNEXURE-II

कैसरबाग गेट्स लखनऊ, उत्तर प्रदेश की अधिसूचना
Notification of the Monument - Kaisarbagh Gates, Lucknow

22/12/1920

Government of United Provinces
Public Works Department
Buildings and Roads Branch

Dated Allahabad, the 22nd December. 1920

No. 1645-M/1133.- In exercise of the powers conferred by section 3, sub-section (3) of the Ancient Monuments Preservation Act (VII of 1904), His Honour the Lieutenant-Governor is hereby pleased to confirm this department notification no. 1412M, dated the 18th November, 1920, published at pages 1951-1955 of Part I of the United Provinces Gazette, dated the 20th November, 1920, so far as it relates to the undermentioned monuments and to direct that the protection of the remaining monuments is not confirmed as they are either already protected monuments or their protection is not considered necessary.

By order,

A.C. Verrieres,
Secretary to Government, United Provinces.

30 F-18

Sl. No.	Name of Monuments	Situation: District.	Situation: Locality.
26.	Two cemeteries	Lucknow	On the La Martiniare road.
27.	Cemetery	Do.	In Vilayati Bagh.
28.	Three tombs	Do.	In miles 3, 4 and 5, Lucknow-Fyzabad road.
29.	Tomb	Do.	In Musabagh
30.	Do	Do.	In Lotan Bagh.
31.	Cemetery	Do.	In Dilkusha.
32.	Kalan-ki-Lat and adjoining Cemetery	Do.	In Fakir Mohammad Khan ka Hata.
33.	Cemetery	Do.	At mile 13, Lucknow-Cawnpore road.
34.	Do.	Do.	Near Vilayati Bagh, Lucknow.
35.	Do.	Do.	Near Fort Machhi Bhawan.
36.	Cemeteries	Do.	Near Kaisar Pasand.
37.	Kaisarbagh Gates.	Do.	In Kaisarbagh.
38.	Chhota Chhattar Manzil	Do.	Lucknow city.
39.	Gulistan-Eram or Kothi Indrasan.	Do.	Ditto.
40.	Farhat Bakhsh Station Library	Do.	Ditto.
41.	General Wali Kothi	Do.	Ditto.
	Sikcha Wali Kothi	Do.	Ditto.
42	Imambara Amin-ud-Daulah	Do.	Ditto.
44.	Begam's Kothi	Do.	Ditto.
45.	Darshan Bilas Palace.	Do.	Ditto.
	The Buildings north-west of Dilkusha Palace.	Do.	Kilkusha.
	[illegible]rul Shafa	Do.	Lucknow city.
	[illegible]bara Ghulam [illegible]n Khan.	Do.	Ditto.
	[illegible] Kasul	Do.	Ditto.
	[illegible]ra Gallery [illegible]nabad [illegible]ari	Do.	Husainabad.

मूल अधिसूचना की टाइप की गई प्रति
Typed copy of Original Notification

22/12/1920

Government of United Provinces
Public Works Department
Buildings and Roads Branch

Dated Allahabad, the 22nd December, 1920

No. 1645-M/1133.- In exercise of the powers conferred by section 3, sub-section (3) of the Ancient Monuments Preservation Act (VII of 1904), His Honour the Lieutenant-Governorthe Governor is hereby pleased to confirm this department notification no. 1412M, dated the 18th November, 1920, published 20th November, 1920, so far as it relates to the undermentioned monuments and to direct that the protection of the remaining monuments is not confirmed as they are either already protected monuments or their protection is not considered necessary.

By order,

A.C. Verrieres,
Secretary to Government, United Provinces.

			Situation
S.No	**Name of Monuments**	**District.**	**Locality.**
26.	Two Cemeteries	Lucknow	On this In Martiniare road.
27.	Cemetery	Do.	In Vilayati Bagh
28.	Three tombs	Do.	In miles 3, 4 and 5, Lucknow-Fyzabad road.
29.	Tomb	Do.	In Musanbagh
30.	Do.	Do.	In Lotan Bagh
31.	Cemetery	Do.	At mile 13, Lucknow-Cawnpore road.
32	Kulan-Ki-Lnt and joining Cemetery	Do.	In Fakir mohammad Khan Ja Haka
33.	Cemetery	Do.	At mile 13, Lucknow- Cawnpore road.
34.	Do.	Do,	Near vilayati bagh Lucknow
35.	Do.	Do.	Near Fort Machhi Bhawan.
36.	Cemeteries	Do.	Near Kaisar Pasand.
37.	Kaisarbagh Gates.	Do.	In Kaisarbagh.
38.	Chhota Chhattar	Do.	Lucknow city.
39.	Gulistan-Eram or Kothi Indrasan	Do.	Ditto.
40.	Farhat Baksh Station Library	Do.	Ditto.
41.	General Wali Kothi	Do.	Ditto.
42.	Sikcha Wali Kothi	Do.	Ditto.
43.	Imambara Amin-ud-daula	Do.	Ditto.
44.	Begam's Kothi	Do.	Ditto.
45.	Darshan Biles Palace	Do.	Ditto.
46.	The Buildings north-west of Dilkusha Palace	Do.	Kilkusha

अनुलग्नक-III (क)
ANNEXURE-IIII (a)

लखनऊ महायोजना मानचित्र 2031
Lucknow Master Plan 2031

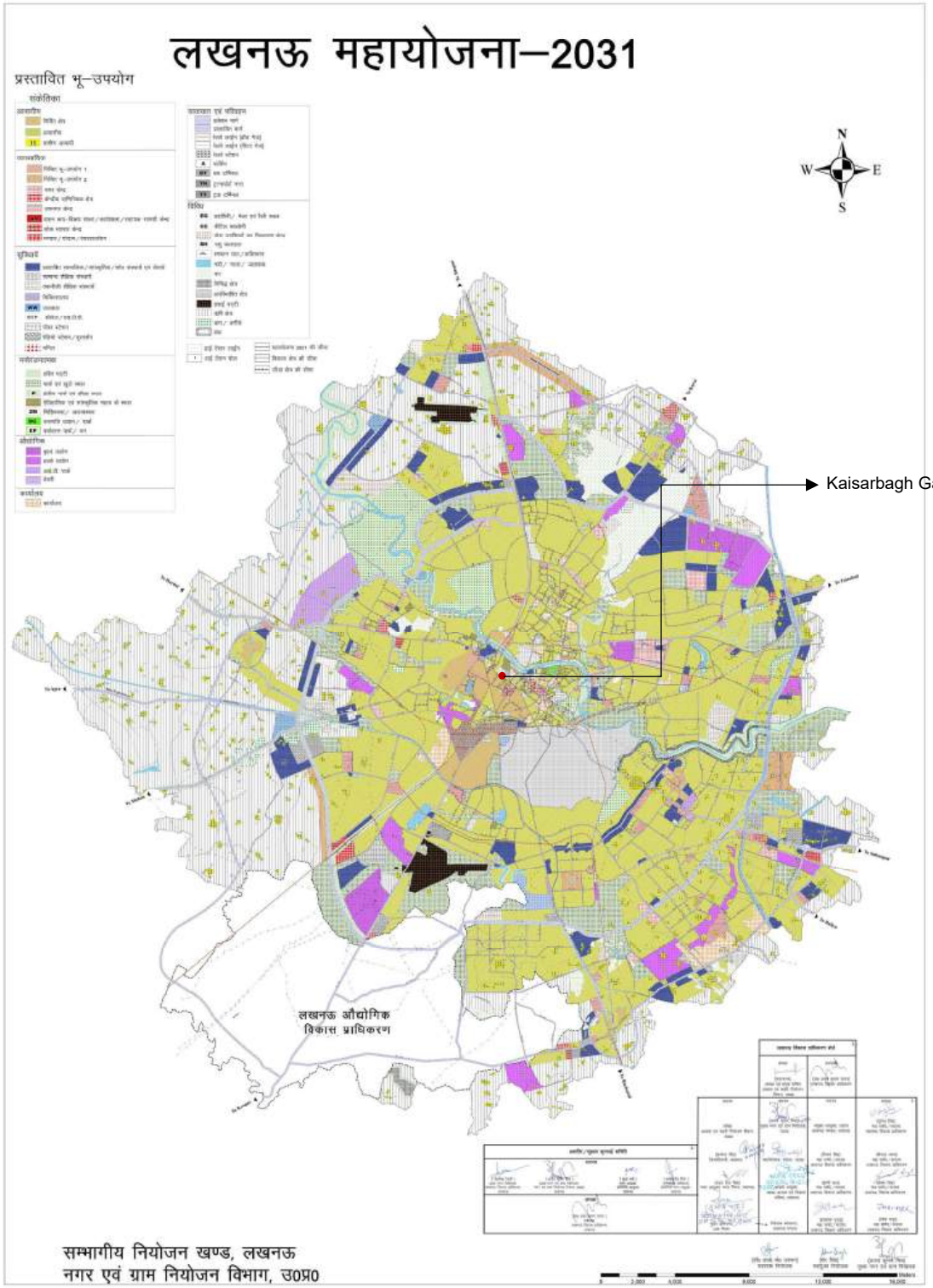

अनुलग्नक-III (ख)
ANNEXURE-III (b)

लखनऊ महायोजना 2031 – नियोजन खंड

Lucknow Master Plan 2031 – Regulation Zones

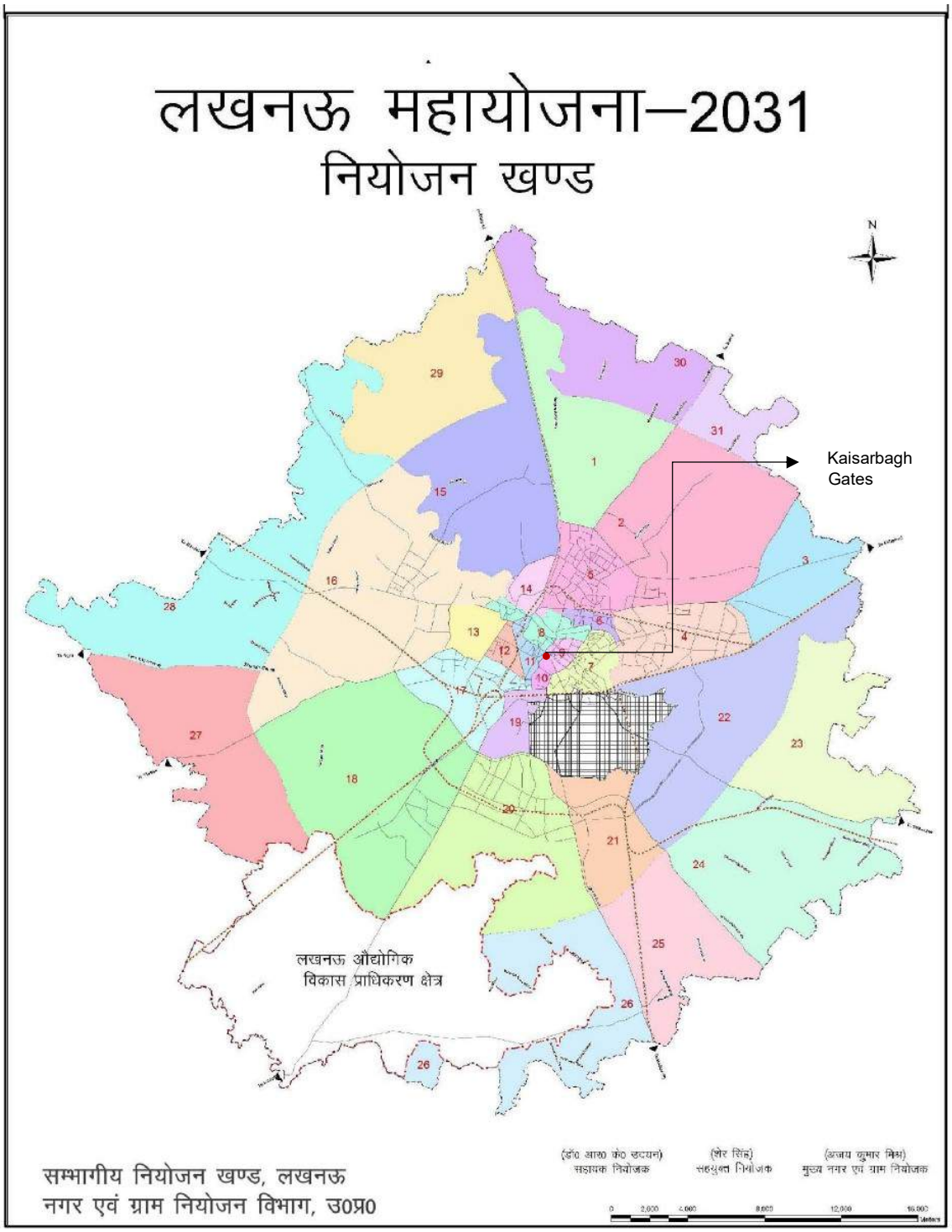

अनुलग्नक-III (ग)
ANNEXURE-III (c)

लखनऊ महायोजना 2031 - विरासत जोन्स
Lucknow Master Plan 2031 – Heritage Zones

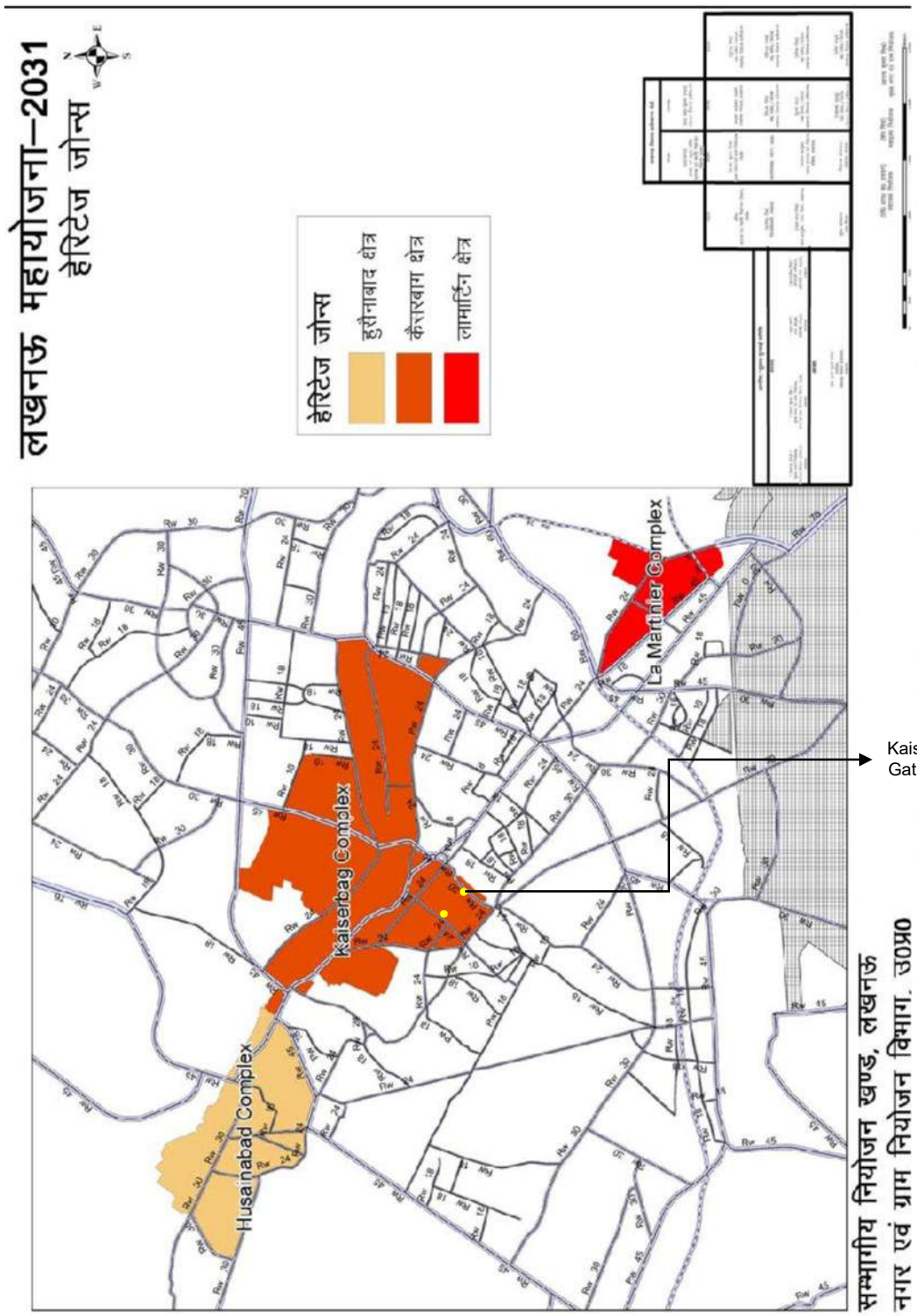

अनुलग्नक-III (घ)
ANNEXURE-III (d)

लखनऊ महायोजना 2031 – सुरक्षा जोन्स
Lucknow Master Plan 2031 – Security Zones

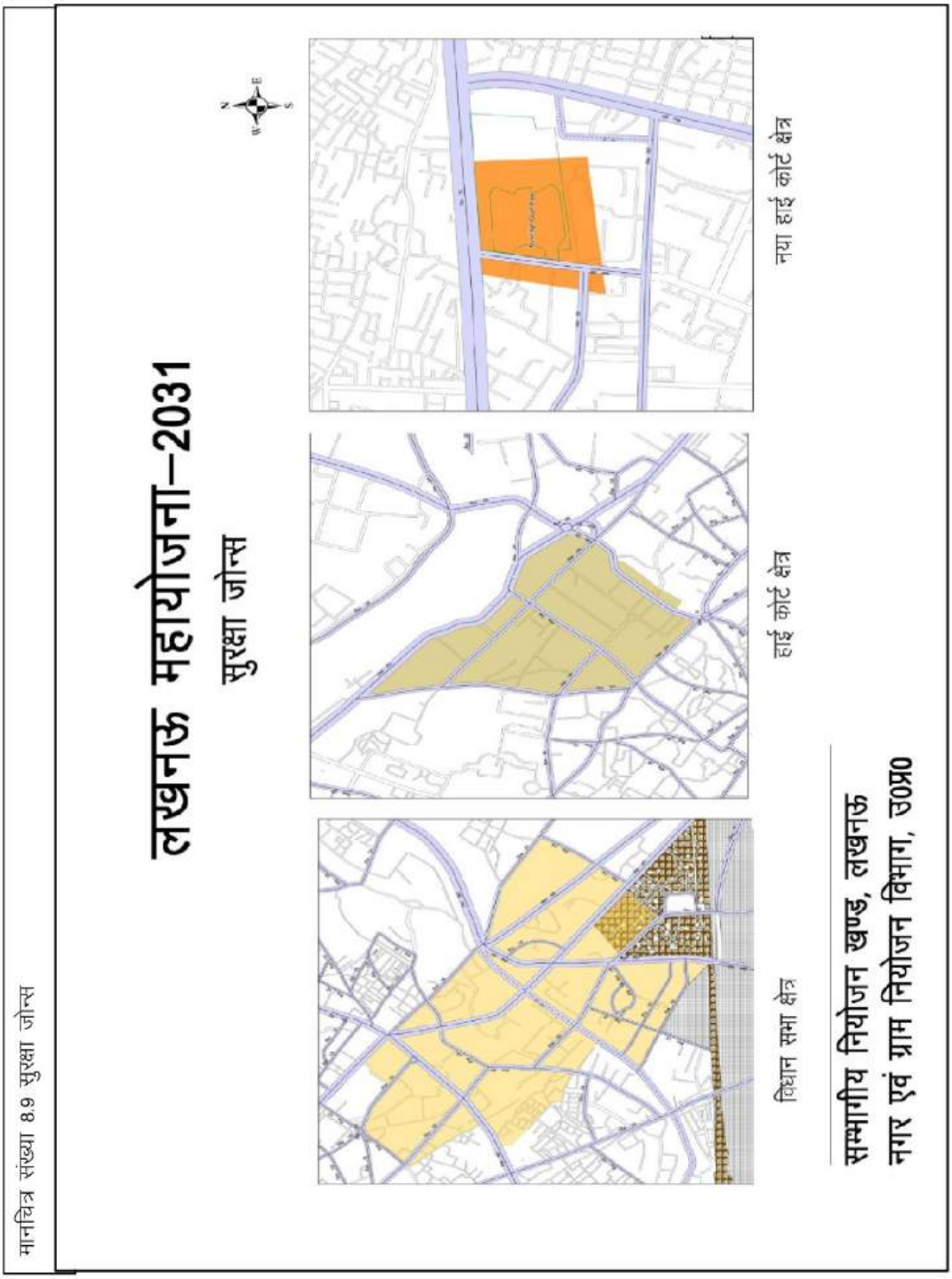

अनुलग्नक-III (ड़)

ANNEXURE-III (e)

लखनऊ महायोजना 2031 का भूमि- उपयोग मानचित्र
Land-use Map of Lucknow Master Plan 2031

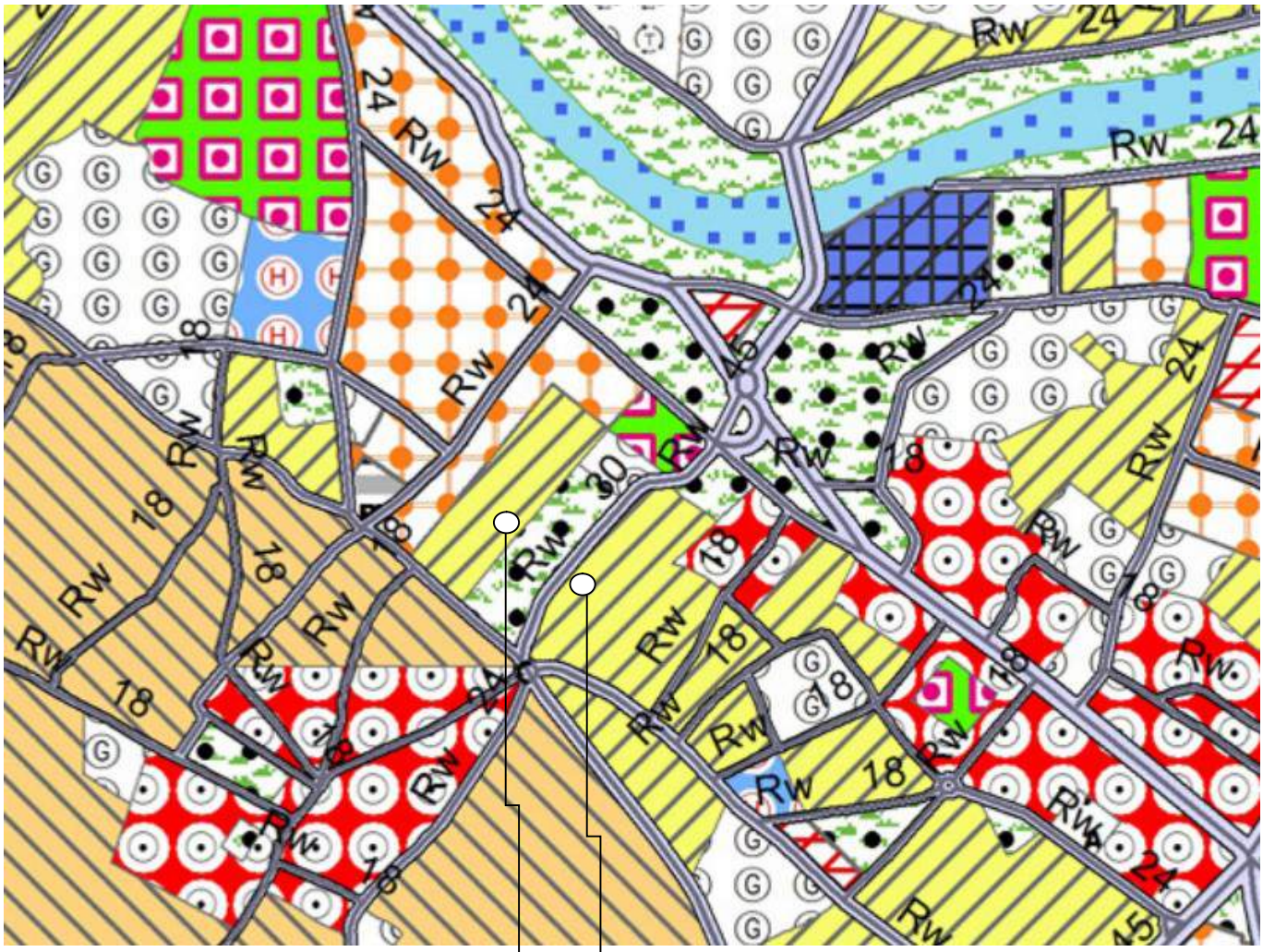

अनुलग्नक-IV
ANNEXURE-IV

विगत में और वर्तमान में संस्मारक की और से क्षैतिज के तुलनात्मक चित्र
Comparative Images of the skyline of and from the Monument in the Past and Present

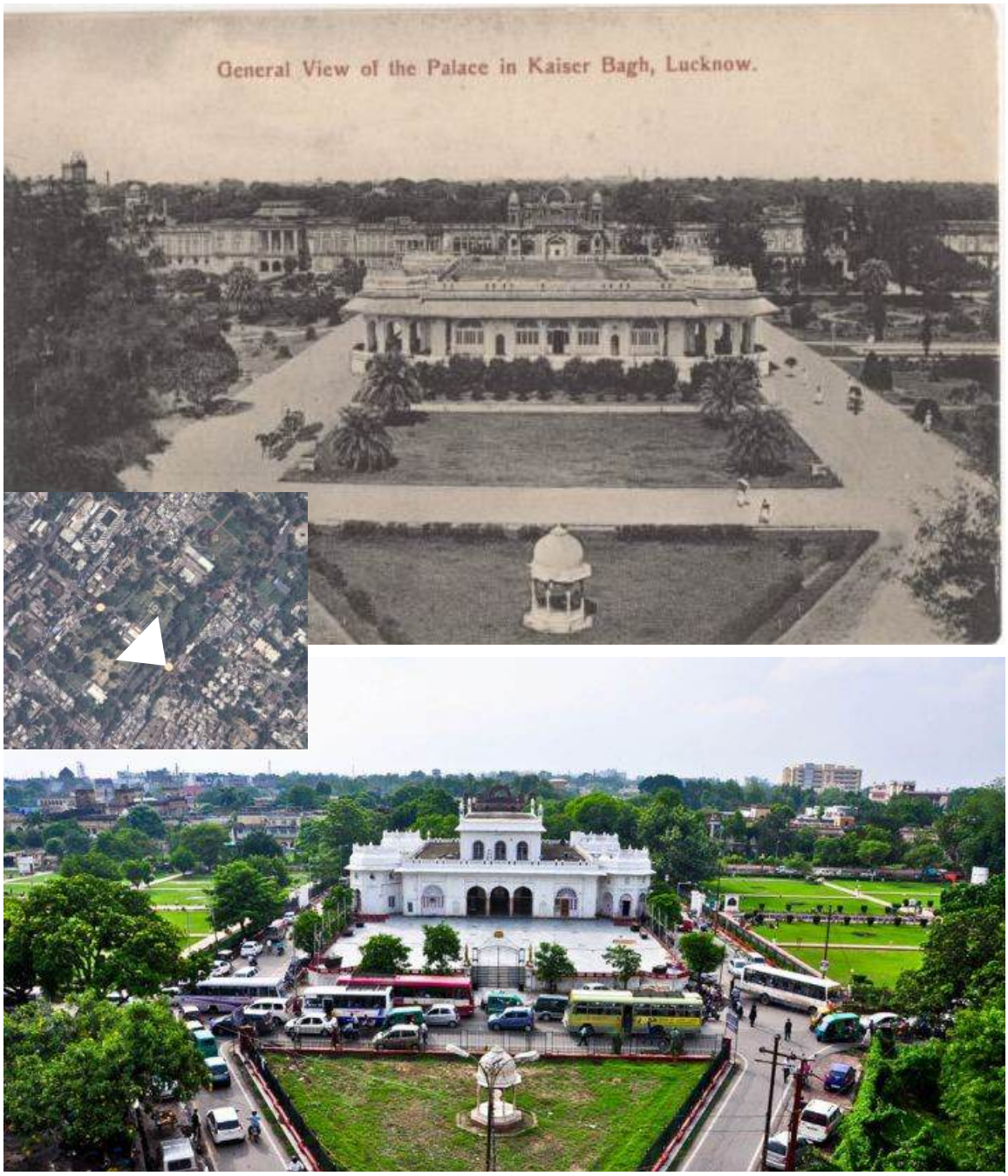

कैसरबाग पूर्वी गेट से सफेद बारादरी को दर्शाता अभिलेखीय और आज का क्षैतिज
Archival and present day skyline showing the Safed Baradari from Kaisarbagh East gate

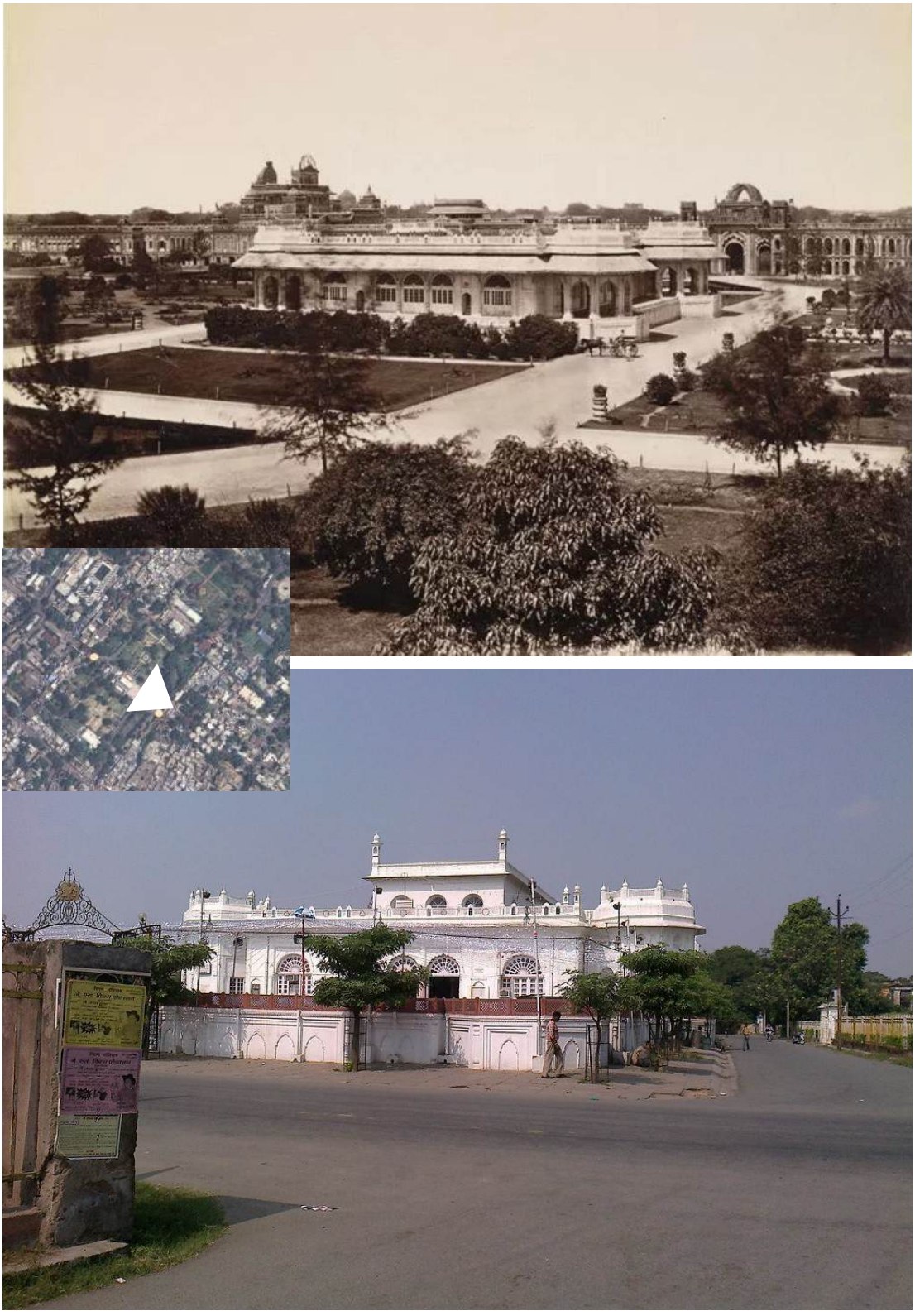

राजा महमूदाबाद रोड़ से सफेद बारादरी को दर्शाता अभिलेखीय और आज का क्षैतिज राजा महमूदाबाद रोड़ से सफेद बारादरी को दर्शाता अभिलेखीय और आज का क्षैतिज
Archival and present day skyline showing the Safed Baradari from Raja Mahmudabad Road

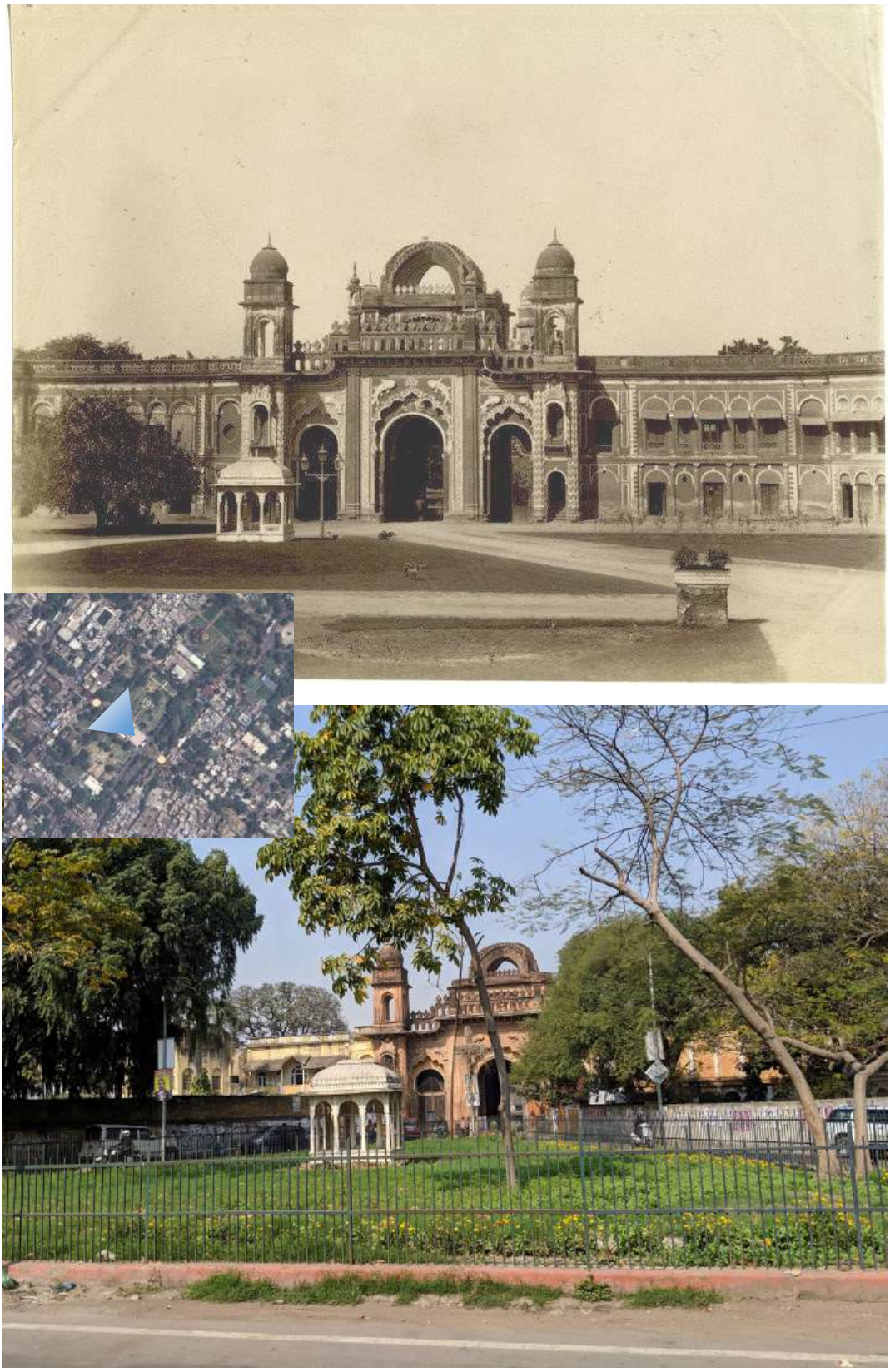

कैसरबाग पश्चिम गेट को दर्शाता अभिलेखीय और आज का क्षैतिज
Archival and present day skyline showing Kaisarbagh West Gate

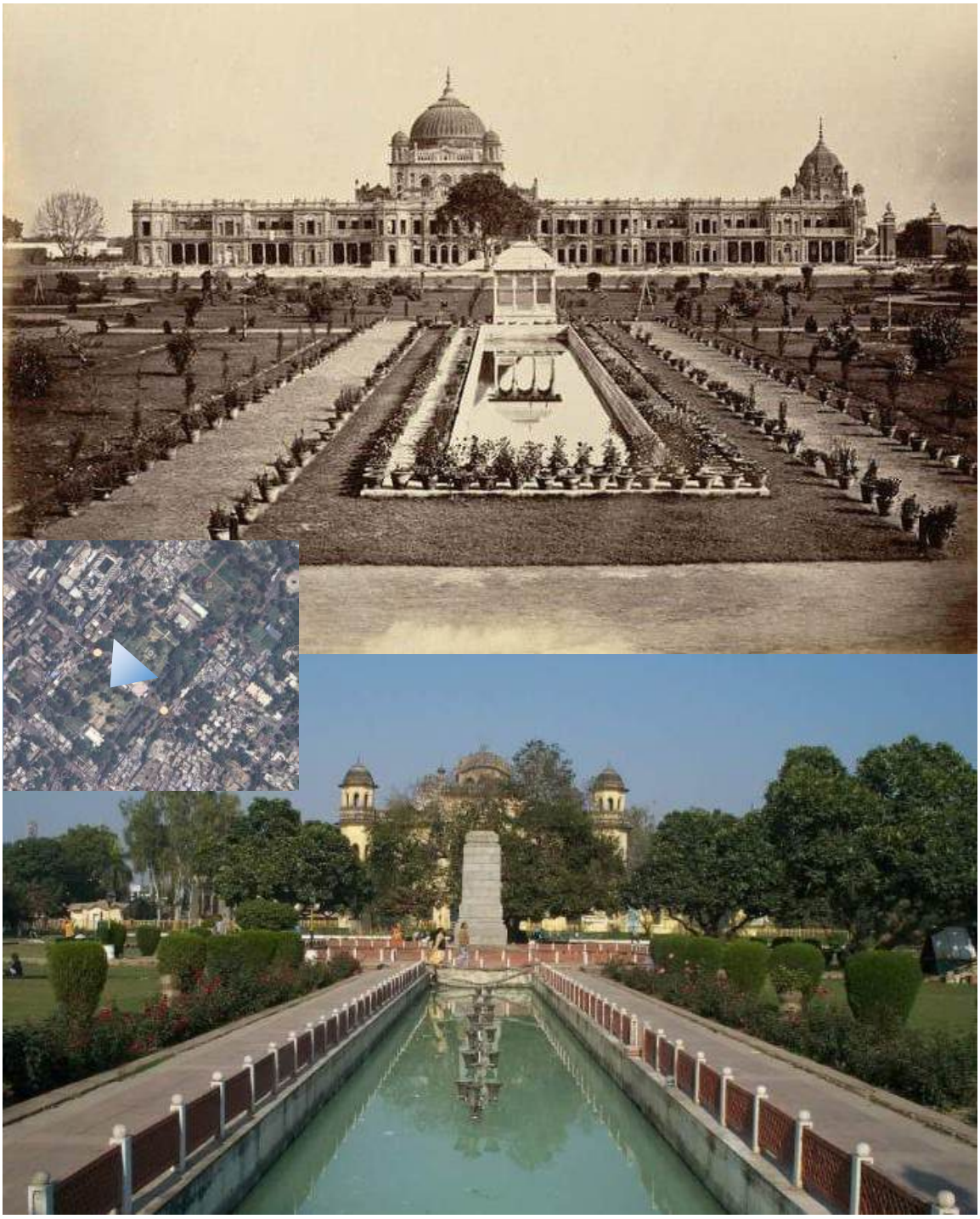

बटलर पार्क से भातखंडे संगीत संस्थान (परीखाना) का अभिलेखीय और आज का दृश्य
Archival and present day view of the Bhatkhande Music Institute (Parikhana) from Butler Park

अनुलग्नक-V
ANNEXURE-V

संस्मारक का अभिलेखीय चित्र
Archival Images of the Monument

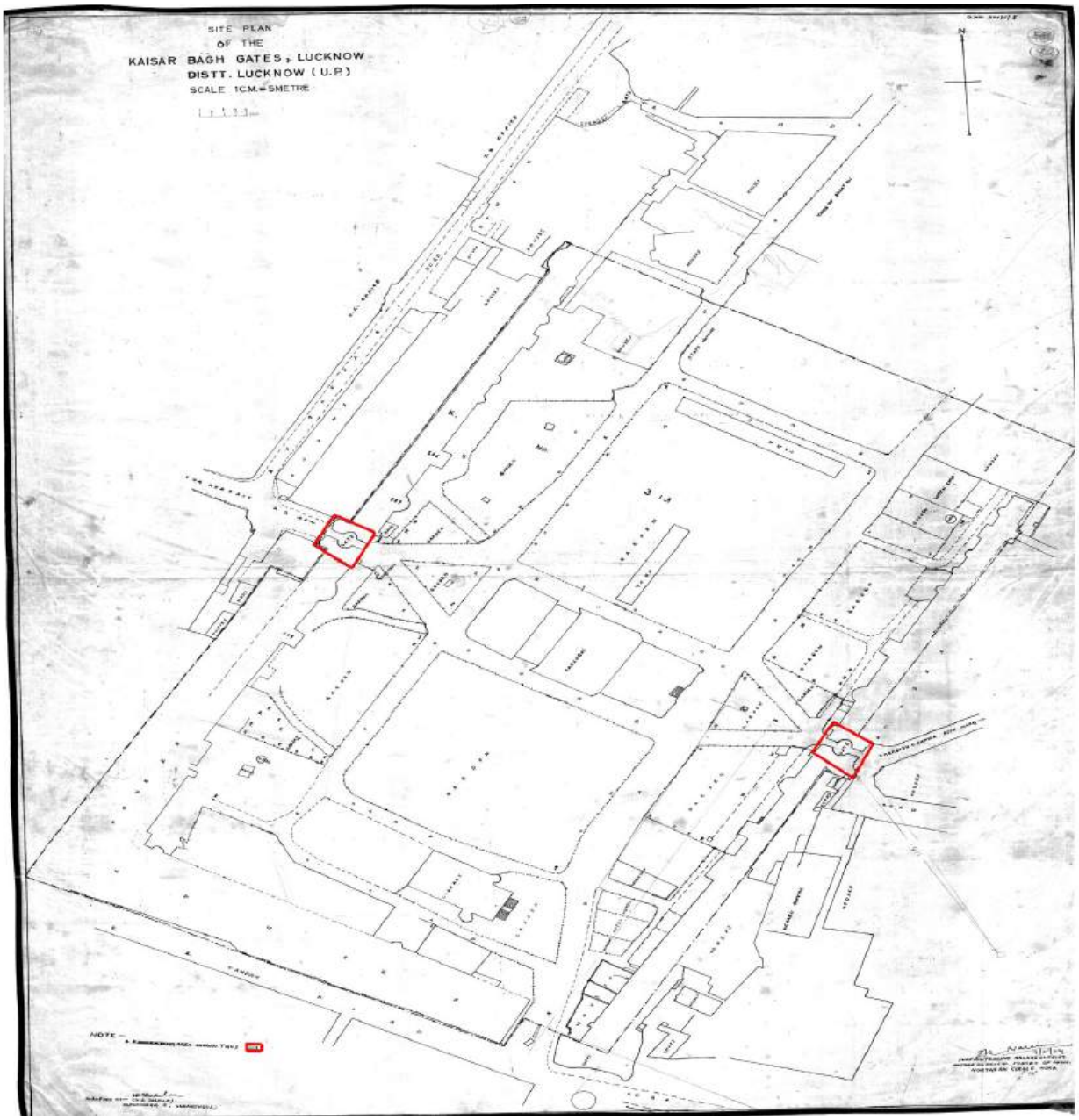

चित्र: 5.1 कैसरबाग पूर्वी गेट और पश्चिम गेट की अभिलेखीय स्थल योजना
Image: 5.1 Archival Site Plan of the Kaisarbagh East and West gates

चित्र 5.2: कैसरबाग का गेट (1859) - पर्सी मैकक्वायड
Image 5.2: Gate of the Kaisarbagh (1859) - Percy Macquoid

चित्र 5.3: कैसरबाग का पूर्व गेट (1875-76) स्रोत: रॉल कलेक्शन ट्रस्ट
Image 5.3: East Gate of Kaisarbagh (1875-76) Source: Royal Collection Trust

चित्र 5.4: कैसरबाग का पूर्व गेट
Image 5.4: East Gate of Kaisarbagh

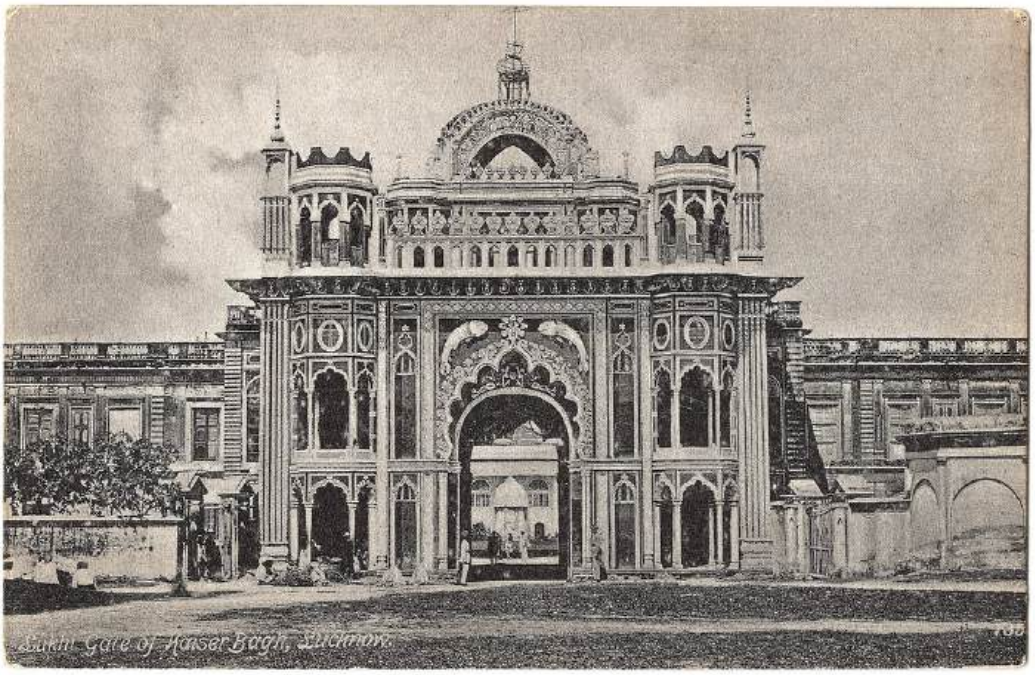

चित्र 5.5: कैसरबाग का पूर्व गेट
Image 5.5: East Gate of Kaisarbagh

अनुलग्नक-VI
ANNEXURE-VI

संस्मारक के आसपास विरासत ढांचे दर्शाता मानचित्र
Map showing the heritage structures around the Monument

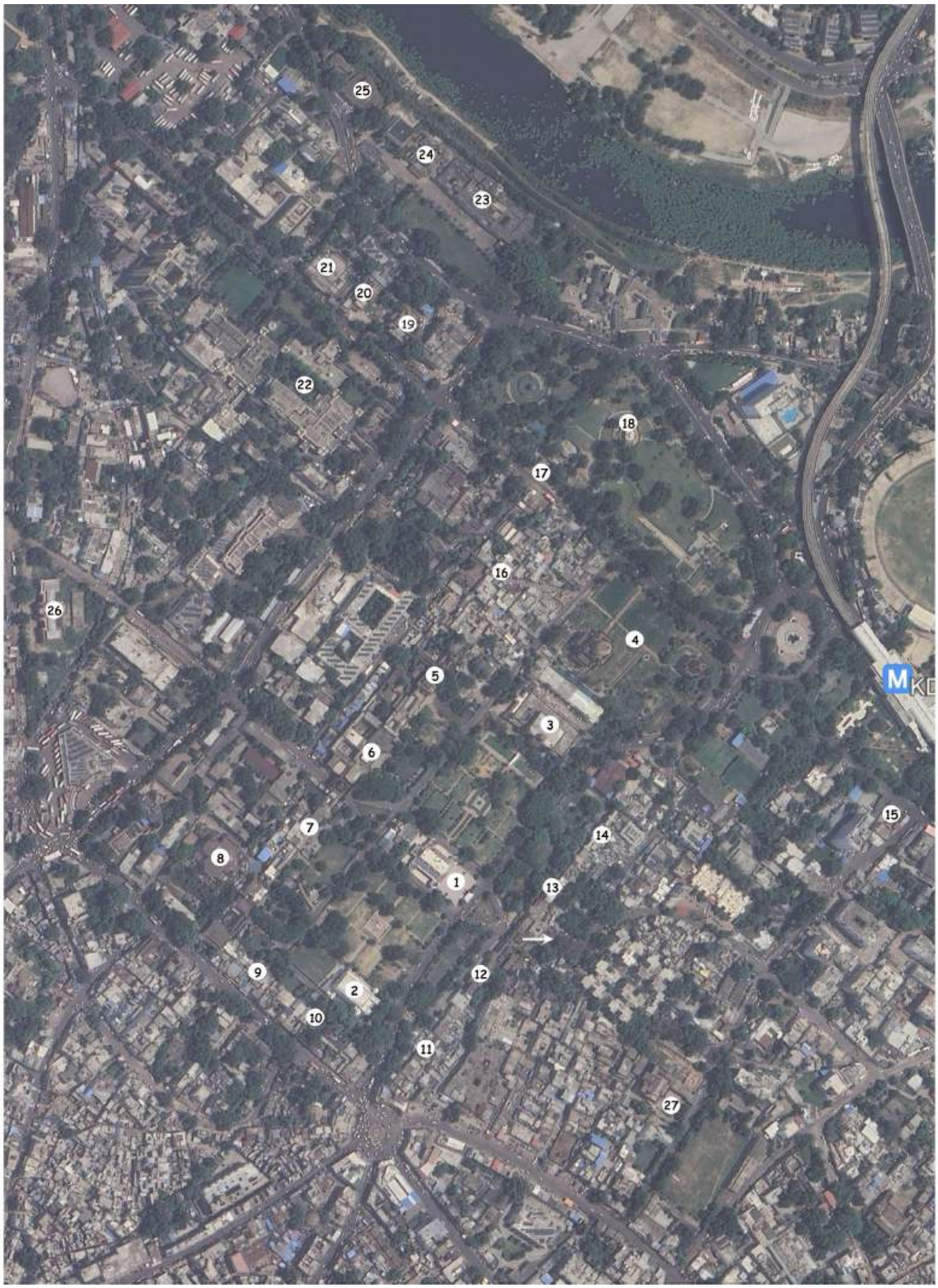

S. No.	Name of the Structure	Photo of the Monument	Building Type	Usage
1	कैसरबाग बारादरी Kaiserbagh Baradari		Baradari	Social/Literary functions
2	अमीर-उद्द-दौला सार्वजनिक पुस्तकालय Amir-ud-daula Public Library		Library	Library
3	भट्टखाँड़े संगीत संस्थान भातखण्डे Bhatkhande Music Institute		Parikhana (part of Kaiserbagh Palace complex)	Institute
4	सआदत अली खान और मशीर जैदी का मकबरा Tomb of Sadat Ali Khan and Mashir Zaidi		Tomb	Tomb (ASI monument)
5	राष्ट्रीय कथक संस्थान Rashtriya Kathak Sansthan		part of Kaiserbagh Palace complex	Institute

6	महमूदाबाद हाउस Mahmudabad House		part of Kaiserbagh Palace complex	Residential
7	सलेमपुर हाउस Salempur House		part of Kaiserbagh Palace complex	Residential
8	कोठी रोशन-उद्द-दौला Kothi Roshan-ud-daula		Kothi	Office
9	तिलोई हाउस Tiloi House		part of Kaiserbagh Palace complex	Residential
10	मनकापुर हाउस Mankapur House		part of Kaiserbagh Palace complex	Residential
11	कोटवारा हाउस Kotwara House		part of Kaiserbagh Palace complex	Residential

12	लाजपतराय पुस्तकालय Lajpatrai Pustakalaya		part of Kaiserbagh Palace complex	Library
13	बलरामपुर हॉस्टल Balrampur Hostel		part of Kaiserbagh Palace complex	Hostel
14	हाउस House		part of Kaiserbagh Palace complex	Residential
15	उत्तर प्रदेश प्रैस क्लब UP Press Club		Gate	Press Club
16	गोल दरवाजा Gol Darwaza		Darwaza	Darwaza
17	नील का गेट Neil's Gate		Darwaza	Darwaza

18	विक्टोरिया मेमोरियल Victoria Memorial		Memorial	ASI monument
19	ललित कला अकादमी(लाल बारादरी) Lalit Kala Academy (Lal Baradari)		Baradari	Art Gallery
20	कोठी दर्शन विला Kothi Darshan Vila		Palace (kothi)	Proposed adaptive reuse
21	कोठी गुलिस्ताँ-ए-ईरूम Kothi Gulistan-e-Erum		Palace (kothi)	Proposed adaptive reuse
22	पुराना हाई कोर्ट Old High Court		High Court	High Court
23	छत्तर मंज़िल Chhattar Manzil		Palace (kothi)	Proposed adaptive reuse

24	कोठी फरहत बकश Kothi Farhat Baksh		Palace (kothi)	Proposed adaptive reuse
25	जनरल वाली कोठी General vali Kothi		Residential	(ASI monument)
26	सेंटेननियल सेकेंडरी स्कूल Centennial Secondary School		Institutional	Institutional
27	बालिका विद्या निकेतन Balika Vidya Niketan		Kothi	Past: Residential Present: School & Godown

अनुलग्नक- VII
ANNEXURE-VII

स्मारक और इसके निकटवर्ती क्षेत्र के चित्र
Images of the Monument and its surroundings

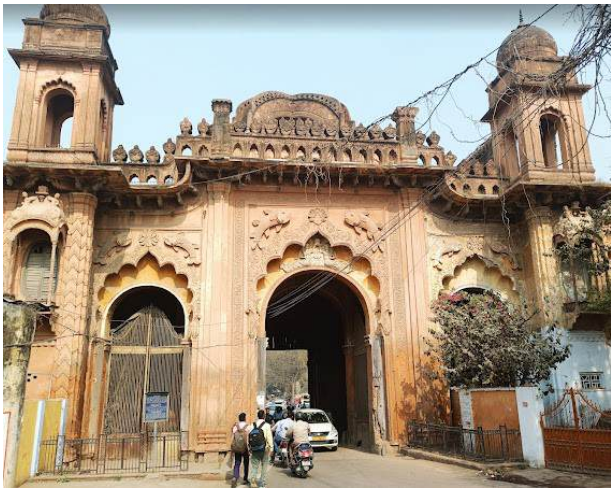

चित्र 7.1: पश्चिमी गेट, कैसरबाग को दर्शाता चित्र

Image 7.1: Image showing the Western Gate, Kaisarbagh

चित्र 7.2: पूर्वी गेट, कैसरबाग को दर्शाता चित्र

Image 7.2**:** Image showing the Eastern Gate, Kaisarbagh

चित्र 7.3: सफदे बारादरी, कैसरबाग को दर्शाता चित्र

Image 7.3**:** Image showing the Safed Baradari, Kaisarbagh

चित्र 7.4: अमीर-उद-दौला सरकारी पुस्तकालय को दर्शाता चित्र
Image 7.4: Image showing the Amir-ud-Daula Public Library

चित्र 7.5: संगमरमर पुल और भारतखंडे संगीत संस्थान को दर्शाता चित्र
Image 7.5: Image showing the Sangmarmar Pul and Bhatkhande Music Institute

चित्र 7.6: संरक्षित संस्मारक सआदत अली खान और मशीर जैदी का मकबरा को दर्शाता चित्र
Image 7.6: Image showing the Protected Monuments Tomb of Sadat Ali Khan and Mashir Zaidi

चित्र 7.7: राष्ट्रीय कथक संस्थान को दर्शाता चित्र
Image 7.7: Image showing the Rashtriya Kathak Sansthan

चित्र 7.8: भारतखंडे संगीत संस्थान की चारदीवारी को दर्शाता चित्र

Image 7.8: Image showing the boundary of Bhatkhande Music Institute

चित्र 7.9: महमूदाबाद हाउस की चारदीवारी को दर्शाता चित्र

Image 7.9: Image showing the boundary of Mahmudabad House

चित्र 7.10: चौलखी कोठी को दर्शाता चित्र

Image 7.10: Image showing the Chaulakhi Kothi

चित्र 7.11: नारी शिक्षा निकेतन को दर्शाता चित्र

Image 7.11: Image showing Nari Shiksha Niketan

चित्र 7.12: राजस्व मंडल के कार्यालय को दर्शाता चित्र

Image 7.12: Image showing office of Board of Revenue

चित्र 7.13: कैसरबाग चौराहा को दर्शाता चित्र

Image 7.13: Image showing Kaisarbagh Chauraha